लेखक का वक्तव्य

अक्टूबर सन् ३५ म ग्वालियर राज्य में प्रथम बार आल इण्डिया रेडियो की ओर से तानसेन के वार्षिक 'उर्स' के अवसर पर, कला के महान् पुजारी सङ्गीत सम्राट तानसेन की जीवनी ब्रॉडकास्ट की गई थी। भाग्यवश रेडियो के अधिकारियो ने यह काम मुझे सौंप दिया था। मेरी समझ में न आता था म क्या करूँ? ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन पर कलम उठाना और कुछ बोलना, मेरे जैसे अयोग्य मनुष्य का काम नहीं था। मगर चूँकि रेडियो वालों ने मुझे ही, न जाने क्यूँ इस कार्य के लिये चुना था, अत विवश हो इधर उधर की फार्सी, अंग्रेजी की कुछ पुस्तकें पढ़कर मने तानसेन पर १० मिनट तक ब्रॉडकास्ट किया जाने वाला एक लेख लिख ही मारा। तानसेन के विषय में लिखी हुई यह जीवनी बहुत पसन्द की गई और कई पत्रों ने उसे छापा भी।

बात गई आई हुई, परन्तु उक्त घटना से मेरे हृदय में तानसेन पर एक खोजपूर्ण पुस्तक लिखने की लालसा प्रबल हो उठी। मने उसी दिन से सङ्गीतज्ञों से मिलना-जुलना, तानसेन सम्बन्धी दन्त कथाओं की खोज करना और प्राचीन लिखित फार्सी, अंग्रेजी इत्यादि की पुस्तकों को ढूँढना आरम्भ कर दिया और आज सात वर्षों के परिश्रम के पश्चात् प्रस्तुत पुस्तक जनता के सामने रखने का साहस कर रहा हूँ।

तानसेन का विषय ऐतिहासिक और सङ्गीतमय होने के कारण सागर की भांति अथाह और मनोविज्ञान के समान गूढ़ है। अत विश्वास पूर्वक म यह नहीं कह सकता कि पुस्तक कहा तक सफल सिद्ध होगी। सम्भव है तानसेन सम्बन्धी अभी बहुत सी ऐसी घटनायें और दन्त कथायें रह गई हों, जो मुझे मालूम न होने से पुस्तक में न आ पाई हों, यदि पाठकगण मुझे इस विषय पर कुछ सूचित कर सकें तो म उनका अत्यन्त कृतज्ञ होऊँगा।

पुस्तक में तानसेन का जो ड्रामा छपा है, उसके विषय म भी मुझे कुछ कहना ह बम्बई की यात्राओं में मुझे अपने कई मित्रों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जिनमें कुछ फिल्म निर्माता भी ह। उन्होंने तानसेन के जीवन पर एक फिल्म बनाने का विचार प्रकट किया, साथ ही मुझे तानसेन फिल्म की कहानी लिखने के लिए उत्साहित भी किया। उनके सुन्दर विचारों से प्रभावित होकर मन इस पुस्तक में तानसेन का एक फिल्मी ड्रामा भी दे दिया है। ड्रामे का प्लाट बिलकुल नूतन शैली का है और उसको लिखने की शैली भी कुछ विचित्र सी है। कहीं कहीं पर छायाचित्र का आधार मालूम होता है तो कहीं पर नाटक की झलक दीखती है, अत दूसरी

Technique सम्पूर्णत: न तो नाट्य-शास्त्र और न Scenario के नियमों पर निर्धारित कही जा सकती है। ड्रामा की भाषा भी आम फ़हम है।

मै न तो साहित्यक ही हूं और न ड्रामाटिस्ट ही। अतः दोनों कलाओं के पण्डितों को मुझ से ड्रामा पढ़कर कदाचित कुछ निराशा हो। उन्हें पुस्तक लिखने का मुख्य कारण मैं यही बता सकता हूँ कि तानसेन की जीवनी सन् ३५ में Broadcast होने के बाद से ही मुझे उनके जीवन से प्रेम हो गया था और मेरे हृदय में सदा यह लालसा लगी रहती थी कि किसी प्रकार सदियों से भूले हुए इस अमर कलाकार के जीवन के बिखरे हुये पृष्ठों को एकत्रित रूप में सकलित किया जावे। पुस्तक तैयार है, उसको अपनाना न अपनाना आपके हाथ में है।

अन्त में सङ्गीत सम्पादक श्री० प्रभूलाल जी गर्ग को मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने पुस्तक प्रकाशन का सारा भार अपने ऊपर लेकर मेरे साथ बड़ा उपकार किया है। उन्होंने अन्य जो बहुमूल्य सहायता मुझे दी है, वह भी अवर्णीय है।

ग्वालियर दरबार के प्रसिद्ध गायक और सरोद नवाज, प्रोफेसर हाफिजअली साहब का भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं, जिन्होंने पुस्तक लिखते समय मुझे अपनी बहुमूल्य सम्मतियों और अपने पास की अप्राप्य पुस्तकों द्वारा इस कार्य में सहायता दी।

दौलतगंज
लश्कर (ग्वालियर)
चैत्र पूर्णिमा १९९९

ईश्वरीप्रसाद माथुर

तानसेन

संगीत सम्राट–तानसेन

SANGIT PRESS HATHRAS

समर्पण !

मान्यवर !

सङ्गीत सम्राट तानसेन की बनाई मेरी कहानी सुनकर आपने उसका चलचित्र बनाने का निश्चय किया था और इस प्रकार मेरे हृदय में आपने महान कलाकार तानसेन के प्रति अकथनीय श्रद्धा उत्पन्न करदी थी। उसी दिन से मैं, तानसेन के जीवन की खोज में रहने लगा, इसी बीच आपके द्वारा मुझे उत्साह और सहानुभूति दोनों ही प्राप्त होते रहे, जिसके फलस्वरूप तानसेन जैसी विभूति के जीवन को पुस्तक रूप में उपस्थित कर सका हूं। चलचित्र बनाने का निश्चय तो आपका अभी वास्तविकता का रूप धारण करने को पड़ा है, किन्तु पुस्तक तैयार होगई है'''लीजिये !

सेवा में—

सादर, सप्रेम, समर्पित है !

—ईश्वरीप्रसाद माथुर।

अनुक्रमणिका

चित्र सूची

तानसेन !

—:○※○:—

धन्य-धन्य मकरन्द सुत, गौड़ वन्श अभिराम।
गायन वायन में चतुर, गुण जैसा है नाम ॥

मद केहरी का हरते थे जो स्वकण्ठ ही से,
बाल्यकाल ही में अद्वितीय दिखलाते थे।
जगत विजेता 'नाद' नायक सचेता जौन,
स्वामी हरिदास की सुशिक्षा दिव्य पाते थे।
परम, प्रवीण, धीर, 'धीमहि' धुरीण थे वे,
वन्दनीय प्रतिभा—प्रचुर प्रकटाते थे।
तान छेड़ते थे या वितान तानते थे गान,
गाते थे 'कृपान' तानसेन कहलाते थे।

(२)

मेघ, श्याम, दीपक अलापने अपूर्वता से,
कलित कला के कल—कन्त अधिकारी थे।
राग को सदेह करते थे दे स्वरूप मंजु,
मोहक मल्हार, बने कौतुकी खिलाड़ी थे।
राजे महाराज दासता में सुख मानते थे,
अकबर से भूप बने डोलते पिछारी थे।
रङ्ग अपने में राग रँगते रहे थे आप,
इस क्षेत्र के तो कीर्तिवान क्रान्तिकारी थे।

कविरत्न "कृपाण" जी

——•——

(मर्जीन के "तानसेन अङ्क" से)

'तानसेन'

(१) तानसेन का जन्म और ऐतिहासिक जीवन,

गवालियर राज्य जो आज समस्त भारतीय देशी राज्यों में अतुल्य स्थान रखता है, प्राचीन काल से ही कार्य पटुता, वीरता तथा कला और राजनीति किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहा है, यदि लक्ष्मीबाई जैसी वीराङ्गना वह उत्पन्न कर सकता है, महादाजी सिंधिया और स्वर्गीय माधवराव सिंधिया जैसे वीर राजनीतिज्ञ और शासक उसने उपस्थित किये हैं, तो ललित कलाओं की खदान से भी उसे अनमोल रत्न ढूँढ निकालने में किसी का मुँह देखना नही पड़ा है, गवालियर को भारतवर्ष के महान कलाकार तानसेन की जन्मभूमि होने का गर्व है। तानसेन—जिसकी जोड़ का गायक आज हजार डेढ़ हजार वर्षों में पैदा नहीं हुआ और कदाचित होने की सम्भावना भी नहीं है।

गवालियर से सात मील की दूरी पर बेहट नाम का एक बड़ा पुराना गांव स्थिति है, जहां कुछ टूटे-फूटे खंडहर, एक तालाब और शिवजी का एक जीर्ण मन्दिर प्राचीन वैभव की स्मृति चिन्ह शेष है। यहीं पर मकरन्द पांडे नामक एक ब्राह्मण रहा करता था, जिसके बड़ी मिन्नत मानता के पश्चात एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो तानसेन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, तानसेन के जन्म की सही तारीख का पता इतिहास के पृष्ठ लौटने से नहीं चलता, किन्तु एक लेखक का कथन है कि उनका जन्म सन् १५३२ में हुआ और उनका बचपन का नाम तन्ना मिश्र था, विख्यात ऐतिहासिक विन्सेन्ट स्मिथ ने, उनके विषय में लिखा है कि समस्त अधिकारी वर्ग और दन्त कथायें इस बात से सहमत हैं कि अकबरी दरबार का सर्वोत्तम गायक तानसेन था, जिसको सम्राट ने अपने राज्यकाल के सातवें वर्ष में बघेला राजा रामचन्द्र रीवा के यहां से बुला भेजा था। 'आईने-अकबरी' में अबुलफजल ने लिखा है कि पिछले एक हजार साल में तानसेन का तुलनात्मक गाने वाला हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुआ, उनकी सूरदास से बड़ी घनिष्ट मित्रता थी और उस समय के बहुत से कलाकारों की भांति उन्होंने गाने की शिक्षा, राजा मानसिंह तोमर (१४८०—१५१८), द्वारा गवालियर में स्थापित गायन शाला में प्राप्त की। तानसेन बाद में मुसलमान होगये और या तो उन्होंने 'मियां' की उपाधि स्वयं धारण करली या उन्हें देदी गई, अब उनका अन्तिम विश्राम स्थान गवालियर में उनके गुरू गोस मोहम्मद साहब के मकबरे के निकट है। उनकी मृत्यु की सही तारीख पर भी अन्धकार का राज्य है; किन्तु कुछ लोग उनकी मृत्यु की तारीख सन् १५८५ बताते हैं। परन्तु इतना निश्चित है कि अकबर की मृत्यु के बाद भी जहांगीर के शासनकाल में वह मुगल दरबार की सेवा करते रहे।

एक अन्य महाशय ने लिखा है कि सम्राट अकबर को राज्य के भिन्न भिन्न विभागों में प्रत्येक समय व्यस्त रहना पड़ता था, किन्तु जीवन के आनन्दों से वह अनभिज्ञ नहीं थे, उन्हें गाना सुनने में विशेष प्रसन्नता होती थी और तानसेन को अपने दरबार का नौरत्न बनाकर उन्होंने न केवल अपना मनोरंजन किया; एवं कला का ऐसा पुजारी उपस्थित कर दिया, जिसका नाम सुनकर आज भी अच्छे अच्छे गायक कान पर हाथ धर लेते हैं। सम्राट के 'नौरत्न' निम्न लिखित थे।

(१) राजा बीरबल,
(२) राजा मानसिंह,
(३) राजा टोडरमल,
(४) हकीम हमाम,
(५) मुल्ला दो पियाज़ा,
(६) फ़ैज़ी,
(७) अबुलफ़ज़ल,
(८) मिरज़ा अबुर रहीम,
(९) ख़ानख़ाना,
(१०) तानसेन,

केप्टन औगस्टस ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि गन्धर्व और गुनकर जातियों में पहिले कोई असली भेदों को जाननें वाले नहीं थे। प्रथम तानसेन हुये, सम्राट अकबर के दरबार में जो गवैये थे, उनमें सबसे पहिला और ऊँचा नाम तानसेन का है। राजाराम के यहां से बादशाह के ख़ास बुलाने पर तानसेन दिल्ली गये थे। एक दूसरा लेखक सर डब्ल्यू एन्सली लिखता है कि अकबर के समय में तानसेन एक चमत्कारी गवैया होगये हैं। एक दिन उन्होंने ठीक दोपहर के समय रात का राग गाया तो उनके गाने की अद्भुत शक्ति से उसी समय रात होगई और महल के चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा छागया।

प्रसिद्ध लेखिका अतिया बेगम फ़ैज़ी रहमान ने अपनी पुस्तक 'म्यूज़िक आफ इण्डिया' में तानसेन के सम्बन्ध में लिखा है:—"अतुल्य, आदर उत्पन्न करने वाला, सितारे की भांति तेजोमय कलाकार तानसेन अन्धकार मयी शताब्दियों में चमक रहा है" गवालियर के राजा मानसिंह तोमर ने गाने में ध्रुपद शैली अविष्कार की और उनकी सङ्गीतशाला प्रथम श्रेणी में आगई। तानसेन भी उसमें प्रवीण बनने के लिये दौड़ पड़े, उस समय के अन्य विख्यात गायक बैजू, पांडवी, लोहङ्ग, फुरजू, भगवान, ढोंढ़ी और दालू इत्यादि थे। इसके अतिरिक्त 'आईने-अकबरी' में राज्य गायकों की एक सूची दी है, जिसकी संख्या ३६ है। तानसेन के गुरू हरीदास स्वामी थे, जो वृन्दावन में निवास करते थे। उनके अमृत मिश्रित गाने में ऐसी शक्ति थी, जिसको लेकर आज अनेक दन्त कथायें बन गई हैं। तानसेन गवालियर में एक सादी समाधि में अमर नींद सो रहे हैं। उनकी समाधि के निकट इमली का एक पेड़ है, जिसको गायक और नर्तकी दूर-दूर से इस आशय से देखने आते हैं कि उसकी पत्तियां चबाने से खाने वाला कोकिल कण्ठी बनजाता है। किन्तु इस प्रथा की दुर्गति पिछले कुछ वर्षों में ऐसी हुई है कि पेड़ की पत्तियां समाप्त करके लोगयाग अब

उसकी जड़ तक भी चाट गए हैं। तानसेन के उत्तराधिकारी 'सेनिये' कहलाते हैं और अधिकतर रामपुर तथा अलवर राज्य के निवासी बन गये है। इनमें दो शाखायें होगई हैं, एक रूबाबियों की और दूसरी बीनकारों की, पहिले वर्ग की नामोत्पत्ति रुबाब नामक यन्त्र के कारण हुई, जिसका आविष्कार तानसेन ने किया था और दूसरों का नाम इसलिये बीनकार पड़ा कि वह बीन-या वीणा का प्रयोग अधिक करते थे।

तानसेन का स्मृति दिवस मनाने के लिये प्रत्येक वर्ष दरबार गवालियर की ओर से उनकी कब्र पर उर्स मनाया जाता है, जिस अवसर पर भारत के कौने कौने से लोग एकत्रित होकर श्रद्धाञ्जली चढ़ाते ह।

(२) तानसेन की कला तथा गाने

तानसेन में काव्य रचना की पटुता और गाने का अद्भुत आकर्षण बराबर की मात्रा में मिश्रित था। हमें खेद है कि उनके बनाये हुए गाने व गीत पूरे पूरे उपलब्ध न हो सके, जो कुछ भी मिल सके हैं, वह अगले पृष्ठों पर लिखे हैं। पाठकवर्ग खुद अन्दाज लगा सकेंगे कि तानसेन का कण्ठ जितना लोच और माधुर्य उत्पन्न कर सकता था। उतना ही उसका हृदय भावों के खिलौनों से खेलता था। जब तक तानसेन रीवां के राजा रामचन्द्र की सेवा में रहे, तब तक उनके बनाये प्रत्येक गाने में रामचन्द्र ही की महिमा का वर्णन होता था, उन्ही के गुण गाये जाते थे, किन्तु सम्राट अकबर ने जब उनको अपनी छत्र छाया में बुलवा लिया तो वह तानसेन-पति अकबर के नाम की माला जपने लगे।

अबुल फजल ने 'आईने-अकबरी' में सङ्गीत कला के परिच्छेद में लिखा है कि तानसेन ने गाने की कला को सुधार कर उसकी काफी उन्नति की, किन्तु प्राचीन विचार वाले सङ्गीतज्ञों का अनुमान है कि तानसेन ने पूर्व प्रचलित रागों को क्षति पहुँचाई और उनको आदर्श से गिरा दिया। हिंडोल और मेघ राग तो उनके समय से बिलकुल ही लुप्त होगये। ऐसे समालोचकों की यह भी धारणा है कि भारत की सङ्गीत विद्या पर तानसेन का प्रभाव अति जीवघातक पड़ा है। हो सकता है उन्होंने सङ्गीत के प्राचीन नियमों का उलङ्घन किया हो और प्रचलित काल की विशेषताओं को पूरा करने के लिए उनमें परिवर्तन भी किये हों। किन्तु इसमें किसी को मतभेद नहीं हो सकता कि उन्होंने अपनी कला को इतना ऊँचा उठाया कि मनुष्य, पशु और पाषाण तीनों ही उनकी मीठी तानें सुनकर मनमुग्ध हो, अपनी सुध बुध भूल जाया करते थे।

सम्राट अकबर (१५४२-१६०५) सङ्गीत के बड़े प्रेमी थे और उसकी उन्नति के लिए उन्होंने भरपूर सहायता दी। उनके राज्यकाल में राग-रागनियों की पूरी जांच पड़ताल की गई। तानसेन का इसमें ऊँचा हाथ था। राग-रागनियों में जो परिवर्तन किए गये उनसे स्थापित नियमों को धक्का अवश्य पहुँचा, परन्तु एकाग्र रूप में

सङ्गीत विद्या की जागृति और प्रचार खूब हुआ। दरबारी या सभा सङ्गीत इसी समय से प्रचलित हुआ और बाद में इससे मन्दिर और नाटकों में गाये जाने वाले सङ्गीत की उत्पत्ति हुई।

तानसेन ने मल्हार राग में ग, और दोनों प्रकार की नी, मिश्रित करदी। जो नियमानुसार नहीं होना चाहिये, परिणाम यह हुआ कि मियां की मल्हार नामक राग चल उठा।

बहुधा ध्रुपद मध्यम स्वर और विशेष तालों (उदाहरणार्थ आदि ताल, रूपक-ताल, चौताल व धीमताल) में गाया जाता है। इसका प्रारम्भ और प्रचार ग्वालियर के राजा मानसिंह ने सन् १४७० में किया। तानसेन ने इस राग को अपनाया और अपनाकर उसे ऐसा गाया कि दूसरा उनके मुकाबिले पर खड़ा नहीं रह सकता। इस राग के गाने में बड़ी शक्ति की ज़रूरत पड़ती है और इसे वही गा सकता है, जिसमें पुरानी प्रथा के अनुसार पांच भैंसों के बराबर शक्ति हो।

भारतीय सङ्गीत की एक विशेषता मतों की अस्पष्ट श्रेणीबद्ध अर्थात् भिन्न २ राग रागनियों के वर्गीकरण में है। प्राचीन काल में १६,००० धुन और ३६० ताल प्रचलित थीं। श्रीकृष्ण मधुर बांसुरी बजाते थे और उनकी १६००० गोपियां उनके चारों ओर नृत्य करती थीं, इसी से १६००० धुन उत्पन्न हुईं। मध्यकाल में केवल चार मत रह गये और प्रत्येक का नाम उसके आविष्कारक देवता के नाम पर रखा गया, जो निम्नलिखितानुसार हैः—

(१) सोमेश्वर या शिव मत—इस मत में सङ्गीत का प्रयोग ठीक उसी प्रकार होता था, जिस प्रकार श्रीमहादेव जी गाते व नाचते थे। इसके ६ राग व ३० रागनियां हैं और हर राग की ६ रागनियां व ८ पुत्र हैं।

(२) कल्लीनाथ मत—इसका नाम संस्करण श्रीकृष्ण पर रखा गया है, जो शेषनाग के १०० सरों पर नाचे थे। जब परिस्थिति उनके काबू में आगई तो एक विशेष विधि अनुसार प्रसन्न होकर उन्होंने सङ्गीत जगाया और वह विधि कल्लीनाथ के मत के नाम से प्रसिद्ध है। इस मत में ६ राग, ६ रागिनियां और ८ पुत्र हैं।

(३) भरत मत—भरतमुनि के नाम से चला है, जो एक खास विधि के आधार पर ईश्वर भक्ति में लीन होकर गाते बजाते थे। इसमें ६ रागनियां हैं और प्रत्येक रागनी की ५ रागनियां और हैं, ८ पुत्र और पुत्रों की ८ भार्यायें भी हैं।

(४) हनुमत मत—इसका प्रचार श्री हनुमान जी ने किया, जो श्री रामचन्द्र जी की प्रशंसा में एक भेदक शैली से गाते थे। राग और रागनियों का अन्तरभेद इसमें नम्बर ३ के अनुसार है।

इन मतों में स्वर और ताल में काफी परिवर्तन हुआ है। प्रत्येक मनुष्य ने अपनी पहुंच और समझ के अनुसार इसको एक विशेष शिखिर तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है।

१६००० धुनें, ६ राग और ३० या ३६ रागनियों में जोड़दी गईं। प्रत्येक मत के अनुसार हर राग की ५ या ६ रागनियां और ८ पुत्र तथा ८ भार्यायें बन गईं। ३६० ताल केवल ९२ तालों में परिणित होगये।

साम्राट अकबर के राज्य गायक तानसेन ने इन मतों और सङ्गीत की इस अद्भुत शैली का पूरा-पूरा शोधात्मक अध्ययन किया। उन्होंने चारों मतों को बहिष्कार कर प्रथम तो प्रत्येक राग की विशेषता तथा गुण दोषों को निश्चित किया और फिर एक मत को उसके ताल और स्वर पर निर्धारित कर क़ायम रखा, और इस भाँति भारतीय सङ्गीत संसार में एक प्रकार की खलबली मचादी, तानसेन ने इसी बात को स्वयं रचित निम्नलिखित दोहे में बड़ी सुन्दरता से प्रकट किया है:—

सुर मुनि को परनाम करि, सुगम करों सङ्गीत।
तानसेनि बाणी सरस, जान गान की प्रीत॥
देख्यौ शिव मत भरत मत, हनुमान मत जोइ।
कहे सङ्गीत विचार के, तानसेनि मत सोइ॥

उन्होंने तालों की भी खबर ली और ९२ तालों को १२ तालों में कम कर दिया। सङ्गीत जैसी गहनकला में हाथ डालकर उसमें उन्नतिशील परिवर्तन करना यह तानसेन जैसे महान् कलाकार का ही काम था, तानसेन ने 'रागमाला' नामक एक पुस्तक की भी रचना की है, जो सङ्गीत शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए बड़ी लाभदायक प्रमाणित हुई है। उसका कुछ अंश हम आगे दे रहे हैं इससे पाठकों को मालुम हो जायगा कि तानसेन का अध्ययन सङ्गीत में कितना विशाल था। साथ ही पाठकों को सङ्गीत सम्बन्धी अनेक गूढ बातों का पता भी लगजायेगा।

— तानसेन की कब्र —
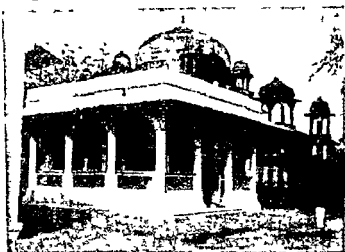
री ! तुझ में ही पड़ा सो रहा, भारत का अतीत संगीत,
क्यों तू मौन साधकर बैठी, गाले थोड़ा सा कुछ गीत।
उठा उठा री ! वीणा उसके कसदे ढीले तार,
धीरे से छूदे बस जिससे, हृत्तल हो गुंजार॥
झूम उठें मोहित हो जावें सुनकर मादक तान,
जगती तल के जड़ जङ्गम सब देखें स्वर्ण विहान।
संगीतार्णव से उठ जावे सहसा एक हिलोर,
झंकृत हो ऐसी स्वर लहरी होवे विश्व विभोर॥

"इन्द्र"

SANGIT PRESS HATHRAS.

तानसेन कृत

३०५ दोहे

तानसेन कृत दोहे

॥ सङ्गीत नाम लक्षण ॥

(१) गीतावाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ नाम सङ्गीत ।
तानसेनि सुमतङ्ग मुनि, भरत मते हो थीत ॥

॥ सङ्गीत भेद ॥

(२) द्वै प्रकार सङ्गीत है, मारग देसी जानु ।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देस निमानु ॥

॥ हेतुहीन सङ्गीत ॥

(३) गीत वाद अरु नृत्य रस, साधारण गुण जोइ ।
तानसेनि उपजै नहीं, सो सङ्गीत न होइ ॥

॥ नाद लक्षण ॥

(४) द्वै प्रकार जो नाद है, राख्यौ सुरमुनि जानि ।
तानसेनि जू कह्यौ है, बहु विधि तिनै बखानि ॥

॥ नाद भेद ॥

(५) नाहत नाद जो मुक्ति दै; आहत रञ्जक जानि ।
भौ भञ्जन मीयाँ प्रगट, नादहि कह्यौ बखानि ॥

॥ आहत अनाहत लक्षण ॥

(६) नाहत वाजत आपु ही, आहत दैव बजाइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, इन्ह के कहैं सुभाइ ॥

॥ अनाहत लक्षण ॥

(७) नाद अनाहत को सदा; सुरमुनि करैं जु ध्यान ।
गुर उपदेसैं मुक्ति दै, यह जानौ परिमान ॥

॥ आहत लक्षण ॥

(८) वायु अग्नि संजोग ते, उपजत आहत नाद ।
तानसेनि संगीत मत, कह्यौ सुरनि ब्रह्माद ॥
(९) जो टारत है चित्त को, चित टारत है अग्नि ।
टारत अग्नि जु वायु कौं, ब्रह्म ग्रंथि जो मग्नि ॥
(१०) तत छन ऊरध को चलै, ब्रह्मग्रन्थ की वायु ।
सुच्छुम धुनिहै नाभि ही, अङ्ग मध्य पुणायु ॥
(११) होय पुष्ट जो शीश में, क्रत्यम बहु मुख आइ ।
पंच स्थानन फिरत है, तानसेनि मुख भाइ ॥

(१२) कही जु उतपति नाद की, शास्त्ररीति परिमान ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जानों चतुर सुजान ॥
(१३) गीत वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ आतमा नाद ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जामैं उपजत स्वाद ॥
(१४) तीनों मत यसनाद के, कह्यौ सुमुनिन प्रमान ।
ताहि हिये मह जानि निज, मीयां सरस सुजान ॥

॥ नाद शक्ति ॥

(१५) वरन बात व्यवहार में, मिल्यौ रहतु है नाद ।
तानसेनि सब जीति भय, और कहै सो बाद ॥
(१६) नाद ज्ञान वरतत रहै, सारद के परसाद ।
केवल पसु जड़ नाग प, कुण्डल मैं सुनि स्वाद ॥
(१७) पसु सिसु अहि संतुष्ट भौ, सुनौ सब्द जिन नाद ।
तानसेनि यह नाद्र की, कहि न जात मरजाद ॥
(१८) नादउदधि के पार को, केती करी उपाइ ।
मज्जन के डर सारदा, तूँबा रही लगाइ ॥

॥ मतङ्गमुनि आचार्य्य और विज्ञानेश्वर मुनि का मत ॥

(१९) वीण वाद्य श्रुतिताल में, निपुण पुरुष है जोइ ।
विना परिश्रम जात है, मोक्ष पन्थ कह सोइ ॥

॥ (नादश्रुति) इङ्गला, पिङ्गला, सुषुम्णा लक्षण ॥

(२०) इङ्गला पिङ्गला सुष्मणा, तीनों नाड़ी नाम ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जानों आवै काम ॥

॥ इङ्गला, पिङ्गला, सुषुम्णा स्थान नाम ॥

(२१) इङ्गला वायव्या कही, दच्छिन पिंगला जानि ।
मध्य रहत है सुषुमना, ब्रह्मरंध्र लो मानि ॥
(२२) ताऊपर जी प्रान ज्यौ, चढ़ी रहत है नित्त ।
अध ऊरध को चलत है, ज्यों नट वरहा नित्त ॥

॥ इङ्गला, पिङ्गला, सुषुम्णा स्थान वर्णन (ब्रह्मग्रन्थी स्थान) ॥

(२३) द्वै अँगुली आधार पर, अङ्गुल द्वै ही नीच ।
तप्त हेम के वरन सो, अङ्गुल द्वै हो बीच ॥
(२४) सूक्ष्म शिखा जो अग्नि की, तहां रहत सो जानि ।
ता ऊपर नवअङ्गुली, चक्र रहत सो मानि ॥
(२५) तासो अङ्गुल चारि रह, ऊँचे देही कन्द ।
ब्रह्मग्रन्थि ताको कहैं, सुर पति सब निरद्वन्द ॥

॥ शुद्ध तान विवेक वर्णन ॥

(२६) षरज रिषभ गन्धार अर, मध्यम पञ्चम जानि।
धैवत और निषाद को, मीयां सरस बखानि ॥
(२७) अर्चिक कहिये एक सुर, गाथिक द्वै सुर जानि।
सामिक त्रै सुर चारि मिलि, सुर अन्तरहिं बखानि ॥
(२८) औड़व कहिये पांच सुर, षाड़व षट सुर सोइ।
सम्पूरन मीयां कहें, सप्त सुरन मिलि होइ ॥
(२९) मन्द्र हृदै में होत है, गरे होत है मध्य।
मूर्द्ध होत है तार जो, तानसेनि सो सध्य ॥

॥ द्वितीय भेद ॥

(३०) सप्त सुरनि को यों कह्यौ, सरिगमपधनी नाम।
दुतिय भेद याते कह्यौ, सुरवर्तनी काम ॥

॥ ग्राम लच्छण ॥

(३१) सुरसमूह को ग्राम कहि, मीयां सरस प्रवीन।
जाके आश्रय मूर्च्छना, रहति सदा लयलीन ॥

॥ शुद्ध तान विवेक लच्छण ॥

(३२) षाड़व औड़व भेदते, शुद्ध मूर्छना होइं।
रूपजपर्ज की मूर्छना, शुद्ध तान कहि सोइ ॥
(३३) सप्त सुरनिते जो छुटैं, सरिपनि सुर परिमान।
पर्ज ग्राम की मूर्छना, षाड़ौ अठइस तान ॥
(३४) मध्यम ग्राम की मूर्छना, षाड़ो एक इसतान।
सप्त सुरन सरिगम छुटैं, मीयां सरस सुजान।
(३५) शुद्धतान उनचास हैं, षाड़व की यह जानि।
कहौ सुमत सगीत को, तानसेनि मनमानि ॥

॥ औड़व तान विवेक लच्छण ॥

(३६) सश्रुति द्वै निध साततें, छुटते उपजै तान।
पर्ज ग्राम औड़व कह्यौ, यह जानौ परिमान ॥
(३७) मध्यम ग्राम की मूर्छना, तिन द्वै अतिते हीन।
औड़व चौदह तान हैं, तानसेनि परवीन ॥
(३८) तानें औड़व की कही, एकइस चौदह जानि।
यह सगीत मत लै कह्यौ, मीयां सरस बखानि ॥
(३९) षाड़व औड़व दुहुनते, होत चौरासी तान।
कह्यौ है मत सङ्गीत के, तानसेनि परिमान ॥

॥ कूटतान लक्षण ॥

(४०) अस पूरण-पूरण दोऊ, होवे क्रमते हीन ।
कह्यौ मूर्छना कूट ते, मीयां सरस प्रवीन ॥
(४१) पूर्णापूर्ण की मूर्छना, कूट कह्यौ है जाहि ।
मत सङ्गीत मीयां सदा, संख्या कह्यो मराहि ॥

॥ पूर्ण संख्या कथन ॥

(४२) पांच सहस चालीस है, सम्पूरण की तान ।
जानौ मत संगीत के, करि हिय सुर को ध्यान ॥
(४३) एक एक जो तान में, छप्पन छप्पन तान ।
कह्यौ है मत सङ्गीत को, मीयां सरस सुजान ॥
(४४) द्वै लक्ष आसी सहस अरु, जुगसैगनि चालीस ।
कूट तान परिमान ए, कह्यौ सुर मुनी ईस ॥

॥ पाड़व संख्या ॥

(४५) कही सात सौ बीस जो, षाड़व की हैं तान ।
एक एक जो तान में, अड़तालिस परिमान ॥
(४६) चौंतिस हजार अरु पांच सै, साठि कहैं परिमान ।
संख्या कहि सङ्गीत मत, तानसेनि जसजान ॥

॥ औड़व संख्या कथन ॥

(४७) औड़व एक सौ बीस हैं, तान कहे पहजानु ।
हर तानन में तान जो, चालिस चालिस मानु ॥
(४८) चारि हजार औ आठ सौ, संख्या जानौ लोइ ।
तानसेनि जो कह्यौ है, मत सङ्गीत के सोइ ॥

॥ सुरअन्तर संख्या कथन ॥

(४९) सुर अन्तर की तान जो, चौविस कही बखानि ।
बत्तिस बत्तिस एक में, कूट तान लेहु जानि ॥

॥ सामिक लक्षण ॥

(५०) सामिक उपजत तान द्वै, सो है सोरह जानि ।
एक-एक संख्या कही, बत्तिस-बत्तिस मानि ॥

॥ गाथिक लक्षण ॥

(५१) गाथिक उपजत तान पट, इक-इक में चौवीस ।
ताकी ये संख्या कही, एक सौ चौवालीस ॥

॥ आर्चिक लक्षण ॥

(५२) आर्चिक तान जो एक है, तामें कूट जो आठ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, करि राख्यौ है पाठ ॥

॥ साधारण सुर लक्षण ॥

(५३) सुर साधारण चारि हैं, जाति साधारण दोइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, भाषत पण्डित लोइ ॥

॥ साधारण सुर भेद ॥

(५४) साधारन सुर काकली, अन्तर मध्यम जानि ।
तानसेनि सङ्गीत मत, चौथे षर्जेहि मानि ॥
(५५) निषाद एक द्वै षर्ज की, गहै ते काकली होइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, कह्यौ सुरनिमुनि लोइ ॥
(५६) द्विश्रुति गहै गंधार जब, मध्यम की यह भाँति ।
तानसेनि सङ्गीत मत, अन्तर की है कांति ॥
(५७) लै निषाद श्रुति षर्ज की, रिषभ बचौ जो अन्त ।
कह्यौ षर्ज साधारनहिं, तानसेनि रस सन्त ॥
(५८) साधारन मध्यम् कह्यौ, सुच्छम सुर है जाहि ।
त्रिकुर अग्र सम होत है, तानसेनि जू ताहि ॥

॥ साधारण जाति लक्षण ॥

(५६) कह्यौ जाति साधारनहिं, करै राग सम गान ॥
तानसेनि सङ्गीत मत, पण्डित करैं बखान ॥

॥ वादी लक्षण ॥

(६०) वादी सम्वादी कह्यौ, विवादी आन सों देखि ।
तानसेनि सङ्गीत मत, अनुवादी को लेखि ॥
(६१) वाद करै ताको कहै, वादी ताको नाम ।
बराबरी समवादि है, जानो आवै काम ॥

॥ चार वर्ण ॥

(६२) अस्थाई जो आदि है, आरोही अवरोह ।
संचारी मीयां सरस, इन्हको कह्यौ गिरोह ॥

॥ अस्थाई लक्षण ॥

(६३) सुस्थिर है गावै सुरनि, सब सम्पूरन होइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, विधि अस्थाई सोइ ॥

॥ सञ्चारी लक्षण ॥

(६४) गायेते इक ठौर सब, चरन चारि जब होत ।
तानसेन सङ्गीत मत, सञ्चारी यह गोत ॥

॥ आरोही अवरोही लक्षण ॥

(६५) आरोही सुर चढ़तु है, उतरत सुर अवरोहि ।
तानसेन सङ्गीत मत, कह्यौ है बहुविधि जोहि ॥

॥ तीन ग्राम लक्षण ॥

(६६) स्वर्गलोक में ग्राम जो, प्रगट भये हैं तीन ।
द्वै कहि उतरे अवनि में, इक स्वर राखो बीन ॥

॥ ग्राम स्थान नाम ॥

(६७) गन्धारी ताको कह्यौ, सुर-मुनि राखो चाहि ।
षड्ज मध्यम जो नाम हैं, भुव में गावत जाहि ॥

॥ ग्राम लक्षण ॥

(६८) स्वर समूह जो ग्राम हैं, मूर्छना है जा सङ्ग ।
तानसेन सङ्गीत मत, जामें उपजत रङ्ग ॥

॥ राग लक्षण ॥

(६९) जो धुनि सुर अरु वरण सों, कबहूं होत विशेष ।
तानसेन निज चित हरन, सोइ राग सम सेष ॥

॥ चार अङ्ग ॥

(७०) रागांग भाषांग अरु बहुरि, क्रिया अङ्गवा जानि ।
तानसेन सङ्गीत मत, बहुरि उपांगहि मानि ॥

॥ रागांग ॥

(७१) राग अङ्ग जासों कहैं, छाया परै दिखाइ ।
तानसेन जेहि सुनें ते, बढ़त सदा चित चाइ ॥

॥ भाषांग ॥

(७२) भाषांग वासों कहैं, गावै भाषा छांह ।
तानसेन मत जो कह्यौ, सो सङ्गीत के मांह ॥

॥ क्रियांग ॥

(७३) दया हुलास ते होत है, सो क्रियाङ्ग जिय जानि ।
तानसेन सङ्गीत मत, बहु विधि कह्यौ बखानि ॥

॥ उपांग ॥

(७४) कछुकै छाया को करै, सो उपाङ्ग जिय लेखि ।
मीयां सरस विचारि यह, कह्यौ तीनि मत देखि ॥

॥ श्रुति विवेक ॥

(७५) तीव्रा अरु पुनि मोदनी, मुद्रा जियहि विचारि ।
छन्दोवर्त्ति मीयां कहैं, षर्ज श्रुती ए चारि ॥
(७६) दयावती अरु रञ्जनी, रतिका श्रुति हैं तीन ।
रिषभ लगी जो रति रहैं, तानसेन परवीन ॥
(७७) रौद्री क्रोधा दोय हैं, श्रुति गन्धार की होइ ।
तानसेन सङ्गीत मत, जानो गायन लोइ ॥
(७८) कहि हैं द्वै श्रुति वर्तिका, अरु प्रसारिनी जानि ।
प्रीति मार्जनी चारि श्रुति, मध्यम की ये मानि ॥
(७९) क्षिति रिक्ता सन्दीपनी, अरु अलापिनी जानि ।
पञ्चम की श्रुति चारि हैं, यह सङ्गीत मन मानि ॥
(८०) एकहि मन्द तिरोहिनी, रम्या श्रुति हैं तीन ।
ए धैवत की कही हैं, मीयां सरस प्रवीन ॥
(८१) द्वै श्रुति उग्रा क्षोभिनी, लगि निषाद सो जानि ।
कही जुश्रुति मीयां सरस, यह सङ्गीत मत मानि ॥

॥ श्रुति लक्षण ॥

(८२) करत उचार जो होत धुनि, सूक्ष्म की अनुमान ।
तानसेन सङ्गीत मत, श्रुति को यहि परिमान ॥

॥ मूर्छना विवेक ॥

(८३) रजनी अरु उतरावती, उत्तरमन्दा नाम ।
सुद्ध षर्ज सामरि कृता, जानो आवै काम ॥
(८४) चक्रवती अभि रुद्रता, कही मूर्छना सात ।
षर्ज ग्राम सौं लगी हैं, जानौ दीरघ घात ॥
(८५) सौवीरो अरु हारनी, कौलोपनता नाम ।
मधुमध्या अरु मारगी, जानौ आवै काम ॥
(८६) कही पौरवी हीषिका, सप्त मूर्छना होइ ।
एते मध्यम ग्राम की, जानो गायन लोइ ॥
(८७) मन्दा कही विशाल अरु, सुमुखी चित्रा जानि ।
चित्रवती शोभा कही, ताको हित सौं मानि ॥
(८८) आलापा सो मूर्छना, ग्राम गन्धार की लेखि ।
तानसेन जू कह्यौ है, मत सङ्गीत को देखि ।

॥ गायन के तेरह लक्षण ॥

(८९) तेरह लक्षण कहे हैं, जामें होत प्रकार ।
तानसेन सङ्गीत मत, जानि लेहु यह सार ॥
(९०) गृह अरु अन्स जो न्यास है, मन्द्र मध्य औ तार ।
अल्प बहुत मारग कह्यौ, अन्तर है पहि सार ॥
(९१ अपन्यास सन्यास है, और जो है विन्यास ।
तानसेनि सङ्गीत मत, किल लक्षण संभास ॥

॥ तेरह लक्षण प्रकार ॥

(९२) गावै को उच्चार सुर, गृह सुर कहिये ताहि ।
ता ऊपर विस्तार है, सोइ अन्स जो आहि ॥
(९३) अपन्यास सुर तजनि है, सन्यासन सुरजाइ ।
विन्यासनिसुर जोरिबो, मीयां सरस न गाइ ॥
(९४) मन्द्र हृदय में होत है, गरै होत है मध्य ।
द्वितिय षर्ज जो तार है, तानसेनि करि सध्य ॥
(९५) करि विस्तार पूरन करै, न्यास वहै सुरजानि ।
तानसेनि संगीत मत, सो जिय में पहिचानि ॥
(९६) अल्प जो थोरो जानिये, बहुत बहुत करि मानि ।
विविसुरमध्य अन्तर कह्यौ, मारग मगु जिय जानि ॥

॥ सप्त स्वर लक्षण ॥

(९७) षर्ज रिषभ गन्धार अरु, मध्यम पञ्चम जानि ।
धैवत मीयां कहत हैं, बहुरि निषादहि मानि ॥

॥ सुरवर्तनि लक्षण ॥

(९८) सप्त सुरनि को कहत हैं, सरिगमपधनी नाम ।
दुतिय भेद याते कह्यौ, सुरवर्त्तनी काम ॥

॥ सप्त सुर उच्चार जाति लक्षण ॥

(९९) जानो षर्ज मयूरते, चातक रिषभहि मानि ।
तानसेनि सङ्गीत मत, कह्यौ सो जिय में जानि ॥
(१००) अजा मुखते गंधार है, क्रौंचते मध्यम होय ।
तानसेनि सङ्गीत मत, कह्यौ सुरनि मुनि लोय ॥
(१०१) पिक ते पञ्चम होत है, धैवत दादुर भाषि ।
तानसेनि सङ्गीत के, मते कह्यौ सोराषि ।
(१०२) गज ते कह्यौ निषाद सुर, अंकुस लगते हो[illegible]
तानसेनि सङ्गीत मत, जानो [illegible] ले[illegible]

॥ सप्तसुर उच्चार स्थान ॥

(१०३) षर्ज कन्ठ स्थान है, रिषभ सीस ते जानि ।
नाभिकाते गन्धार है, मध्यम उर ते जानि ॥
(१०४) पञ्चम उर गरसीस ते, धैवत भाल स्थान ।
तानसेनि सङ्गीत मत, एजानो परिमान ॥

॥ द्वितिय भेद व्याकरण मत ॥

(१०५) षर्ज गन्धार जो सुर कहे, तालू कण्ठ स्थान ।
कह्यौ जो मत एह व्याकरण, मीयां सरस सुजान ॥
(१०६) धैवत निषाद है दसन ते, अवरते मध्यम जानि ।
पञ्चम हूं को कह्यो, एह बूझि व्याकरण मानि ॥
(१०७) रिषभ सीसते जानिये, करिकै देखौ ज्ञान ।
तानसेनि जू कह्यौ है, मन व्याकरण सुजान ॥

॥ सप्त सुर जाति ॥

(१०८) षर्ज मध्यम पञ्चम कह्यौ, विप्र वरण सो होइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, कह्यौ सुरनि मुनि लोइ ॥
(१०९) रिषभ धैवत छत्री कहे, मीयां सरस सुभांति ।
कहे निषाद गन्धार जो, सुर वैस्य है जाति ॥
(११०) जानो काकलि अन्तरहि, ये सुरदोऊ सूद्र ।
तानसेनि मत सो कह्यौ, देखि संगीत समूद्र ॥

॥ सुर राग निरूपण ॥

(१११) षर्ज प्रथम सुर मेघ पर, आनि होत है लीन ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जानि लेहु परवीन ॥
(११२) रिषभ दौरि सारङ्ग थल, लसत सरस आरूढ़ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जानि लेहु सो गूढ़ ॥
(११३) गन्धार गौड़ सारङ्ग सो, आनि करत रसरीति ।
तानसेनि संगीत मत, जानि लेहु करि प्रीति ॥
(११४) मध्यम सुर आसावरी, मिलत आनि बड़ भाग ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जामे अवरन लाग ॥
(११५) पन्चम सो पन्चम मिलन, तीनों मत परिमान ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जानो चतुर सुजान ॥
(११६) धैवत धुमाधहि चढ़ो, करत रहत आनन्द ।
तानसेनि सङ्गीत मत, जानि लेहु बिनु द्वन्द ॥
(११७) निषाद बसत है परज पर, जानो गायन लोइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, सप्त राग सुरसोइ ।

॥ प्रकीर्णाध्याय ॥

(११८) द्वै प्रकार आलाप है, राग रूप कहि जानि ।
मीर चरस सो कह्यौ है, मत संगीत को मानि ॥

॥ राग अलाप ॥

(११९) कटिता रूपक छुप्पना, अन्तर सुर हैं चारि ।
आलापने स्थान पै, तानसेनि जिय सारि ॥

॥ स्थान लक्षण ॥

(१२०) पर्ज दोइ के मध्य सुर, ऊर्ध जो कहिये ताहि ।
अर्ध लापि सुख चालिसो, थिरद्ये कटिता आहि ॥

(१२१) चौथे सुर आलाप के, चौथे ही पर सोइ ।
द्वितिय भेद रूपक कह्यौ, तानसेनि सो होय ॥

(१२२) उर्ध दुगुन के मध्य सुर, अर्धहि करत निवासु ।
तानसेनि संगीत मत, छुप्पन जानहु तासु ॥

(१२३) द्वितिय पर्ज आलापि के, फिरि अस्थाई होइ ।
तानसेनि संगीत मत, अन्तर जानो सोइ ॥

॥ रूपकालाप ॥

(१२४) राग वरन अरु तार सौं, रूप कलापिहि जानि ।
प्रीति ग्रहनि का भञ्जनी, द्वै प्रकार सो मानि ॥

॥ लक्षण ॥

(१२५) प्रीति ग्रहनिका यह कही, विधि विधान कर गान ।
तानसेनि संगीत मत, जानौं चतुर सुजान ॥

(१२६) द्वै प्रकार है भञ्जनी, स्थाई रूपक मानि ।
कह्यौ है मीयां सरस मत, यह सगीत जिय जानि ॥

॥ रूपक भंजनी ॥

(१२७) यह जो मानतत्त्व रहै, सुर की औरे भांति ।
कह्यौ है रूपक भञ्जनी; तानसेनि गुन कांति ॥

॥ लक्षण ॥

(१२८) नाल वरन तुक रागतें, निर्मित कह्यौ है ताहि ।
विना ताल तुक जानिये, सोइ अनिर्मित आहि ॥

॥ गमक ॥

(१२९) तिरैस्फुरित जो कम्पितनि, लय अन्दोलित नाम ।
तानसेनि संगीत मत, कह्यौ है जानौं ताहि ॥

(१३०) प्रावि कहूँ फिक मुद्रिका, नासित मिश्रित मानि ।
तानसेनि संगीत मत, कह्यौ सो जो मैं जानि ॥
(१३१) गमक नाम पन्द्रह कहे, करे जो ताको खेद ।
तानसेनि सङ्गीत मत, समझो ताको भेद ॥

॥ गमक लक्षण ॥

(१३२) कहो गमक सुर कम्प को, श्रवन चित्त सुख देत ।
मत संगीत के होत तव, तानसेनि करि लेत ॥
(१३३) डमरू धुनि सो कम्प ह्वै, द्रुत चौथाई मानु
तिरि गमक सो कह्यौ है, मीयां सरस सुजानु
(१३४) तृतीय अंश द्रुत को जवै; होत शीघ्रता आनि
कह्यौ गमक स्फुरित वह, मीयां सरस वखानि
(१३५) आधे द्रुत अति शीघ्रता; कम्पित गमक जो होय
द्रुत के वेग जो कम्प ह्वै, निलमक कहिये सोय
(१३६) लघु के वेग जो कम्प ह्वै; गमक आंदोलित जानि
तानसेनि जो कह्यौ एह, मत संगीत को मानि
(१३७) वहु भांतिन सुरकम्प ह्वै, अतिहि वेग जव गाय
कहो गमक निलमक है, मीयां सरस सुभाय
(१३८) त्रैस्थान सों सघनसुर, अतिहि शीघ्रता होत
मीयां सरस त्रिभिन्न जो, गमक कह्यौ ए गोत
(१३९) कोमल कण्ठ में कम्प जो, सुरनतें उपजत होइ
ग्रंथित गमक सो कह्यौ है, जानै गायन लोइ
(१४०) आदि के सुर भंजाइ के, अग्रिम सुरन को लेइ
पहिले सुरहि जगाइके, कुरुल गमक कहिदेइ
(१४१) क्रमते आगे सुर लिये, त्रिकित ह्वै हिय आइ
गमक उलासी कही है, मीयां सरस सुभाइ
(१४२) पुलित समीप जो कम्प ह्वै, प्लावित गमक सो नाम
तानसेनि संगीत मत, जानो आवै काम
(१४३) हृदय ते सुर जो उपजि कै, होत हुँ कार गंभीर
हुंकित गमक सो कह्यौ है, मीयां सरस सुधीर
(१४४) मुख मूँदे सुर होत जो, मुद्रित गमकहि जानि
तानसेनि जो कह्यौ यह, मत संगीत को मानि
(१४५) कह्या सुरनि के चाल को, नासिक गमकहि लेखि
तानसेनि संगीत मत, वहु भांतिन सो देखि
(१४६) सकल गमक के भेद जो, एक ठौर जव होइ
गमक वहै मिश्रित कह्यौ, जानो गायन सोइ

॥ आठ गुण ॥

(१४७) मधुर स्निग्ध गम्भीर मृदु, कांति रक्तपुष्ठाम ।
अनुधुनिगन गायननिके, तानसेनि परनाम ॥

॥ अवगुण ॥

(१४८) रुच्छ अनरस कर्कस विरस, विकितऽस्थाई भ्रष्ट ॥
गिरे जो गायन स्थानते, औगुण कहै जो अष्ट ॥
(१४९) संदिष्ट उद् वृष्ट अरु, सितकारी भीत होइ ।
सकित कम्पि कराल जो, औगुन गायन लोइ ॥
(१५०) कपिल काक वेताल अरु, कर्मजो उद्दण्डदोष ।
झुंबक तूबक विकिलो, अस्फुर गायन घोष ॥
(१५१) निमिलक प्रासारी कह्यौ, विरस अपसुर जानि ।
अव्दक अरु नासिक मिले, दोष हिये में मानि ॥
(१५२) अनसंधान जो कह्यौ है, स्थान भ्रष्ट इहि भांति ।
तानसेनि सङ्गीत मत, होत ये औगुन जाति ॥

॥ लक्षण ॥

(१५३) दसन दाबि गावै जबहि, दोष दंष्ट जो होइ ।
तानसेनि संगीत मत, जानो गायन लोइ ॥
(१५४) विरसगाय सुर चढ़तु है, सो उदविष्ट है दोष ।
तानसेनि जो हँसि कह्यौ, जाने मन को चोष ॥
(१५५) वार वार शी शी करै, गावत गायन लोग ।
कह्यौ सीतकारी वहै, महादोष एहि जोग ॥
(१५६) गावे नीचे नयन करि. भयते जाने भीत ।
संकित तासों कहत हैं, वेगि गाय जो गीत ।
(१५७) गायन में जो सुभावते, कांपत अतिहि शरीर ।
कह्यौ जो कम्पित दोष वह, नाहिन हीये धीर ॥
(१५८) मुष पसारि गावै जवहि, कहियत दोष कराल ।
घटि बढ़ि श्रुति सुर गाइये, कपिल दोष ततकाल ॥
(१५९) कौआ के से शब्द जो, गावन गाये होइ ।
कह्यौ है मत संगीत के, काक दोष है सोइ ॥
(१६०) ताल चूकि गावै जवै, सोई दोष वेताल ।
सूड़ कांध धरि गावहीं, करभ दोष जञाल ॥
(१६१) चकना की सी धुनि लिये, गायन गावत होय ।
दोष जो उत वड़ कह्यौ है, जानो गायन लोय ॥

(१६२) भाल वदन अरु गरे में, उठि आवत सिर होय ।
दोष जो उत विड कह्यौ है, जानो गायन लोय ॥
(१६३) लौकी जैसी होति त्यों, गरे फूले दुहु ओर ।
दोष तूँबकी कह्यौ है, जानो गायन थोर ॥
(१६४) गावत मिगरो गर फुलै, फूल दोष सो जानि ।
गावे टेढी ग्रीव कर, चक्री दोषहि मानि ॥
(१६५) कह्यो प्रसारी दोष यह, गावै अङ्ग पसारि ।
अपनो जानो हीय में, मत संगीत विचारि ॥
(१६६) गइवे में जो वरन सब, प्रगट होत नहिं जाहि ।
सोई दोष अव्यक्त है, जानि लेहु अब ताहि ॥
(१६७) गायन नाकी गाव जब, लगत दोष यह जानि ।
अनुनासिक वह दोष है, कह्यौ सङ्गीत वखानि ॥
(१६८) गिरै गान स्थान ते, यह जानो जिय लोइ ।
स्थानभ्रष्ट यह दोष है, मत संगीत के होइ ॥
(१६९) गावै अनत जो चित्त करि, सोई अनसंधान ।
दोष संगीत के मत कहै; जानौ एहि परमानि ॥
(१७०) गावे राग मिलाइके, मिश्रित दोष सो होइ ।
तानसेनि संगीत मत, जानो गायन लोइ ॥

॥ पंच गायन लक्षण ॥

(१७१) सीक्षा कारानुकार अरु, रसिक अनुरंजिक नाम ।
भावक मीयां सरस कहि, गायन पंच प्रमान ॥

॥ लक्षण ॥

(१७२) कवि गायन गुन में निपुण, सोई है सिच्छकार ।
सिखै यथारथ सिद्धि ह्वै, सो कहिये अनुकार ॥
(१७३) आपुहि गावत आपुही, रीझत आपुहि मानि ।
रसिक गायन तासो कह्यौ, तानसेनि जिय जानि ॥
(१७४) रंजत श्रवन जो सबनि को, रंजक गायन जानि ।
तानसेनि संगीत मत, याकौ रंजक मानि ॥
(१७५) गावै भाव वताइके, जामें यह गुन होइ ।
तानसेनि संगीत मत, भावुक गायन सोइ ॥

॥ गायन ॥

(१७६) एक लगायन को कहै, जनलक्ष ह्वै को जानि ।
गावै वहुतन सङ्ग लै, वृन्द गायन सो मानि ॥

(१७७) गुन विद्या में निपुण है, तासों सीखै होइ ।
सकल दोप से रहित जो, उत्तम गायन सोइ ॥
(१७८) गुन द्वै चारि ते हीन है, दोप रहित जो जानि ।
मध्यम गायन कह्यौ है, मत सङ्गीत को मानि ॥
(१७६) जामें एकै गुन रहत, मिले रहत सब दोप ।
अधम गायन तासों कह्यौ, धरे रहत सब रोप ॥

॥ धातु लक्षण ॥

(१८०) पहिली तुक उद्ग्राह है, दुति अमिलायक आहि ।
ध्रुवक जानि लेहु तीसरी, चौथे भोग सराहि ॥
(१८१) बरन समूह जो मान है, समूह कह्यौ है जाहि ।
तानसेन सङ्गीत मत, चित में राखो च्याहि ॥
(१८२) धातु करन को कहत है, राखो जिय में जानि ।
होत सङ्गीत के मतइ है, तानसेन कृत मानि ॥
(१८३) ध्रुआ भोग के मध्य तुक, अन्तर कहिये जाहि ।
तानसेन सङ्गीत मत, पैरी कहिये ताहि ॥
(१८४) उद्ग्राह मिलाप ध्रुवक अरु, अन्तर कहिये भोग ।
राखी मीयां सरस करि, जहई जाको जोग ॥

॥ कवि ॥

(१८५) सब गुन जामें जुक्त है, उत्तम कवि है सोइ ।
जाने धातु को मात्र नहिं, मध्यम कवि वै होइ ॥
(१८६) मात्र करै जो सोधि कें, अमिल धातु कह राखि ।
कह्यौ है मत सङ्गीत के, अधम सो कवि एहि भाखि ॥

॥ प्रबन्ध गीताध्याय ॥

(१८७) धातु अङ्ग ते जुक्त है, जानो ताहि निबन्ध ।
धातु अङ्ग जामें नहीं, सो कहिये अनिबन्ध ॥
(१८८) प्रबन्ध वस्तु अरु गीत है, रूप सहित ए चारि ।
चारि नाम परिबन्ध के, कहे सङ्गीत विचारि ॥
(१८६) चतुर्धा त्रयी धातु पद, ताको कहत प्रबन्ध ।
तानसेन सङ्गीत मत, बिनु जाने है अन्ध ॥
(१६०) धातु अङ्ग परबन्ध के, जानो चार प्रकार ।
कह्यौ जो मत सङ्गीत के, यह परिबन्ध प्रकार ॥
(१६१) तेन पद्द दोउ नेत्र हैं, पाट बिरुद विधि पानि ।
ताल औ दो सुर ऊचरै, है प्रबन्ध तेहि मानि ॥

॥ लक्षण ॥

(१६२) तेन कह्यौ आलाप को, पद है जामें अर्थ ।
पाट परावज विरद गुन, बिन जाने हि अनर्थ ॥
(१६३) चंचपुट तालहि आदि है, तासो कहिये ताल ।
सरिगमादि दै सुर कह्यौ, तेहि जानों ततकाल ॥

॥ प्रबन्धजाति ॥

(१६४) स्वर विरद पद तेन कहि, पाठ ताल पट अङ्ग ।
गावे मीयां सरस करि, मेदिनि जाति अभङ्ग ॥
(१६५) पांच अङ्ग लै गायऊ, मीयां सरस सुभांति ।
कह्यौ सङ्गीत के मतइ है, होइ नादिनी जाति ॥
(१६६) चारि अङ्ग ते होत है, जाति दीय नीजानि ।
कर्यौ है मत सङ्गीत के, मीयां सरस बखानि ॥
(१६७) तीन अङ्ग सों पांवनी, गावै जातिनी होइ ।
तानसेनि सङ्गीत मत, गावै पण्डित लोइ ॥
(१६८) दोय अङ्ग ते होति है, जाति तरावलि जानु ।
तानसेनि सङ्गीत मत, ताको हित कै मानु ॥
(१६९) ताल आदि दै छन्द है, सोई नियमक आहि ।
जामें नियम न जानिये, अनियमक कहिये ताहि ॥

॥ गुण भेद ॥

(२००) भगन आदि गुरु होत हैं, मही देवता जाहि ।
तानसेनि सङ्गीत मत, देत लच्छिमी चाहि ॥
(२०१) अगन आदि लघु जानिये, जासु देवता नीर ।
वृद्धि करत पहगन धरे, बहु सुख होत सरीर ॥
(२०२) मगन तीन गुरु जानिये, वुद्ध देवता होइ ।
यथार्त्ता पहगन धरे, कहत सुपण्डित लोइ ॥
(२०३ नगन तीनि लघु जानिये, इन्द्र देवता जाहि ।
वढ़े आप पहगन धरे, यह सङ्गीत मत चाहि ॥
(२०४) रगन मध्य लघु कह्यौ है, देव अग्नि जवाल ।
पग न धरेहि कवित्त में, मृत्यु होइ ततकाल ॥
(२०५) सगन अन्त गुरु होत है, वायु देवता जानि ।
लछन जागह छुटत है, यह सङ्गीत मत मानि ॥
(२०६) तीनि अन्त लघु जानिये, गगन देवता नाम ।
निर्धन करै ओगन धरे, यह पुरवे नहिं काम ॥

(२०७) जगन मध्यगुर जानिये, जाहि देवता बरनि ।
हीन व्याधि यह गन धरै, सकल देह में जरनि ॥

॥ वर्गविचारि ॥

(२०८) अवर्ग देवता चन्द है, आयू बढ़े अपार ।
कवर्ग देव मङ्गल कह्यौ, जासे कीर्ति अपार ॥
(२०९) टवर्ग देवता गुरु कह्यौ, सम्पति देइ जो आनि ।
चवर्ग देवता बुध कह्यौ, जस कर्ता तेहि जानि ॥
(२१०) तवर्ग देवता शुक्र है, देय कष्ट बहु चाहि ।
यवर्ग देवता शनि कह्यौ, दै सौभाग्य जो ताहि ॥
(२११) पवर्ग देवता सूर है, कीर्तिमय करि देत ।
सवर्ग देवता राहु है, जस सुनि करन को हेत ॥
(२१२) अवर्ग कहै जो विप्र है, चवर्ग जो है छत्रि ।
तानसेनि सङ्गीत मत, वरने पण्डित अत्रि ॥
(२१३) जवर्ग वर्ण जो वैश्य है, सवर्ग वर्ण जो शुद्र ।
जानो मीयां सरस करि, कह्यौ संगीत समुद्र ॥

संकीर्णाध्याय पटराग भेद ॥१॥

(२१४) टंके टोड़ी अन्स मिलि, शुद्ध देव गन्धार ।
आदि राग भैरव कहै, प्रगटो भरत कुमार ॥

मालकोस लक्षण ॥२॥

(२१५) प्रथम ललित बागेश्वरी, ललित दूसरे जानि ।
पूरिआ और धनासिरी, मालकौस तेहि मानि ॥

हिन्दोल लक्षण ॥३॥

(२१६) जहां ललित लीलावती, अरु भैरों सब भाग ।
गाए पञ्चम पूरिया, ये हि[illegible]ल सुराग ॥

दीपक लक्ष[illegible]

(२१७) दीपक नाहिन दीप में, गाव
याते लिख्यौ न ग्रन्थ में,

❀ राग रागिनी संकीर्ण लक्षण ❀

॥ प्रथम कान्हरादि भेद ॥

(२२०) शुद्ध कान्हरा आदि ते, भेद कान्हरा पांच ।
कहत मते सङ्गीत के, गुनिजन जानो सांच ॥
(२२१) प्रथम कहत हों गाइके. शुद्ध कान्हरा एक ।
भेद चारि को गाइये, ताको सुनो विवेक ॥

॥ बागेश्वरी कान्हरा ॥

(२२२) जह कान्हरा धनासिरी, दोऊ मिलत अभिराम ।
एकै सुरकै गाइये, बागेश्वरी सुनाम ॥

॥ सहाना ॥

(२२३) मिलि मलार को कान्हरो, राग अड़ानो होइ ।
फिरोदस्त सो गाइये, कहै सहानो सोइ ॥

॥ पूरिया ॥

(२२४) जहां कान्हरो धौलश्री, दोऊ सुर सम भाग ।
मङ्गलाष्टक गाइये, कहै सो पुरिया राग ॥

॥ कामोद लचण ॥

(२२५) गौड़ बेलावल को मिलै, होइ राग कामोद ।
पाँच भाँति सो कहै सब, गावै सुनत विनोद ॥

॥ शुद्ध कामोद लचण ॥

(२२६) एक कहै कामोद जब, गावे शुद्ध समेत ।
होइ शुद्ध कामोद तब, जन आनन्द निकेत ॥

॥ कल्यान कामोद सामन्त कामोद लचण ॥

(२२७) इह कल्यान-कमोद जह, होइ कल्यान-कमोद ।
एसावन्त मिलि गाइये, यशो सामन्त-कमोद ॥

॥ तिलका भेद ॥

(२२८) कामोदहि जो गाइये, अरु पट राग समेत ।
तिलक, नाम कामोद यह, कह्यो सदा सुख हेत ॥

॥ वन्सालि ॥

(२२९) देशी अरु आसावरी, पट रागिनि के सङ्ग ।
यह बहु लीजिय जानिए, उपजै सुनै अनङ्ग ॥

॥ बरारी ॥

(२३०) देसकार टोडी मिलै, तिरवन सुर सम भाग ।
गावै तिरहुत देश में, सदा बरारी राग ॥

॥ पटमंजरी ॥

(२३१) मारू धवल धनासिरी, तेहि भारिये चारि ।
एके सुरकै गाइए, पटमंजरी विचारि ॥

॥ घंटा राग ॥

(२३२) मारू केदारा मिले, जयेतिसिरी अरु शुद्ध ।
घंटा राग सु जानिये, गावै सबै विशुद्ध ॥

॥ टङ्क ॥

(२३३) जित भरों अरु कान्हरो, आधो-आधो होइ ।
सिरी राग सारङ्ग मिलि, टङ्क कहावै सोइ ॥

॥ नाग धुनि ॥

(२३४) सूहो मिलै मलार सों, केदारो सम भाग ।
नागलोक मोहन करै, नाग ध्वनि को राग ॥

॥ अहीरी ॥

(२३५) देशकरी कल्यान को, मिलै गूजरी स्याम ।
सदा पियारी कान्ह की, राग अहीरी नाम ॥

॥ रहस्य सङ्गल ॥

(२३६) जहाँ शङ्कराभरन में, जुरै सोरठी आइ ।
राग रहस मङ्गल यहै, मिलै अड़ानों जाइ ॥

॥ सोरठ ॥

(२३७) चङ्गपाल अरु गूजरी, जिहि पञ्चम गन्धार ।
होइ भैरवी के मिलै, सोरठ को अवतार ॥

॥ राजहंस ॥

(२३८) शिरी राग मालव मिलै, जहाँ मनोहर होइ ।
नारद भाष्यो भरत सों, राजहंस है सोइ ॥

॥ श्रीसामोद ॥

(२३९) टंक शुद्ध गंधार मिलि, मालसिरी एक ठाम ।
भीमपरासी मूर्छना, श्रीसामोदहि नाम ॥

॥ शोहंसीदेसी ॥

(२४०) जहां धौल गौड़हि मिलै, राग सोहंसी होइ ।
टोड़ी अरु पटराग मिलि, देसी कहिये सोइ ॥

॥ देवगिरी ॥

(२४१) मिलैं शुद्ध सारङ्ग जिहि, श्रुति पूरवी सुठाम ।
गायौ देवन देवगिरि, देवगिरी तेहि नाम ॥

॥ कुलाहल ॥

(२४२) जिहि कल्यान विहागरो, मिलै कान्हरो आइ ।
कोलाहल सो जानिये, कह्यौ भरत रिषि राइ ॥

॥ श्रीरवन ॥

(२४३) जहां शङ्करा भरन को, शिरीराग सम भाग ।
मिले गाइये मालश्री, शिरीरवन सो राग ॥

॥ कुकुम ॥

(२४४) जहां विलावल पूरवी, केदारो एक ठाम ।
देवगिरी माधो मिलैं, ताहि कुंकुम है नाम ॥

॥ गूजरी ॥

(२४५) रामकली औ श्याम मिलि, वहु लागे गंधार ।
राग सो मङ्गल गूजरी, गूजर देस प्रचार ॥

॥ विचित्रा ॥

(२४६) चैती गौरी श्री रमन, होइ वरारी एक ।
कही विचित्रा रागनी, श्रुति सुख देत अनेक ॥

॥ गुलाली ॥

(२४७) नट नारायण कान्हरो, औ मलार सम भाग ।
वीलावल सँग गाइये, होइ गुलाली राग ॥

॥ वहुला ॥

(२४८) रामकली औ गूजरी, देशकार के सङ्ग ।
सोई वहुला जानिये, मिलो जो पञ्चम यङ्ग ॥

॥ देसाख ॥

(२४९) शुद्ध शंकराभरन मिलि, जिहि कान्हरो मलार ।
होइ राग देशाग सो, प्रगट्यौ उभै कुमार ॥

॥ बसन्त ॥

(२५०) सारँग नट मल्लार सम, हो बेलावल अन्त ।
देवगिरी मिल गाइये, सोई राग बसन्त ॥

॥ शंकराभरन ॥

(२५१) लङ्क दहन अरु शारठी, मिलै बिलावल जाहि ।
रागशङ्करा भरन सो, येङ्ग जानत ताहि ॥

॥ बेलावली ॥

(२५२) जहां बेलावल गाइये, एक सङ्ग सारङ्ग ।
बेलावलि सो जानिये, होत सुनत सुर श्रङ्ग ॥

॥ कामोदिनी ॥

(२५३) सुर सुघराई सोरठी, जहां दुहुं को होइ ।
सुनत बढ़ायो मोद को, कामोदिन है सोइ ॥

॥ ईमन ॥

(२५४) मिलै जहाँ कल्यान को, केदारा सम भाग ।
सुरति बेलावल के मिले, होइ इमन सो राग ॥

॥ हम्मीर ॥

(२५५) केदारो कल्यान जिहि, इमन शुद्ध को साथ ।
राग होइ हम्मीर तहँ, गायौ गौरी नाथ ॥

॥ गंधार ॥

(२५६) गौरी सिंधु असावरी, भैरौं सुर सञ्चार ।
देवगिरी मिलि गाइये, राग होइ गन्धार ॥

॥ दीवारी ॥

(२५७) मालश्री जो गाइयै, कुम्भारी एक ठाम ।
तामें मिले सरस्वती, होइ दीवारी नाम ॥

॥ कुम्भारी ॥

(२५८) जहां धनासिर गाइयै, सारस्वती मिलाइ ।
कुम्भारी सो जानिए, गनपति कही बनाइ ॥

॥ मालश्री ॥

(२५९) जहां मधुमाध सरस्वती, केदारो सुर होइ ।
मिले शंकराभरन सो, मालसिरी है सोइ ॥

॥ धनाश्री ॥

(२६०) गौरी मारू जैतश्री, इहै धनाश्री जान ।
धौल बरारी जाहि में, दोऊ सुर सम तान ॥

॥ धौलश्री ॥

(२६१) मिलै बरारी जैत श्री, दूहूं सुर सम तान ।
गावत गुनी प्रसिद्ध सब, धौलश्री नहिं आन ॥

॥ रामकली ॥

(२६२) भीमपलासी ललित मिलि, रवे सूर सम भाग ।
रामकली रमणीय अति, राग ते उपजन राग ॥

॥ गुनकरी ॥

(२६३) गौड़ अड़ानो गोर जुत, इहै गुनकरी जान ।
मालवती यह जोपिता, पण्डित करे बखान ॥

॥ देशकली ॥

(२६४) देसी टोड़ी ललित मिलि, देशकली पहिचानि ।
गायो गुनिजन प्रीति करि, हिय में सुर को आनि ॥

॥ गौड़कली ॥

(२६५) जहां जहां गुरि गाइये, लै आसावरि साथ ।
गौड़कली सो जानिये, भाष्यौ गोरखनाथ ॥

॥ पटराग ॥

(२६६) जेहि टोड़ी आसावरी, स्याम बहुल गंधार ।
मिलै बरारी मूर्छना, पट आनन पट राग ॥

॥ मङ्गलाष्टक ॥

(२६७) केदारो कल्यान मिलि, कानर जै श्रीस्याम ।
मङ्गलाष्टक नाम यह, गायौ गिरपति नाम ॥

॥ चौराष्टक ॥

(२६८) आसावरी सुर पूरवी, भैरो देव गंधार ।
चारि मिलै चौराष्टक, गावत भरत कुमार ॥

॥ मनोहर गौरी ॥

(२८०) तिरवन पहारी मालव, तीन राग एक ठाम ।
राग मनोहर गौरी, कह्यौ भरत मुनि नाम ॥

॥ मधुमाध ॥

(२८१) पूरन सुद्ध मलार को, जहां गाए सुरसाध ।
मालसिरी सँधो मिले, होइ राग मधुमाध ॥

॥ सरस्वती ॥

(२८२) नटनारायण गाइये, जैतसिरी एक ठाम ।
सुद्ध सङ्कराभरन मिलि, राग सरस्वति नाम ॥

॥ संकराभरन ॥

(२८३) जहां वेलावल गाइये, केदारो सम भाग ।
कहैं सङ्करा भरन सो, शङ्कर के अनुराग ॥

॥ लंकदहन ॥

(२८४) जहां पहारी गाइये, केदारो सम तान ।
लङ्कदहन सो जानिये; कह्यौ आपु हनुमान ॥

॥ परोवी ॥

(२८५) देवगिरी अरु पूरवी, जित गौरी एक ठाम ।
गावत गौड़ मिलाइ कें, राग परोवी नाम ॥

॥ खम्भावती ॥

(२८६) मालसिरी मलार ते, मिलि के होइ एक रूप ।
खम्भावति सो जानियो, कह्यौ भरत रिपि भूप ॥

॥ हमीर ॥

(२८७) नट नारायण मिलि जहां, राग शुद्ध मलार ।
शुद्ध सहित सम भाग जहँ, होत हमीर प्रचार ॥

॥ माधवी ॥

(२८८) सब गोपिनि मिलि राग करि, गायो राधा नाथ ।
मधुवन में मधु मथन करि, कह्यौ माधवी साथ ॥

॥ पंचम ध्वनि ॥

ललित विभास वसन्त मिलि, देसकार हिंदोल ।
भ्रमर पञ्च मुख पञ्च धुनि, हरम प्रसंसित लोल ॥

॥ नाट ॥

(२६६) कहुँ कल्यान कमोद कहुँ, कहुँ कारङ्ग हमीर ।
इन्हें मिले जहँ गाइये, कहै नाट बलबीर ॥

॥ अपरंच ॥

(२७०) कहुँ शुशुद्ध केवल मिलै, तातें उपजी कांति ।
एक एक रागिनी मिले, होत नाट बीभांति ॥

॥ केवल नाट ॥

(२७१) वागेश्वरी मिलाइ के, पुरिया औ मधुमाध ।
केवल नाट सो जानिये, मूर्छना श्रुति आध ॥

॥ नटनारायण ॥

॥ मनोहर गौरी ॥

(२८०) तिरवन पहारी मालव, तीन राग एक ठाम ।
राग मनोहर गौरी, कह्यौ भरत मुनि नाम ॥

॥ मधुमाध ॥

(२८१) पूरन सुद्ध मलार को, जहां गाए सुरसाध ।
मालसिरी सँयो मिले, होइ राग मधुमाध ॥

॥ सरस्वती ॥

(२८२) नटनारायण गाइये, जैतसिरी एक ठाम ।
सुद्ध सङ्कराभरन मिलि, राग सरस्वति नाम ॥

॥ संकराभरन ॥

(२८३) जहां वेलावल गाइये, केदारी सम भाग ।
कहैं सङ्करा भरन सो, शङ्कर के अनुराग ॥

॥ लंकदहन ॥

(२८४) जहां पहारी गाइये, केदारो सम तान ।
लङ्कदहन सो जानिये; कह्यौ आपु हनुमान ॥

॥ परोवी ॥

(२८५) देवगिरी अरु पूरवी, जित गौरी एक ठाम ।
गावत गौड़ मिलाइ कें, राम परोवी नाम ॥

॥ खम्भावती ॥

(२८६) मालसिरी मल्लार ते, मिलि के होइ एक रूप ।
खम्भावति सो जानियो, कह्यौ भरत रिषि भूप ॥

॥ हमीर ॥

(२८७) नट नारायण मिलि जहां, राग शुद्ध मलार ।
शुद्ध सहित सम भाग जहँ, होत हमीर प्रचार ॥

॥ माधवी ॥

(२८८) सब गोपिनि मिलि राग करि, गायो राधा नाथ ।
मधुवन में मधु मथन करि, कह्यौ माधवी साथ ॥

॥ पंचम ध्वनि ॥

(२८९) ललित विभास बसन्त मिलि, देसकार हिंदोल ।
भ्रमर पञ्च मुख पञ्च धुनि, हरम प्रसंसित लोल ॥

॥ नाट ॥

(२६९) कहुँ कल्यान कमोद कहुँ, कहुँ कारङ्ग हमीर ।
इन्हें मिले जहँ गाइये, कहँ नाट बलवीर ॥

॥ अपरंच ॥

(२७०) कहुँ शुशुद्ध केवल मिलै, तातैं उपजी कांति ।
एक एक रागिनी मिले, होत नाट यौभांति ॥

॥ केवल नाट ॥

(२७१) वागेश्वरी मिलाइ के, पुरिया औ मधुमाध ।
केवल नाट सो जानिये, मूर्छना श्रुति आध ॥

॥ नटनारायण ॥

(२७२) लइदहन मधुमाधवी, कछु लीलावलि जानि ।
मिलै शङ्करा भरन, सो नट नारायन आनि ॥

॥ राज नारायन नाट ॥

(२७३) कुंभारि अरु पूरिआ, जित करिये एक ठाम ।
राग रङ्ग सो जानिये, राज नरायण नाम ॥

॥ कन्दौच नाट ॥

(२७४) अरिल धवल सुध मधु माधवी एक करिगाइये।
धनासिरी कामोद कल्यान मिलाइये ॥
(२७५) केदारो अरु हीर कानरो मिले जहाँ सव ।
परिहा होइ नाटकाँदच, गाया ब्रह्मादिक सकल तव ॥

॥ तिरवन ॥

(२७६) गौर बड्डुल विभास को, साधि लेहु सुरतान।
अंस न्यास ग्रह सोधि के, तिरवन को सुरजान ॥

॥ पूरवी ॥

(२७७) गौरी मालव जोग ते, राग पूरवी होइ ।
राग रङ्ग सब सोधि के, गावत हैं सब कोइ ॥

॥ बड़हंस ॥

(२७८) जहां पहारी मालवी, अरु चैती सम अन्स ।
ताही मिलै धनासिरी, होय राग बड़हन्स ॥

॥ फिरोदस्त ॥

(२७९) जहां पूरवी गाइये, गौरी स्याम समेत ।
फिरोदस्त सो जानिये, श्रवन सुनत सुख देत ॥

॥ मनोहर गौरी ॥

(२८०) तिरवन पहारी मालव, तीन राग एक ठाम ।
राग मनोहर गौरी, कह्यौ भरत मुनि नाम ॥

॥ मधुमाध ॥

(२८१) पूरन सुद्ध मलार को, जहां गाए सुरसाध ।
मालसिरी सँधो मिले, होइ राग मधुमाध ॥

॥ सरस्वती ॥

(२८२) नटनारायण गाइये, जैतसिरी एक ठाम ।
सुद्ध सङ्कराभरन मिलि, राग सरस्वति नाम ॥

॥ संकराभरन ॥

(२८३) जहां वेलावल गाइये, केदारी सम भाग ।
कहँ सङ्करा भरन सो, शङ्कर के अनुराग ॥

॥ लंकदहन ॥

(२८४) जहां पहारी गाइये, केदारो सम तान ।
लङ्कदहन सो जानिये; कह्यौ आपु हनुमान ॥

॥ परोवी ॥

(२८५) देवगिरी अरु पूरवी, जित गौरी एक ठाम ।
गावत गौड़ मिलाइ कैं, राम परोवी नाम ॥

॥ खम्भावती ॥

(२८६) मालसिरी मल्लार ते, मिलि के होइ एक रूप ।
खम्भावति सो जानियो, कह्यौ भरत रिषि भूप ॥

॥ हमीर ॥

(२८७) नट नारायण मिलि जहां, राग शुद्ध मलार ।
शुद्ध सहित सम भाग जहँ, होत हमीर प्रचार ॥

॥ माधवी ॥

(२८८) सब गोपिनि मिलि राग करि, गायो राधा नाथ ।
मधुवन में मधु मथन करि, कह्यौ माधवी साथ ॥

॥ पंचम ध्वनि ॥

(२८९) ललित विभास वसन्त मिलि, देसकार हिंदोल ।
भ्रमर पञ्च मुख पञ्च धुनि, हरम प्रसंसित लोल ॥

॥ पंचम ॥

(२६०) ललित पञ्च मुख पञ्च सुर, गायो पञ्चम तान ॥
सोई पंचम जानिये, कह्यौ वीर हनुमान ।

॥ गौर ॥

(२६१) सोरठ श्रुतिहि मिलाइये, नट हमीर औ हीर ।
गौर राग जुन रात में, गावत सुनि अति धीर ॥

॥ बिहागरा ॥

(२६२) केदारो गौरी मिलै, कछुक स्याम संजोह ।
सोई राग विहागरो, गावत हैं सब लोग ॥

॥ सूहो ॥

(२६३) शुद्ध बिलावल गाइयो, वागेश्वरी मिलाइ ।
सोई सूहो जानियो, सब को सुनत सुहाइ ॥

॥ सारङ्ग ॥

(२६४) देवगिरी मल्लार नट, सारङ्ग कहिए सोइ ।
देवगिरी धुनि एक जहां, शुद्ध सारङ्ग सो होइ ॥

॥ सूरहती ॥

(२६५) वड़ हंसी और सैंधवी, साधि देव सुर गाइ ।
रतिते उपजत राग सो, रहती नाम सुभाइ ॥

॥ सैंधवी ॥

(२६६) आसावरी को आदिही, वहुरि अहीरी टेरि ।
गाये सैंधवि रागिनी, सफल सेधु के फेरि ॥

॥ बलारचन्द ॥

(२६७) ललित देस कानरहिं श्रुति, गावत एक करि तान ।
होइ बलारचन्द सो, राग सुलच्छण जान ॥

॥ कुराई ॥

(२६८) सूहो कान्न जो मिलै, हरदि चून की भांति ।
कला प्रवीन नारदि विरद्र, वन्धिकुराई कान्ति ॥

॥ भूपाली ।

(२६९) ईमन गुन करि साधि करि, अजलपान अनूप ।
प्रगट लोक में गाइये, भूपाली को रूप ॥

॥ टोड़ी भैरवी ॥

(३००) ललित धनाश्री धवल मिलि, एक टोड़ी को अङ्ग ।
शुद्ध श्याम भैरव मिलै, होय भैरवी रङ्ग ॥

॥ अथ दीपावती ॥

(३०१) दीपक की ज्योतिहि मिलै, सुर सरस्वती ये अंश ।
दीपावती प्रसिद्ध जग, जगनृप को अवतंस ॥

॥ वङ्गाली ॥

(३०२) मिलै वरारी अङ्ग सों, गौड़ गूजरी राग ।
कहै वङ्गाली रागिनी, वङ्ग देस को राग ॥

॥ ललित ॥

(३०३) देसी और विभास मिलि, पञ्चम भैरों सम भाग ।
ललित रूप सों गाइये, ललित मनोहर राग ॥

॥ मल्लार ॥

(३०४) नट सारङ्ग संयोग सों, मेघ राग की तान ।
मिलै एक करि गाइये, इह मल्लार सुजान ॥

॥ सावन्त ॥

(३०५) नट केदारो कान्हरो, कामोदी, सुर श्याम ।
अंसन्यास ग्रह पसवै, उपजै सावन्त नाम ॥

तानसेन कृत बसन्त गीत

मन्दिर बसन्ती, सिंघासन बसंती, बासन्ती समियानो ।
बसन बसन्ती, भूषण बसंती, जुगल अङ्ग झलकानो ॥
करत समाज सो सखी बसंती, बासन्ती गुन मानो ।
बजत तंत्र जंत्र बसन्ती; रंग सों सुख बसन्त रस सानो ॥
उड़त अबीर बसन्ती, मूठिन सो उमड़ बसंत घुमड़ानो ।
अँखियां रसिक बसन्ती, फूलन अली बृज जीवन मँडरानो ॥

× × ×

पपीहा बोले · हा मेरो पी कहां ।
पिय बिन कल पल ना बृज जीवन; बिनु देखे मेरो जी कहां ॥

× × ×

प्यारी फेंकत मूठ गुलाल, पिचकारी लिए रह गये तक मुख लाल ।
ताकी छबि कछु कहत न आवे, पिय दृग भये हैं निहाल ॥
सनये-सनये सरकन लागे, भिजई प्यारी बाल………………।
जुगल खेल लखि लखि बृज जीवन, अलि बजवत डफ ताल ॥

× × ×

बृन्दावन छायो माई सरस बसन्त ।
बासंती बसन भूषन, तन बसंती खेलत हरस बसंत ॥
फल फूल बसंती, पंछी अलि बसंती, रहोरी रंग-रंग बरस बसंत ।
हरि सहचरि हित कृपा, बृज जीवन परयौ री दरस बसंत ॥

× × ×

खेल बसन्त कुञ्जन को आवत, लालन प्यारी येरी ।
महामत्त दुरदुन की चाल सों, घेरि रही संग चेरी ॥
एक पोंछत मुख एक बतरावत, मेरी रसना सीताराम गावत ।

———

सम्बन्धी दन्त कथायें !

ए नियम है कि कोई महापुरुष जगत में जन्म लेता है, तो
ों किस्से कहानी गढ़ डालते हैं। इसी भाँति तानसेन के
त कथायें प्रचलित हैं, पाठकों के मनोरंजनार्थ यहां जितनी
ों हैं, वह शब्दों का रूप लेकर उपस्थित हैं।

ाय मकरंद पांडे के बहुत काल बीतने पर भी कोई संतान उत्पन्न
बताया कि बेहट ग्राम में शिवजी का जो प्रसिद्ध मन्दिर है।
र बेलपत्र और बकरी का दूध चढ़ाया करो, तो थोड़े दिनों
, सन्तान का सुख प्राप्त होजावेगा। मकरन्द ने कथनानुसार
िया। थोड़ा समय बीतने पर भगवान शङ्कर की कृपा से
जिसका नाम उन्होंने तानसेन रखा। तानसेन प्रकृति की
का हो गया, मगर वह बोल न सका और इशारों द्वारा
रता था। जिससे एक बार पुनः मकरंद के घर में दुःख
समय चिंतित रहने लगे, उन्हें तब एक दिन भगवान
ेखा और उन्होंने पूर्ण भक्ति भाव से, फिर शिव लिंग पर
ा।

इन्द्र देव क्रोध में आगए और मूसलाधार पानी बरसाने
रों ओर चकाचौंध मचाने लगी, सारी प्रकृति जल थल
होकर अपने-अपने घरों में छुप गये। रात का भयप्रद
ट किया कि ऐसी भीषण वर्षा में मन्दिर की पूजा करने
में कई गहरे नाले पड़ते हैं, उनको पार करना असंभव है।
श्चर्या में यदि एक दिन का अन्तर भी पड़ गया तो
सरे क्षण ही उन्होंने सोचा कि यदि आज नागा की तो
ट्टी में मिल जायेगी, भक्त की इतनी कायरता देख कर,
का प्याला भी छलक जाये, अतः जाना ही आवश्यक है।
वह तानसेन को कंधे पर चढ़ाकर मन्दिर की ओर
के दूध, की खोज की गई; किन्तु ऐसी भीषण वर्षा में
दुकान खोलने वाला था? असफलता दीखने से, मकरंद
न्होंने अपने एक पड़ौसी की बकरी पकड़कर मन्दिर
दृढ़ था, और भक्ति अटल। वह मन्दिर में जा पहुँचे
निकाल कर उन्होंने पुष्प दीप के साथ भगवान पर भेंट

चढ़ाया और फिर तानसेन सहित आँख बन्द कर ध्यान में लीन होगये। भक्ति की इतनी भक्ति देखकर भला कौन देवता संतुष्ट रह सकता था? शङ्कर जी का चित्त तुरन्त व्याकुल हो उठा और एक भारी गर्जना के साथ उन्होंने प्रगट हो मकरन्द को दर्शन दिए। गर्जना इतनी भीषण थी कि एक बार सारा संसार कांप गया, मंदिर का शिखर टेढ़ा पड़ गया और तानसेन के मुख से भयभीत होकर एक हलकी सी चीख निकल पड़ी, जो वास्तव में भगवान शङ्कर की सेवा में गाने के रूप में यह स्तुति थी।

"प्यारे तुही ब्रह्म, तुही विष्णु; तुही महेश........"

बस उसी दिन से तानसेन बोलने लगे।

× × × × ×

तानसेन के सम्बन्ध में एक यह कथा भी प्रचलित है कि जब मकरन्द पांडे के कोई सन्तान नहीं हुई थी, तो उन्होंने दुनियां भर की मिन्नत मानता से हारकर, एक मुसलमान फकीर मोहम्मद गौस की शरण ली। यह फकीर अपनी चमत्कारिक विद्या के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। मकरन्द ने उनकी सेवा में आकर अर्ज़ मारूज की और अपने जीवन की उजड़ी हुई नगरी बताकर सन्तान प्राप्ति की मनोकामना प्रकट की। फकीर ने आशीर्वाद देकर तथास्तु कहा! ईश्वर की लीला, साल भर के हेर फेर में ही मकरन्द के पुत्र तानसेन उत्पन्न होगया। मकरन्द और उसके परिवार के आनन्द का वारापार न रहा। जब तानसेन तीन वर्ष के हुये तो मकरन्द उन्हें गौस साहब की सेवा में ले गये, जिनकी कृपा और आशीष से पुत्र हुआ था, वह उन्हीं की भेंट मकरन्द ने चढ़ा दिया। गोद में लेकर तानसेन को गौस साहब ने प्यार किया और अपने मुख का झूँठा पान उसे खिला दिया। फिर मकरन्द से बोले, "यह लड़का बड़ा होशियार निकलेगा, इसकी ख्याति का सूर्य कभी अस्त न होगा"। मकरन्द यह सब कुछ देख, सुनकर असमंजस में पड़ गये। ब्राह्मण के पूत को मुसलमान ने मुँह लगा दिया गया, अब वह उनके किस काम का रहा, बिरादरी में वह मुँह कैसे दिखावेंगे? मकरन्द तानसेन को वहीं छोड़ गये और चलते समय गौस साहब से बोले, "पीर जी, यह आप की ही दैन था, अब आपही इसका पालन पोषन करो। हम कभी-कभी बालक को देख जाया करेंगे।' और इस प्रकार तानसेन मोहम्मद गौस साहब की देख-रेख में पलने लगे। लोकमत है कि जब तानसेन भूख के मारे व्याकुल हो रोना चिल्लाना आरम्भ करते थे तो गौस साहब अपने सीधे पांव का अँगूठा, उनके मुँह में लगा देते थे जिससे दूध की धारा बह निकलती थी और तानसेन का पेट भर जाता था। जब तानसेन बड़े हुये तो गौस साहब ने उनकी नमाज़ वज़ू का इन्तज़ाम भी करा दिया।

मोहम्मद गौस जो आत्मिक ज्ञान में बहुत पहुँचे हुये थे, सङ्गीत विद्या में भी किसी प्रकार पीछे नहीं थे, तानसेन को अपना कर उन्होंने अपनी कला का

अधिकतर हिस्सा तानसेन के गले में पान द्वारा उतार दिया था, उसको बाद में गाने की और शिक्षा भी दी, किन्तु सङ्गीत को अथाह सागर समझ कर, उन्होंने तानसेन को अपने मित्र मथुरा निवासी हरीदास बाबा के पास सङ्गीत में निपुणता प्राप्त करने के हेतु भेज दिया। परन्तु थोड़े दिनों के पश्चात ही उन्हें रोज़ा नमाज़ इत्यादि के काम में अड़चन पड़ने लगी। अतः उन्होंने हरीदास स्वामी से मिलकर यह व्यवस्था करली कि गाना सीखने के समय तो तानसेन मथुरा रहे, और वक़्त बक़्त पर वह गवालियर आ उपस्थित हों, जनता का कथन है कि पलक झपकते ही तानसेन मथुरा और पलक मारते ही गवालियर में नज़र आते थे। इस भांति दो गुरुओं की छत्रछाया में रहकर तानसेन एक बड़े कलाकार बन गये।

जब मोहम्मद गौस साहब की मृत्यु हुई तो तानसेन गवालियर में बेसहारा रहगये। फ़क़ीर की सङ्गत में रहकर उनकी मनोवृत्ति भी फकीरों की सी हो गई थी। अतः एक दिन गवालियर में मन न लगने से, गेरुआ वस्त्र धारण कर, माला हाथ में ले, और होठों पर परमात्मा का नाम जपते हुये वह गवालियर छोड़कर चल दिये। चलते-चलते वह रीवां राज्य में पहुँच गये। जिस समय वह रीवा में राज महल के निकट पहुँचे तो प्रातःकाल का सुहावना समय था। पक्षी अपनी मीठी बोलियों में चहक रहे थे। रातभर के अलसाये हुये प्रेमी निद्रा की खोज में बेचैन थे, सहसा महल के एक सन्तरी ने उन्हें टोका, "तुम मुसलमान प्रतीत होते हो और फिर भी तुम्हें हमारे राजा की आज्ञा मालूम नहीं !" "क्या आज्ञा है सन्तरी ?" तानसेन ने पूछा। "यही", सन्तरी ने कहा—कि "जब राजा पूजागृह में हों तो राज्य-महल के दो मील के क्षेत्रफल में कोई कुजाति का मनुष्य प्रवेश न करे।" "बड़ी कठोर आज्ञा है !" तानसेन ने उत्तर दिया। "संसार में उस मालिक के बनाये हुए सब बन्दे एक हैं, फिर यह अन्तर भेद कैसा बना रखा है !" यह तानपूरा बजाते हुए महल के पिछवाड़े जाकर एक वृक्ष की छाया में बैठ गये और फिर एक राग छेड़ दिया।

तुही वेद, तुही पुराण, तुही हदीस, तुही कुरान।
तुही ध्यान, तुही ज्ञान, तुही त्रिभुवनेश ॥

राग का प्रभाव यह हुआ कि सारी प्रकृति मस्ती में डूब गई। राजा के पूजागृह में स्थापित शिवजी की मूर्ति भी गाना सुनकर आनन्द विभोर हो उठी और उसका मुख राजा की ओर से फिर कर संगीतज्ञ की ओर हो गया। राजा की तपस्या भङ्ग हो गई, वह चकित होकर सोचने लगे कि आज मेरी वर्षों के पूजा-पाठ से मूर्ति पर जो प्रभाव न पड़ा, वह केवल एक मधुर राग का चमत्कार बन गया। वह तुरन्त महल के बाहर निकल आये और गाने वाले को बुला भेजा। तानसेन का फ़क़ीरी बाना देखकर, वह उनके चरणों में गिर पड़े और बोले—"सांई जी ! आज से मेरी आंखें खुल गईं, मैं समझ गया कि ईश्वर-साधन का ज़रिया केवल पूजा-पाठ में ही नहीं है, किन्तु मनुष्य के साथ मनुष्यता का वर्ताव करने पर भी निर्भर है। आज से तुम मेरे राज दरबार में रहो। मैं अपनी भेद-भावी आज्ञा स्थगित करदेता हूं।" बस उसी

दिन से तानसेन बघेल राजा रामचन्द्र के सेवक बन गये और उनकी प्रशंसा में गीत बनाने और गाने लगे। समय बीतता गया, तानसेन और राजा रामचन्द्र की मित्रता और प्रेम दिनों-दिन अगाढ़ होते गये।

सम्राट अकबर के दरबार में, जिनको ललित कलाओं से अकथ्य प्रेम था, असंख्य गायन, वादन और नृत्य करने वाले लोग जमा थे। सप्ताह में प्रत्येक दिवस क्रमानुसार हर एक का नम्बर आता था। एक दिन सम्राट ऐसे ही गायन वादन की एक विराट सभा में व्यस्त थे, किन्तु गाने बजाने वालों में से किसी व्यक्ति की ओर उनका ध्यान आर्पित नहीं होता था। सहसा उन्होंने अपने प्रधान मन्त्री अबुलफ़ज़ल से पूछा—"क्या हिन्दोस्थान में इन लोगों से बढ़कर गाने वाला और कोई नहीं है? अगर है, तो फ़ौरन हाज़िर किया जावे।" उत्तर में प्रधान मन्त्री ने कहा—"जहाँपनाह! गाने वाला क्यूँ नहीं है; पर वह रीवां के बघेल राजा रामचन्द्र का दरबारी गवैया है, यहाँ उसका लाना कठिन है।" "कठिन! पर उसका नाम क्या है?" सम्राट ने दरियाफ्त किया। उत्तर मिला "तानसेन!" सम्राट आवेश में आ गये और बोले—"तानसेन को एक हफ्ते के अन्दर हमारे दरबार में हाज़िर किया जावे। अगर वालिये रीवां को उसे यहां भेजने में किसी तरह का इन्कार हो तो फौजकशी की जावे।" तामील में तुरंत राजा रामचन्द्र के नाम शाही फरमान जारी कर दिया गया और जलालुद्दीन खुर्ची को सन्मान सहित तानसेन को लाने रवाना किया गया। जिस समय राजा रामचन्द्र के पास सम्राट की आज्ञा पहुँची तो उनके शरीर से पसीना चूने लगा। हिन्दुस्थान के इतने बड़े बादशाह के विरुद्ध फौजकशी करने की उनमें हिम्मत न थी। तानसेन जैसे प्रिय व्यक्ति को भी वह अपने से पृथक नहीं कर सकते थे। वह बालक की भांति रो उठे। तानसेन ने राजा को हर प्रकार का आश्वासन दिया और कहा—"राजन् मेरा हृदय आपके साथ है, आप ही के गुणों का ऋणी हूँ। आप मुझे हँसी खुशी विदा कीजिये। दिल्लीश्वर की आज्ञा मानना आपका कर्तव्य है।" राजा रामचन्द्र ने हृदय पर पत्थर रखकर तानसेन को विदाई दी। उनका जुलूस निकाला और उम्दा पोशाक जर और जवाहरात के साथ उन्हें डोले में रवाना किया। रास्ते में थोड़ी दूर जाने के पश्चात, तानसेन को प्यास लगी उन्होंने अपना डोला रुकवाया और डोले के बाहर पानी पीने के हेतु उतरे। बाहर आकर वह भौंचक से रह गये। उन्होंने देखा कि उनके डोले की एक बल्ली को राजा रामचन्द्र खुद सहारा दिये चले आ रहे हैं, उनके तन पर न वस्त्र हैं और न पांव में जूता। तानसेन ने राजा से पूछा—"महाराजा यह सब कष्ट किसके लिये?" रामचन्द्र ने उत्तर दिया—"तानसेन हमारे यहां की रीति यही है कि जब कोई मनुष्य पर जाता है तो उसको इसी भांति कंधा दिया जाता है। तुम आज से मेरे लिये मर चुके हो। तुम्हें कंधा देना मेरा कर्तव्य है।" तानसेन का हृदय एक राजा के मुख से ऐसे आदरभाव सुनकर हर्ष से रो उठा। उन्होंने उत्तर में कहा—"राजन्! आपने मेरे लिये बहुत कष्ट किया है, आज आपने मेरे डोले को सीधा [illegible] है, अब यह सीधा हाथ आपके अतिरिक्त अन्य किसी [illegible] नहीं

राजा ने एक बार फिर तानसेन को विदाई दी। जिस समय तानसेन का डोला सम्राट के पास पहुँचा, शाम हो गई थी। अकबर बड़ी व्यग्रता से तानसेन की भेंट लेने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब तानसेन सम्राट को पेश किये गये तो उन्होंने उल्टे हाथ से सम्राट को प्रणाम किया और जब गाने के लिये तानसेन से कहा गया तो उन्होंने संध्या समय होते हुए भी, भैरवी अलापी। सम्राट इस बात से बहुत क्रुद्ध हुए और बोले—"ऐसे बदतमीज़ आदमी को हमारे सामने क्यूँ लाया गया है, क्या इससे हमारी हँसी कराना मंजूर था?" तानसेन सम्राट का यह रुख देखकर भयभीत हो गये और तब उन्होंने अपने दुःख की सारी रामकहानी सम्राट से कह डाली। सम्राट ने उनको हर प्रकार की तसल्ली दी और एक मास पीछे पेश किये जाने की आज्ञा प्रदान की, जिससे तानसेन अपना पिछला सारा जीवन भूलकर, मुग़ल राज्य दरबार के योग्य बन जावें।

× × ×

एक और कथा तानसेन के सम्बन्ध में यह भी कही जाती है कि जब तानसेन अकबर महान् की सेवा में आये तो उन्होंने पूरे एक वर्ष तक गाने का कोई प्रदर्शन नहीं किया। राजा रामचन्द्र से छुटने का उनको इतना दुःख था कि वह केवल अपने निवास स्थान में ही चिंतामग्न पड़े रहते थे। सम्राट दूसरी ओर उनका गाना सुनने के लिये व्याकुल थे। सम्राट की एक कन्या थी, जिसे गाने-बजाने का बेहद शौक था, सम्राट ने बस उसीको तानसेन के पीछे लगा दिया। स्थान-स्थान पर, पुष्प-वाटिकाओं में तथा जमुना तट पर जहाँ-जहाँ तानसेन मन बहलाने के लिये जाते, राज-कन्या उनका पीछा करती। एक दिन रङ्ग-महल में तानसेन को आता देखकर राजकुमारी ने एक राग को अशुद्ध स्वरों में अलापना आरम्भ कर दिया। एक कला-प्रेमी और वह भी एक सङ्गीतज्ञ भला यह कब सहन कर सकता था कि संगीत का इस प्रकार गला घोंटा जावे। तानसेन राजकुमारी के निकट आये और बोले—"शहज़ादी! तुम्हारा गुरू कौन है? जिसने तुम्हें ऐसा अशुद्ध संगीत सिखाया है!" राजकुमारी मानो बनते हुए भयभीत सी हो गई और बोली—"आप कौन हैं, आपने यहाँ तक आने का साहस कैसे किया?" तानसेन ने कहा—"मेरा नाम तानसेन है, मुझे सम्राट ने रीवां राज्य से बुलवाया है।" राजकुमारी का जी तब ठिकाने पर आया और उन्होंने उत्तर में कहा—"तानसेन हमने तुम्हारे गाने की बड़ी प्रशंसा सुनी थी पर मालूम होता है तुम्हें कुछ आता नहीं, कभी गाते भी नहीं सुना।" "हां!" तानसेन ने उत्तर दिया—"कुछ दिनों से तबियत खराब है, इसी कारण चुप हूँ।" 'ठीक है", राजकुमारी ने क्रमानुसार कहा—"परन्तु अब तो आप मुझे जो राग मैं गा रही थी, उसका सत्य रूप बताइये।" तानसेन को विवश हो, एक सुन्दर विनयम के सामने मस्तक झुकाना ही पड़ा। उन्होंने राजकुमारी के हाथ से दिलरुबा लेकर बसंत राग को उँगलियों से छेड़ना शुरू कर दिया। सारा वातावरण तानसेन की मधुर आवाज़ से झङ्कार उठा। पत्ते और कलियाँ खिल गईं, वृक्ष इत्यादि आनन्द-विभोर होकर झूमने लगे। सम्राट अकबर जो एक लता की आड़ में छुपकर यह सारी लीला देख रहे थे, उन्मत्त से हो बाहर निकल आये और तानसेन से बोले—"गायक! जैसी हमने तुम्हारी तारीफ़

सुनी थी, तुम उससे भी कहीं ज्यादा होश्यार निकले।" तानसेनने सर झुका लिया और केवल उत्तर में इतना कहा—"भारत सम्राट की जय!" लोगों का कथन है, अकबर ने उसी समय तानसेन के गाने से प्रसन्न होकर एक करोड़ रुपया उन्हें इनाम में दिया और "दरबारी नवरत्न" बनाने के पश्चात अपनी उसी कन्या (राजकुमारी) से उनका विवाह धूम-धाम से कर दिया।

तानसेन के विषय में यह भी कथित है कि जब जब सम्राट अकबर शिकार खेलने जाया करते थे, तानसेन उनके साथ रहा करते थे, वह समय समय के राग इतने ऊँचे स्वरों में गाते थे, जिनको सुनकर शिकारी जानवर शेर, हिरन, चीते, इत्यादि गायक के चरणों में आस पास मंडराने लगते और शिकार बड़ी आसानी से होजाता था।

तानसेन के सम्बन्ध में एक यह किस्सा भी सुनने में आता है कि छोटेपन से ही, वह सम्राट अकबर के दरबार में नौकर थे, किन्तु उनको गाना बिलकुल नहीं आता था, एक दिन ऐसी ही किसी भूल पर वह मुगल दरबार से बड़ी बेइज्जती के साथ निकाल दिये गये, घूमते फिरते वह किसी प्रकार विन्द्रावन जा पहुँचे और थकावट से चूर सड़क पर ही सोगये। सुबह के झुरमुट में, जब प्रसिद्ध गायक हरीदास स्वामी स्नान करने के लिये निधवन से यमुना जारहे थे, तब उनकी ठोकर जमीन पर पड़े तानसेन से लगगई। वह चौंक पड़े और उन्होंने तानसेन को उठाकर उनकी राम कहानी पूछी। तानसेन की अपमान कथा सुनने पर स्वामी जी ने केवल अपनी मनोशक्ति द्वारा, उनको एक निपुण गायक में परिणित करदिया और जब थोड़े समय पीछे वह सम्राट अकबर के दरबार में पुनः वापिस पहुँचे तो सम्राट उनकी सफल कला प्रदर्शनी देखकर चकित रह गये।

तानसेन जानवरों की बोलियों की नकल करने में बड़े सिद्धहस्त थे। पशु और पक्षी दोनों ही का अनुकरण वह इस सुन्दरता से करते कि असल और कृत्रिम में अन्तर करना बड़ा कठिन होजाता था। संध्या समय शेर की बोली बोलकर वह जङ्गल से लौटती गइयों के झुन्ड को इस प्रकार डरा देते थे मानो सचमुच का शेर उनको खाने के लिये भूखा पेट चिंघाड़ मार रहा हो, सड़कों पर बैठे हुये कुत्तों को लड़ाना, चिड़ियों, तोतों और अन्य पक्षियों की बोलियों की नकल करना, उनके लिये साधारण सी बात थी। तानसेन के पिता ने अपने पुत्र के इन्हीं विलक्षण लक्षणों से प्रभावित हो, गांव के बाग़ में उनकी नियुक्त करदी थी। जहां वह भांति भांति की बोलियां बोलकर नन्हे-नन्हे पौदों की पशु और पक्षी दोनों से ही रक्षा करते थे।

एक दिन हरिदास स्वामी बेहट गांव की ओर से जारहे थे, सहसा उनके कानों में शेर की गर्जना सुनाई पड़ी, उनको बहुत आश्चर्य हुआ कि ऐसी घनी बस्ती में शेर कहां से आनिकला। उन्होंने बाग में जाकर खोज की, तो उन्हें मालूम हुआ कि एक छोटा लड़का मुंह पर हाथ रखे शेर की नकल कर रहा है। अन्तर का भेद जानने वाले स्वामी जी ने लड़के की चमत्कारिक बुद्धि का अवलोकन कर, उसे पास

बुलाया। और भिन्न भिन्न बोलियों की नकल करने को उससे कहा। तानसेन की अनुकरण शक्ति को देखकर स्वामी जी चकित रहगये। वह तुरंत मकरंद के पास पहुँचे और उनसे बोले। "मकरन्द तुम्हारा लड़का बड़ा होनहार प्रतीत होता है, इसको ५ वर्ष तक हमारी शिक्षा दीक्षा में रहने दो। हम इसे एक निपुण कलावंत बनाकर तुम्हें वापिस सौंपदेंगे।" भला ऐसी आशामयी आज्ञा को कौन टाल-सकता था। तानसेन हरीदास की छत्रछाया में देदिये गये और उनकी थोड़े समय की ही सङ्गीत शिक्षा में, संसार जानता है, तानसेन क्या से क्या होगये।

कहावत प्रसिद्ध है कि मनुष्य की तबियत एक बार संसार की प्रिय से प्रिय वस्तु से भी ऊब जाती है। यही हाल तानसेन का अकबर के दरबार में हुआ। एक दिन जब तानसेन का गाना सुनते सुनते सम्राट ऊब गये, तो तानसेन से बोले। "क्यूं गायक, क्या तुमसे बढ़िया गाने वाला दुनियां में और कोई नहीं है।" "है क्यूँ नहीं जहांपनाह!" तानसेन ने उत्तर में कहा।" परन्तु उनका गाना सुनने का सौभाग्य मिलना, एक प्रकार से असम्भव है। कारण यह है कि उन्होंने संसार का त्याग कर दिया है और अब वह सांसारिक किसी भी वस्तु में दिलचस्पी नहीं लेते।" "उनका क्या नाम है तानसेन" सम्राट ने पूछा। "मथुरावासी हरीदास स्वामी।" तानसेन ने कहा। "तब तो हम उनका गाना जरूर सुनेंगे, किसी भी कीमत पर, और सम्राट का अनुरोध अटल था। तानसेन ने बहुत समझाया कि स्वामी जी ने अब गाना बिलकुल छोड़ दिया है, वहां तक जाना व्यर्थ होगा। परन्तु अकबर को तो सङ्गीतज्ञ तानसेन से उत्तम गाने वाले व्यक्ति का मधुर कन्ठ सुनने की लौ लगी हुई थी, वह बराबर तकाज़ा करते रहे। सम्राट का इतना अनुरोध देखकर अन्त में तानसेन ने कहा, सम्राट! केवल एक शर्त पर ही आप गुरुवर्य हरीदास का गाना सुन सकते हैं और वह शर्त यह है कि आपको अपने शरीर पर के सब बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण उतारकर एक सारङ्गीये का भेष धारण करना होगा। "यह किसलिये तानसेन" सम्राट ने फिर पूछा। तानसेन ने उत्तर दिया "सम्राट, परमात्मा की भक्ति में लीन सन्यासियों का सङ्गीत केवल त्याग करने वाले मनुष्य ही सुनकर आनन्द ले सकते हैं।" यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कला उपासक सम्राट अकबर तानसेन के नौकर बनकर वृन्दावन की ओर चलदिये। जब तानसेन और अकबर हरीदास की कुटिया पर पहुँचे तो स्वामी जी समाधि अवस्था में लीन थे। कल कल कर बहने वाली यमुना के समीप उनकी छोटी सी, शान्ति कुटिया बसी थी। आस पास सुन्दर बगीचा था। पेड़ों पर सुहावने पक्षी भांति भांति की मीठी बोलियों से दृश्य को और भी मन मोहक बना रहे थे।

थोड़ा समय बीतने पर जब स्वामी जी की तपश्चर्या भङ्ग हुई, तो उन्होंने तानसेन को बाहर बैठा देख, उससे पूछा, "कहो बेटा तानसेन! आज इतने दिनों बाद हमारी याद कैसे आई?" "वैसे ही गुरुवर्य," तानसेन ने सविनय कहा, "आपका मधुर गान सुने बहुत दिन होगये थे। सोचा, चलो आपके भी दर्शन भी कर आवें," "आओ बैठो," स्वामी जी बोले पर तन्ना! अब हमने गाना छोड़ दिया है। यह

रास्ते में सम्राट ने तानसेन से पूछा, "क्यूँ गायक तुम इतना अच्छा क्यों नहीं गाते, जितना स्वामी जी गाते हैं"। उत्तर में तानसेन ने कहा—"जहांपनाह, इसका कारण बहुत सरल है, मुझे जब गाना पड़ता है जब मेरा मालिक (सम्राट) मुझे आज्ञा देता है और स्वामीजी जब गाते हैं, जब उनका हृदय प्रेरित होकर उनके मालिक (परमात्मा) की आज्ञा गृहण करता है, बस इसी अन्तर से गाने के माधुर्य में फर्क पड़ जाता है।

× × × × ×

अकबर के राज्यकाल में ही चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी भक्त मीराबाई अपने पति और संसार से विरक्त हो कर ईश्वरी प्रेम में पागल हो रही थीं। उनकी भक्ति, नृत्य और सङ्गीत कला की ख्याति भारत के कोने-कोने में फैल चुकी थी। शनै शनै, मीराबाई के पागल नृत्य और भक्तिपूर्ण गायन की खबर सम्राट के कानों तक भी पहुँची। वह उनके दर्शन करने और उनका गाना सुनने के लिए व्याकुल हो उठे। उन्होंने एक दिन तानसेन से कहा—"गायक! चित्तौड़ की रानी मीरा का नाम बहुत मशहूर हो चला है हम लोगों को भी चलकर एक दिन उनके दर्शन का लाभ उठाना चाहिये"। तानसेन ने उत्तर में कहा, "जहांपनाह, यह असंभव है, क्यों कि हम लोग मुसलमान हैं, सुना है चित्तौड़ दुर्ग के जिस मंदिर में वह भगवान की मूर्ती के सन्मुख नाचती गाती है, वहां स्वयं राना और चित्तौड़ निवासी हिन्दू भी कठिनता से प्रवेश कर पाते हैं, फिर हम लोगों की गुज़र किस तरह हो सकती है"! "किसी भी तरह हो" सम्राट ने ज़िद की, एकबार चलकर मीरा की नृत्य लीला जरूर देखनी चाहिए" और सम्राट के ज़िद पर आने से, तानसेन को उनकी आज्ञा माननी ही पड़ती थी। सम्राट और तानसेन दोनों ही हिन्दू साहूकार का वेष धारण कर, किसी तरह चित्तौड़ रणछोड़ जी के मन्दिर में जा पहुँचे। जिस समय यह लोग पहुँचे, उस वक्त भक्त मीराबाई हाथों में करताल लिए मोहन की मोहिनी सूरत के सामने पागलों की भांति नृत्य कर रही थीं और उनके मुख पर वही प्रसिद्ध गाना था, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई"। तानसेन और अकबर यह दृश्य देखकर चकित रह गए। भक्ति रस, प्रेम और सङ्गीत की धारा चहुँओर वातावरण को मस्त किये दे रही थी। जब गाना समाप्त हुआ तो मीराबाई का ध्यान इन साहूकार रूपी सङ्गीतप्रेमियों की ओर आकर्षित हुआ। वह इन्हें प्रथम तो अपनी ओर घूरता देखकर भयभीत हुई फिर सहसा पूछा—"आप कौन लोग हैं और अकेले यहाँ तक आने की हिम्मत आपको कैसे हुई"? तानसेन ने उत्तर में कहा, "हम लोग आगरे के जौहरी हैं आपकी ख्याति सुनकर दर्शनों के लिए चले आये"। मीरा ने उत्तर दिया "आप लोगों को अब दर्शन होगए, फौरन यहाँ से चले जाइए, अन्यथा चित्तौड़ के राणा को खबर होते ही वह आप लोगों को ज़िन्दा न छोड़ेगा"। तानसेन और सम्राट सहम गये और फिर बोलेः-"अच्छा हम लोग जाते हैं किन्तु हमारी यह इच्छा है कि अपने भगवान् पर हमारी ओर से यह रत्नों की माला भेंट चढ़ा दीजिये, जिससे भगवान के पास हमारे यहां आने की स्मृति बनी रहे।" मीराबाई

अभिलाषा तो तुम्हारी हम पूरी न कर सकेंगे" और तानसेन के बहुत खुशामद करने पर भी स्वामी जी गाने को तत्पर न हुए। हताश तानसेन और अकबर बाहर बगीचे में आकर बैठ गये और स्वामी जी कुटिया में जा पुनः ध्यान-मग्न हो गये। तानसेन लज्जित थे कि सम्राट को अपनी शर्त के अनुसार स्वामी जी की वीणा न सुनवा सके। उधर अकबर के दिमाग़ का पारा गर्म हो रहा था कि गाना सुनने की अभिलाषा में नौकर भी बने और सफलता भी प्राप्त न हुई। तानसेन को हताश एक विधि सूझी, उन्होंने तानपूरा उठाकर एक राग की खबर ली, परन्तु अशुद्ध स्वरों में आवाज वायु में गूँज उठी। किन्तु ऐसा ज्ञात होने लगा मानो कभी तो आँधी की आवाज आ रही है और कभी बादलों की गड़गड़ाहट। हरिदास स्वामी तानसेन का

रास्ते में सम्राट ने तानसेन से पूछा, "क्यूँ गायक तुम इतना अच्छा क्यों नहीं गाते, जितना स्वामी जी गाते हैं"। उत्तर में तानसेन ने कहा—"जहांपनाह, इसका कारण बहुत सरल है, मुझे जब गाना पड़ता है जब मेरा मालिक (सम्राट) मुझे आज्ञा देता है और स्वामीजी जब गाते हैं, जब उनका हृदय प्रेरित होकर उनके मालिक (परमात्मा) की आज्ञा गृहण करता है, बस इसी अन्तर से गाने के माधुर्य में फर्क पड़ जाता है।

× × × ×

रास्ते में सम्राट ने तानसेन से पूछा, "क्यूँ गायक तुम इतना अच्छा क्यों नहीं गाते, जितना स्वामी जी गाते हैं"। उत्तर में तानसेन ने कहा—"जहाँपनाह, इसका कारण बहुत सरल है, मुझे जब गाना पड़ता है जब मेरा मालिक (सम्राट) मुझे आज्ञा देता है और स्वामीजी जब गाते हैं, जब उनका हृदय प्रेरित होकर उनके मालिक (परमात्मा) की आज्ञा ग्रहण करता है, बस इसी अन्तर से गाने के माधुर्य में फर्क पड़ जाता है।

× × × × ×

अकबर के राज्यकाल में ही चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी भक्त मीराबाई अपने पति और संसार से विरक्त हो कर ईश्वरी प्रेम में पागल हो रही थीं। उनकी भक्ति, नृत्य और सङ्गीत कला की ख्याति भारत के कोने-कोने में फैल चुकी थी। शनैः शनैः, मीराबाई के पागल नृत्य और भक्तिपूर्ण गायन की खबर सम्राट के कानों तक भी पहुँची। वह उनके दर्शन करने और उनका गाना सुनने के लिए व्याकुल हो उठे। उन्होंने एक दिन तानसेन से कहा—"गायक! चित्तौड़ की रानी मीरा का नाम बहुत मशहूर हो चला है हम लोगों को भी चलकर एक दिन उनके दर्शन का लाभ उठाना चाहिये"। तानसेन ने उत्तर में कहा, "जहांपनाह, यह असंभव है, क्यों कि हम लोग मुसलमान हैं, सुना है चित्तौड़ दुर्ग के जिस मंदिर में वह भगवान की मूर्ती के सन्मुख नाचती गाती है, वहां स्वयं राना और चित्तौड़ निवासी हिन्दू भी कठिनता से प्रवेश कर पाते हैं, फिर हम लोगों की गुज़र किस तरह हो सकती है"! "किसी भी तरह हो" सम्राट ने ज़िद की, एकबार चलकर मीरा की नृत्य लीला जरूर देखनी चाहिए" और सम्राट के ज़िद पर आने से, तानसेन को उनकी आज्ञा माननी ही पड़ती थी। सम्राट और तानसेन दोनों ही हिन्दू साहूकार का वेष धारण कर, किसी तरह चित्तोड़ रणछोड़ जी के मन्दिर में जा पहुँचे। जिस समय यह लोग पहुँचे, उस वक्त भक्त मीराबाई हाथों में करताल लिए मोहन की मोहिनी मूरत के सामने पागलों की भांति नृत्य कर रही थीं और उनके मुख पर वही प्रसिद्ध गाना था, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई"। तानसेन और अकबर यह दृश्य देखकर चकित रह गए। भक्ति रस, प्रेम और सङ्गीत की धारा चहुँओर वातावरण को मस्त किये दे रही थी। जब गाना समाप्त हुआ तो मीराबाई का ध्यान इन साहूकार रूपी सङ्गीतप्रेमियों की ओर आकर्षित हुआ। वह इन्हें प्रथम तो अपनी ओर घूरता देखकर भयभीत हुई फिर सहसा पूछा—"आप कौन लोग हैं और अकेले यहाँ तक आने की हिम्मत आपको कैसे हुई"? तानसेन ने उत्तर में कहा, "हम लोग आगरे के जौहरी हैं आपकी ख्याति सुनकर दर्शनों के लिए चले आये"। मीरा ने उत्तर दिया "आप लोगों को अब दर्शन होगए, फौरन यहाँ से चले जाइए, अन्यथा चित्तौड़ के राणा को खबर होते ही वह आप लोगों को ज़िन्दा न छोड़ेगा"। तानसेन और सम्राट सहम गये और फिर बोलेः—"अच्छा हम लोग जाते हैं किन्तु हमारी यह इच्छा है कि अपने भगवान् पर हमारी ओर से यह रत्नों की माला भेंट चढ़ा दीजिये, जिससे भगवान के पास हमारे यहां आने की स्मृति बनी रहे।" मीराबाई

अभिलाषा तो तुम्हारी हम पूरी न कर सकेंगे" और तानसेन के बहुत खुशामद करने पर भी स्वामी जी गाने को तत्पर न हुए। हताश तानसेन और अकबर बाहर बगीचे में आकर बैठ गये और स्वामी जी कुटिया में जा पुनः ध्यान-मग्न हो गये। तानसेन लज्जित थे कि सम्राट को अपनी शर्त के अनुसार स्वामी जी की वीणा न सुनवा सके। उधर अकबर के दिमाग का पारा गर्म हो रहा था कि गाना सुनने की अभिलाषा में नौकर भी बने और सफलता भी प्राप्त न हुई। तानसेन को हताश एक विधि सूझी, उन्होंने तानपूरा उठाकर एक राग की खबर ली, परन्तु अशुद्ध स्वरों में आवाज वायु में गूँज उठी। किन्तु ऐसा ज्ञात होने लगा मानो कभी तो आँधी की आवाज आ रही है और कभी बादलों की गड़गड़ाहट। हरिदास स्वामी तानसेन का ऐसा बेसुरा राग सुनकर चौंक उठे। कुटिया से बाहर निकलकर बोले—"तानसेन! यह राग तुझे बरसों तक सिखाया, परन्तु फिर भी तू कोरा का कोरा ही रहा। ला तानपूरा मुझे दे" और तानपूरा हाथ में लेकर स्वामी जी ने अलापना आरम्भ कर दिया। स्वामी जी के मधुर कण्ठ से निकली हुई सङ्गीत लहरी सारे वातावरण में दौड़ गई। पशु पक्षी अपना चलना उड़ना भूल गये। वृक्षादि स्तब्ध अवस्था में खड़े हो गये, आकाश से अमृत बरसने लगा, सम्राट अकबर भी अपनी सुधि-बुधि भूले हुए थे। जब गाना समाप्त हुआ तो सहसा उनके मुँह से निकल पड़ा—"सुभान अल्लाह! सुभान अल्लाह!!" स्वामी जी यह शब्द सुनकर चौंक पड़े। तानसेन से पूछने लगे—"यह कौन है? तानसेन के उत्तर देने से पहिले ही सम्राट बोल उठे।" स्वामी जी मैं सम्राट अकबर हूँ, हिन्दुस्तान का बादशाह! आज आपका गाना सुनकर दिल बहुत खुश हुआ, मैं आपको कुछ इनाम देना चाहता हूँ।' यह सुनकर स्वामी जी हँसे और बोले—"हा तो नौकर के वेश में छुपे भारत के शासक तू मुझे इनाम में क्या देना चाहता है, बोल तेरे पास क्या है?' सम्राट ने बड़े गर्व से कहा—"स्वामी जी! इस वक्त तो हमारे पास सिर्फ गले की यह रत्न माला है, जो हम उपहार में दे सकते हैं। अगर आप हमारी राजधानी में पधारें तो हम आपको माला-माल कर देंगे।" स्वामी जी थोड़े गम्भीर हो गये और फिर सर उठाकर बोले—"अच्छा यदि तुम्हारी इच्छा मुझे कुछ उपहार देने की ही है तो मैं स्वीकार कर लूँगा, परन्तु बिना स्नान किये मैं तुम्हारे हाथ से कुछ नहीं लूँगा।" सम्राट ने उत्तर दिया—"अगर यही शर्त है तो स्वामी जी हम यमुना में गुसल कर अभी हाजिर हो सकते हैं।" यमुना नदी कुटिया से अधिक दूर नहीं थी। सम्राट वस्त्र उतार कर नदी में स्नान करने चले गये। जब वह यमुना के समीप बने घाटों पर पहुँचे तो यह देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि घाट की प्रत्येक पौड़ी हीरे और बहुमूल्य रत्नों से जड़ी हुई है। स्वामी जी की यह चमत्कारिक लीला देखकर सम्राट दङ्ग रह गये। वह सोचने लगे कि जिस साधु की स्नान करने की पौड़िया रत्नों की बनी हुई हों, उसकी आखों में हमारे एक तुच्छ हार का क्या मूल्य हो सकता है? अपनी मूर्खता पर पश्चाताप करते हुए सम्राट लौटे और स्वामी जी के चरणों में गिर कर उसने क्षमा माँगी। स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए तानसेन और सम्राट को विदा किया।

रास्ते में सम्राट ने तानसेन से पूछा, "क्यूं गायक तुम इतना अच्छा क्यों नहीं गाते, जितना स्वामी जी गाते हैं" । उत्तर में तानसेन ने कहा—"जहांपनाह, इसका कारण बहुत सरल है, मुझे जब गाना पड़ता है जब मेरा मालिक (सम्राट) मुझे आज्ञा देता है और स्वामीजी जब गाते हैं, जब उनका हृदय प्रेरित होकर उनके मालिक (परमात्मा) की आज्ञा गृहण करता है, बस इसी अन्तर से गाने के माधुर्य में फर्क पड़ जाता है ।

× × × × ×

अकबर के राज्यकाल में ही चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी भक्त मीराबाई अपने पति और संसार से विरक्त हो कर ईश्वरी प्रेम में पागल हो रही थीं । उनकी भक्ति, नृत्य और सङ्गीत कला की ख्याति भारत के कोने-कोने में फैल चुकी थी । शनै शनै, मीराबाई के पागल नृत्य और भक्तिपूर्ण गायन की ख्बर सम्राट के कानों तक भी पहुँची । वह उनके दर्शन करने और उनका गाना सुनने के लिए व्याकुल हो उठे । उन्होंने एक दिन तानसेन से कहा—"गायक ! चित्तौड़ की रानी मीरा का नाम बहुत मशहूर हो चला है हम लोगों को भी चलकर एक दिन उनके दर्शन का लाभ उठाना चाहिये" । तानसेन ने उत्तर में कहा, "जहांपनाह, यह असंभव है, क्यों कि हम लोग मुसलमान हैं, सुना है चित्तौड़ दुर्ग के जिस मंदिर में वह भगवान की मूर्ती के सन्मुख नाचती गाती हैं, वहां स्वयं राना और चित्तौड़ निवासी हिन्दू भी कठिनता से प्रवेश कर पाते हैं, फिर हम लोगों की गुज़र किस तरह हो सकती है" ! "किसी भी तरह हो" सम्राट ने ज़िद की, एकबार चलकर मीरा की नृत्य लीला जरूर देखनी चाहिए" और सम्राट के ज़िद पर आने से, तानसेन को उनकी आज्ञा माननी ही पड़ती थी । सम्राट और तानसेन दोनों ही हिन्दू साहूकार का वेष धारण कर, किसी तरह चित्तौड़ रणछोड़ जी के मन्दिर में जा पहुँचे । जिस समय यह लोग पहुँचे, उस वक्त भक्त मीराबाई हाथों में करताल लिए मोहन की मोहिनी मूरत के सामने पागलों की भांति नृत्य कर रही थीं और उनके मुख पर वही प्रसिद्ध गाना था, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई" । तानसेन और अकबर यह दृश्य देखकर चकित रह गए । भक्ति रस, प्रेम और सङ्गीत की धारा चहुँओर वातावरण को मस्त किये दे रही थी । जब गाना समाप्त हुआ तो मीराबाई का ध्यान इन साहूकार रूपी सङ्गीतप्रेमियों की ओर आकर्षित हुआ । वह इन्हें प्रथम तो अपनी ओर घूरता देखकर भयभीत हुई फिर सहसा पूछा—"आप कौन लोग हैं और अकेले यहाँ तक आने की हिम्मत आपको कैसे हुई" ? तानसेन ने उत्तर में कहा, "हम लोग आगरे के जौहरी हैं आपकी ख्याति सुनकर दर्शनों के लिए चले आये" । मीरा ने उत्तर दिया "आप लोगों को अब दर्शन होगए, फौरन यहाँ से चले जाइए, अन्यथा चित्तौड़ के राणा को खबर होते ही वह आप लोगों को ज़िन्दा न छोड़ेगा" । तानसेन और सम्राट सहम गये और फिर बोलेः-"अच्छा हम लोग जाते हैं किन्तु हमारी यह इच्छा है कि अपने भगवान् पर हमारी ओर से यह रत्नों की माला भेंट चढ़ा दीजिये, जिसमें भगवान के पास हमारे यहां आने की स्मृति बनी रहे।" मीराबाई

असमंजस में पड़ गईं। वह सोचने लगीं कि यदि राणा को इस भेंट का विवरण मालूम होगया तो खैर न होगी। परन्तु भगवान के लिये किसी की दी हुई भेंट अस्वीकार करना भी तो पाप है। यह विचार आते ही उन्होंने अकबर के हाथ से माला लेकर भगवान पर चढ़ादी और फिर वही गीत–"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई" गाने लगीं। मन्दिर की ईंट-ईंट से आवाज आना शुरू होगई, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई"। जब चित्तौड़ से लौटे तो सम्राट ने तानसेन से पूछा—"गायक, तुम्हारे गाने में इतनी मस्ती जैसी मीराबाई के गाने में थी, क्यूं नहीं है।" उत्तर में तानसेन ने केवल इतना ही कहा, "मैं मनुष्य का उपासक और चाकर हूँ। ईश्वर का नहीं, नहीं तो मैं भी गासकता था, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई"!

सुना जाता है कि जब राणा को उक्त घटना की सूचना मिली तो उन्होंने नगर के समस्त जौहरियों को इस बात का पता लगाने के लिए वह हार दिखाया कि इसका मालिक कौन है। घटनावश एक जौहरी ने बता दिया कि कुछ समय हुआ जब वह यही हार आगरा जाकर सम्राट अकबर के हाथ बेच आया था। राणा को यह मालूम होने पर कि साहूकार के रूप में मुसलमान बादशाह अकबर ने चित्तौड़ के मन्दिर को अपवित्र कर उनकी रानी मीरा की मुखश्री देखली है, बड़ा क्रोध आया। उन्होंने जीवन से मौत को उच्चतम समझ कर एक ज़हर का प्याला मीरा के पास पीने भेजा। कृष्ण भक्त मीरा उसे प्रेम पूर्वक पी गई और फिर वही गाने लगी, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई"।

× × × × +

तानसेन के अकबरी दरबार में प्रवेश करने से पूर्व, राज्य गायकों की संख्या करीब ३६ थी। यह लोग सम्राट को तरह तरह की राग-रागिनी सुनाकर सदा इनाम इकराम पाया करते थे। किंतु जब से तानसेन के मधुर संगीत की धाक दरबार में जमी थी, शेष सब की बधिया बैठ गई। उधर तानसेन की दिन प्रतिदिन उन्नति देखकर शत्रुओं के हृदय में ईर्ष्या की अग्नि प्रबल रूप से प्रचण्ड हो उठी। सब ने मिलकर एक सभा की और तानसेन का जीवन दीप बुझाने की विधियें सोच निकालीं।

राज्य गायकों में बृजनाथ का एक व्यक्ति था, जिसके गाने में यह विशेषता थी कि वह अपने गाने द्वारा किसी भी साधारण हाथी को मस्त और पागल बनाकर छोड़ देता था। मस्त हाथी बड़ा उत्पात करता और जब तक दस बीस आदमियों का ख़ातमा न कर देता, उसका पागलपन शान्त न होता था, एक दिन जब शाही फीलख़ाने का एक हाथी सम्राट को सलामी देरहा था, बृजनाथ ने चालाकी से एक राग छेड़ दिया। राग की आवाज़ हाथी के कानों में पहुँचते ही हाथी मस्त हो उठा, अभाग्यवश तानसेन हाथी के सामने पड़ गये। हाथी उन्हीं की तरफ दौड़ा, तानसेन के स्थान पर यदि उस समय कोई दूसरा होता तो अवश्य मौत की घड़ियाँ गिनता

होता, परन्तु तानसेन को गायनदेवी का पूर्ण इष्ट था। उन्होंने तुरन्त गज वशीकरण का निम्नलिखित राग छेड़ दिया।

मन गज भयौ अर समान।
अत माघमाती अल प्रबल चरड़ मरड,
प्रचण्ड शठ दरिद्र अष्टांग कारो ॥
उखतुख धुन्धकार, मदन दुहाई है ताकी।
फेरे तान घेरेगा आए सनमुख जाको होम सूँड़ वारो ॥
ईमन्द-ईमन्द की मन्द कुकत्र बहु प्रबल फनी फुफकारो।
तानसेन को डारे कारे भागे तब एक दन्त दूजी सूँड़ से उखारो ॥

राग का असर यह हुआ कि हाथी अपनी मस्ती भूलकर उल्टा वृजनाथ की ओर लपका, वृजनाथ को अपनी जान बचाना दूभर हो गया।

एक दूसरे गायक आदमखां ने भी तानसेन से अच्छी दुश्मनी निकाली। सम्राट से उसने एक दिन यह जड़ दिया कि सब रागों का राजा दीपक-राग है और केवल तानसेन ही उसका जानकर है, यदि उसको सुना जायेगा तो बड़ा आनन्द प्राप्त होगा। राग का आनन्द यह है कि राग द्वारा अँधेरे में उजाला होकर बुझे हुए दीप,-राग की गरमी के कारण जल उठते हैं। बस! फिर क्या था सम्राट तानसेन के पीछे पड़ गये और उन्हें दीपक-राग सुनाना ही पड़ा। बीच यमुना में खड़े होकर उन्होंने राग छेड़ा और थोड़ी ही देर में उनके शरीर से अग्नि निकलने लगी। नदी का पानी खौल गया। बहुत सम्भव था कि राग की गरमी के कारण तानसेन का शरीर जलकर खाक हो जाता, किन्तु ईश्वर ने उनकी सहायता की। किले पर से उनकी लड़की बरबादी का यह दृश्य देख रही थी। उसने मल्हार राग गाकर इन्द्र देवता को बुलवा लिया। वर्षा के शीतल जल से राग का भयानक परिणाम जाता रहा और तानसेन बच गये।

× × ×

तानसेन के समकालीन गायकों में बैजू का नाम उल्लेखनीय है। जो 'बावरे' के नाम से जाने जाते हैं। बैजू ने बहुत काल से तानसेन का नाम और उनके गाने की ख्याति सुन रखी थी, किन्तु उनके दर्शन नहीं किये थे। एक दिन वह किसी कार्यवश ग्वालियर आये और एक सराय में ठहरे। यहां कुछ दिन रहने पर उनके कपड़े मैले हो गये, उन्होंने सोचा कपड़े चलकर किसी धोबी से धुलवा लें। रास्ते में एक पोखर के किनारे एक सुन्दर धोबिन "छिपो राम, छिपो राम", बड़ी लहकी हुई आवाज में कह रही थी। बैजू उसकी आवाज सुनकर ठिठके और उसके पास जाकर बोले—"बरैठन, तू कपड़े धोती है?" उत्तर में उसने कहा—"हां बड़े-बड़े आदमियों के, जैसे तानसेन।" बैजू ने फिर कहाः—"अच्छा हमारे कपड़े भी धोयेगी?" "क्यूँ नहीं, मेरा तो यही काम है, पर आप कपड़े कैसे पानी से धुलवाना चाहते हैं।" बैजू असमञ्जस

में पड़ गये। उन्होंने पूछा—"क्या पानी यहां पर कई तरह के होते हैं, जो तुम ऐसा कह रही हो?" जी! धोबन ने उत्तर दिया—"मेरा मतलब यह था कि आप अपने कपड़े इस पोखर के बासी पानी से धुलवायेंगे या आकाश के बरसे ताजे जल से?" बैजू धोबिन का मर्म समझ गये और बोले—"हम तो ताज़ा पानी से धुलवायेंगे धोबिन" और धोबिन ने तुरन्त मल्हार राग की सोई हुई आत्मा को जगा दिया। राग की आवाज सूर्य से जलते हुए नीले आसमान तक पहुँच गई और एक गहरी घटा घेर लाई। बादल चारों ओर जम गये और थोड़ी देर में ही मूसलाधार पानी बरसने लगा। तब धोबिन ने बैजू के कपड़े उस पानी में धोकर बैजू को दिये और बैजू सोचने लगे कि जब तानसेन की धोबिन का गाने में यह हाल है, तो स्वयं तानसेन की सङ्गीत शक्ति क्या होगी। उधर धोबिन फिर मीठे स्वरों में अलापने लगी, "छीयो राम, छीयो राम।"

बैजू और तानसेन के विषय में एक यह कथा भी प्रचलित है कि जब अकबरीय दरबार में, तानसेन का पूरा पूरा रङ्ग जम गया तो उनको अभिमान और ऐश्वर्य के भूत ने घेर लिया। प्रयत्न करके उन्होंने सम्राट से यह आज्ञा प्राप्त करली कि आगरे की राजधानी में तानसेन के अतिरिक्त दूसरा कोई गाना न गाये, यदि गाने का साहस करे तो तानसेन के मुकाबिले में गाने को तैयार रहे और हारने की सूरत में दण्ड रूप अपने प्राण दे। इस आज्ञा का ढिंढोरा जब नगरी में पीटा गया तो राज्य गायकों और अन्य सङ्गीत प्रेमियों ने अपने अपने सङ्गीत यन्त्रों पर कफ़न चढ़ा लिये और गाना छोड़कर दूसरे धन्धे करने लगे। उनमें से किसी का यह साहस न था कि सङ्गीत सम्राट तानसेन का मुकाबिला करके विजयी होसकता। किन्तु इस अन्धेरकारी आज्ञा के अनभिज्ञ बहुत से परदेशी आगरे में गाते-बजाते निकले और मौत के घाट उतार दिये गये।

एक दिन राजधानी में साधुओं की एक टोली यह भजन गाती हुई कहीं बाहर से आ गई:—

"बड़ी है हरि चरणन की ओट!"

राजदूतों ने साधुओं का दुस्साहस देखकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया और सम्राट के सम्मुख पेश किया। सम्राट ने उन साधुओं को तानसेन का मुकाबिला करने की आज्ञा दी। मजबूरन उनको आज्ञा का पालन करना पड़ा। बस फिर क्या था, दरबार में गाने का सदा की भांति अखाड़ा जम गया। दरबारी भी बन ठन कर साधुओं की मौत का नाटक देखने बैठ गये। तानसेन ने एक टोड़ी रागिनी छेड़ी। जैसे-जैसे उनके, सङ्गीत की तानें वायु में फैलीं, स्तब्धता का राज्य चारों ओर छाने लगा और थोड़ी देर में ही पशु और पक्षी उनके निकट इकट्ठे होगये। एक काला हिरन भी उनके समीप आया और मस्त होकर उनके तलवे चाटने लगा। तानसेन ने गाते-गाते अपने गले की मणिमाला उतारकर मृग के गले डाल दी और गाना स्थगित कर दिया। मृग जङ्गल में वापिस दौड़ गया। पक्षी उड़ गये और

पशु जहां के तहां चले गये। तानसेन ने फिर साधुओं को आज्ञा दी तुम अब अपने गाने की शक्ति से गये हुए हिरन को वापिस बुलाकर मेरी मणिमाला मुझे देदो नहीं तो मरने के लिये तैयार हो जाओ। आज्ञा बड़ी कठिन थी। पर साधुओं को पालन करनी ही पड़ी। उनमें से प्रत्येक ने ज़ोर मारा। गायन देवी की हा हा खाई, अपने जीवन की कमाई हुई सारी कला बाज़ी पर लगादी, परन्तु गये हुए मृग को वापिस बुलाने में, कोई भी समर्थ न हो सका। साधु लोग हार गए और तानसेन का इशारा मिलते ही उनको फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। जब साधु अपनी मृत्यु का अन्तिम दृश्य देख रहे, थे तो उनके साथ का दस वर्षीय एक बालक, बिलख बिलख कर रोरहा था। अभाग्यवश उसका पिता भी इन साधुओं की टोली में था, जो मौत के घाट उतार दिए गए थे। तानसेन से जब बालक की मृत्यु के विषय में पूछा गया तो उन्होंने केवल इतना ही कहाः—बालक को छोड़ दो, इसने हमारा क्या बिगाड़ा है? बालक आजाद कर दिया गया. परन्तु जब उसने राजधानी से विदाई ली तो उसकी आँखों से आंसू ढलक रहे थे और ढलके हुए इन आंसुओं में कितना मर्म छिपा हुआ था। यह केवल उस बालक का नन्हा सा हृदय ही जानता था।

भटकता हुआ अभागा बालक, जब किसी प्रकार मथुरा जा पहुंचा. तो रात होगई थी। थके हुए उसके पांव ज़ख्मों से चूर हो रहे थे। जगह-जगह से खून की धारा चल रही थी। हारा मांदा वह सड़क के एक कोने पर, पड़ कर सोगया। निद्रा बुरी वस्तु है—कांटों पर भी आजाती है। प्रातःकाल जब स्वामी हरिदास नित्यकर्म के लिए शीघ्रता से यमुना जी की ओर लपके जा रहे थे। उनकी ठोकर पृथ्वी पर पड़े बालक से लगगई वह चौंक गए और उन्होंने जगाकर उसका विवरण पूछा। बालक ने अपना नाम बैजू बता कर बीती हुई सारी घटनायें कह सुनाई। हरिदास स्वामी तानसेन की ऐसी कठोर आज्ञा का हाल जानकर आप ही आप बड़बड़ाने लगे। "तानसेन मेरा ही शिष्य है, परन्तु ज्ञात होता है, वह अभिमानी होगया है और अभिमानी मनुष्य का सर सदा ही नीचा करना होता है।" हरिदास बालक बैजू को अपनी कुटिया पर लेगये और उसकी चिकित्सा शुरू करदी। बैजू थोड़े ही दिनों में अच्छा होगया, फिर स्वामी जी ने उसे गाने की तालीम पर डाल दिया। सङ्गीत में सारे भेद उस पर खोल दिए। राग रागनियों के छुपे हुए गुण, लक्षण और उनके परिणाम उसे बता डाले। समय बीतता गया और दस वर्ष की अवधि में बैजू एक निपुण गायक बन गया। एक दिन तब स्वामी जी ने उसे गुरुदीक्षा देते हुए कहा, "बैजू जा तुझे आशीर्वाद है, तू जहां जायेगा तेरी मनोकामना सफल होगी।" बैजू ने हरिदास के चरण छूकर विदाई ली और मजीरे बजाते हुए आगरे की ओर चल दिये।

बैजू अब २० वर्षीय एक सुन्दर नव जवान बन चुके थे! घुंघराले बाल और मस्तानी चाल—मंजीरा पर वही पुराना गीत "बड़ी है हरिचरणन की ओट" गाते हुये मुगल राजधानी से गुजरे। तानसेन की आज्ञा बदस्तूर जारी थी। गीत सुनकर

सन्तरियों के कान खड़े हुये और उन्होंने बैजू को गिरफ्तार कर दरबार में तानसेन के सन्मुख पेश कर दिया। तानसेन ने बैजू की आरम्भिक जवानी देखकर तरस खाते हुए, उससे कहा—"नवयुवक क्या तुझे हमारी आज्ञा मालूम नहीं थी, जो गाने का ऐसा दुस्साहस, किया ?" "मालूम क्यों नहीं थी, तानसेन ! परन्तु हम तुम्हारा मुकाबिला करने आये हैं।" बैजू ने एक वीर की भाँति कहा। सम्राट, तानसेन और समस्त दरबारी तानसेन जैसे गायक के विरुद्ध यह उत्तर सुनकर चकित रह गए। परन्तु मुकाबिला करने के अतिरिक्त दूसरा कोई चारा नहीं था। गाने की महफिल फिर जम गई, शौकीन लोग इकट्ठा हो गए और तानसेन ने अपनी वही पुरानी शराब नई बोतल में भरना शुरू कर दिया, टोड़ी गाई-हरिण आया,⋯तलबे चाटे मणिमाला उसके गले में पहिनाई और उसे वापिस बुलाने की आज्ञा दी गई।

बैजू ने जवाब में तानपूरा हाथ में संभाला और वही टोड़ी गाई, उन्हीं स्वरों, में मालूम होता था मानो तानसेन स्वयं गारहे हों, हरिण आया और उसके गले से मणिमाला उतार कर बैजू ने तानसेन को वापिस देदी। एक युवक की यह चमत्कारिक लीला देखकर, एकत्रित सब दंग रह गए। तानसेन भी असमंजस में पड़ गए कि मेरा हरिण बुलाने वाला गुरु बैजू को कहाँ से हाथ लग गया, पर वास्तविकता फिर वास्तविकता थी।

थोड़ी देर बाद बैजू ने तानसेन को ललकारा, "तानसेन संभल जाओ, अब हमारी बारी है। हमारा वार भी झेलो, हम जो रागिनी गाते हैं, उसका उतार करो" और हाथ में मजीरे लेकर, बैजू ने एक रागिनी छेड़दी। सामने रखी हुई पत्थर की एक शिला तुरन्त रागिनी के प्रभाव से पिघलने लगी और जब वह पूरी तौर पर मोम की भांति गल गई, तो बैजू ने उसमें अपने मजीरे रख दिये और गाना स्थगित कर दिया। फिर तानसेन से कहा, "उस्ताद पत्थर की शिला में से हमारे मजीरे निकाल कर दो, तब तुम्हारी विजय होगी"। तानसेन की न जाने क्यूँ एक प्रकार से कमर सी टूट गई थी, पर फिर भी उन्होंने तानपुरा हाथ में उठाकर अलापना शुरू कर दिया और रागिनी के उन्हीं स्वरों में जान डालने का प्रयत्न किया, जिनपर बैजू गारहा था, पर सफलता न मिल सकी। पत्थर की शिला ज्यों की त्यों बनी रही। तानसेन ने पूरी शक्ति से एक बार फिर गायनदेवी की आत्मा जगाना चाही, आत्मा जगी जरूर और गाने का प्रभाव यह हुआ कि एकत्रित सब लोगों के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। आकाश पर करुणा छा गई और वातावरण में संजीदगी उत्पन्न होगई, परन्तु पत्थर की शिला टस से मस न हुई⋯⋯ [illegible] हार गये और मूर्छित अवस्था में वह दरबार से हटाये ग[illegible]

शायद सम्राट ने पहिचाना नहीं " "दस साल हुए जब इन्हीं दिनों में साधुओं की एक मण्डली तानसेन की कठोर आज्ञा के कारण जिन्दगी की अन्तिम सीढ़ी पर से ढकेल दी गई। केवल एक बालक शेष बचा, जो अभाग्यवश सम्राट के सामने उपस्थित है।" तब तो तुम्हें अपना बदला जरूर लेना चाहिये बैजू !" सम्राट ने कहा "हाथ पर चढ़े हुए दुश्मन को छोड़ना गुनाह है।" "ऐसा न कहिये सम्राट !" बैजू ने फिर उत्तर में कहा—"शत्रु को सज़ा देने की अपेक्षा उसे क्षमा कर देने में अधिक आनन्द आता है।" "खूब, खूब ! तब तो तुम पूरे देवता मालूम होते हो !" सम्राट हँस दिये।

तानसेन भी निरोग्य होकर थोड़ी देर में पराजित शत्रु की हैसियत से वहां उपस्थित किये गये। तब बैजू ने अकबर से कहा—"सम्राट ! मैं आपसे एक भिक्षा चाहता हूँ, यदि स्वीकृत की जावे ?" "हम जरूर मन्जूर करेंगे" सम्राट बोले। कहो क्या चाहते हो ?" "बस यही" बैजू ने उत्तर दिया, "जो भीषण आज्ञा तानसेन के आदेश से जारी है, वह तुरन्त स्थगित कर दी जावे। गाना किसी की अधिकारी चीज़ नहीं है, जो चाहे गा सकता है, वह ईश्वरीय देन है। मन और आत्मा की शान्ति का एक साधन है।" "मंजूर" ! सम्राट बैजू के अन्तिम वाक्यों को सुनकर गहरे सोच में पड़ गये और बैजू दरबार छोड़कर फौरन गाते हुए निकल गये।

"पड़ी है हरि चरणन की ओट।"

× × ×

तानसेन का विरोधी दल जब तानसेन को मिटाने का हर असफल प्रयत्न कर का तो जीनखां नामक एक गायक ने एक अन्तिम विधि सोच निकाली। एक दिन अकबरीय दरबार में जब गाने की महफिल पूरे जोर से जमी थी और तानसेन लहक-लहक कर ध्रुपद की खबर ले रहे थे तो जीनखां ने सम्राट को यह इशारा दे दिया कि स समय ऋतु और वातावरण दोनों ही दीपक-राग के अनुकूल हैं, उसे तानसेन द्वारा ानना चाहिये, क्यूँ कि संसार में तानसेन से अच्छा दीपक-राग का जानकार दूसरा ोई नहीं है। बस ! फिर क्या था, सम्राट ने तानसेन को दीपक-राग गाने की आज्ञा दान की, परन्तु तानसेन ने दीपक के गाने से अस्वीकृति प्रगट करते हुए इन शब्दों ं क्षमा माँगीः—"सम्राट ! यदि इस राग को मैं गाऊँगा तो मेरे गुरू के कथनानुसार ोरा सारा शरीर राग की गरमी के कारण जल उठेगा और मेरा जीवित रहना भी असम्भव हो जायगा।" परन्तु सम्राट को जब राग का यह महत्व मालूम हुआ तो नकी आज्ञा और अनुरोध दृढ़ता में परिणित हो गए, हताश तानसेन को ाना ही पड़ा। तानसेन ने दरबार में प्रज्वलित सब दीपक और शमादान बुझवा दिये। फर तानपूरा हाथ में लेकर दीपक राग छेड़दिया। रजनी की कालोंच प्रति पल ढ़रही थी। उसमें राग की मधुर पर कठिन तानें सफेद पुताई का काम करने लगीं। ीरे धीरे राग की गरमी के कारण कालोंच पर सफेदी छागई और पलक

झपकते ही बुझे हुये समस्त दीये जल उठे। चारों ओर से वाह वाह और कमाल किया उस्ताद की आवाज़ वातावरण में गूँजने लगी। सम्राट भी तानसेन की राग सम्पादन शक्ति देखकर चकित होगए। लेकिन तुरन्त ही राग के प्रभाव से तानसेन का सारा शरीर जल गया, अङ्ग अङ्ग पर फफोले पड़ गए। वह पीड़ा के मारे चिल्लाने लगे, तब सब दरबारियों का उत्साह ठण्डा पड़ा और सम्राट ने भी गरदन झुकादी, परन्तु विरोधी दल के गायक प्रसन्न थे कि शीघ्र ही उनके रास्ते का कांटा दूर हो जाएगा।

इलाज के लिये, तानसेन के जलने पर राज्य के हजारों वैद्य हकीम बुलवाये गए, परंतु कोई लाभ न हुआ, दर्द बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की! अन्त में भारत भ्रमण कर तानसेन की चिकित्सा करवाने का निश्चय सम्राट ने कर लिया और प्रत्येक नगर में जा जा, वहां के प्रसिद्ध वैद्यों को एकत्रित किया और तानसेन को दिखाया, मगर वही ढाक के तीन पात, कोई फायदा नहीं हुआ। घूमते-घूमते जब वह लोग अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे पहुँचे तो वहां का प्राकृतिक दृश्य देखकर उन लोगों ने वहां डेरे डाल दिए और एक दिन जब बड़ी कड़ाके की धूप चारों ओर फैल रही थी, पशु गरमी के कारण अपनी जीभें निकाले पड़े थे। वृक्षों के पत्ते सूखकर उनके ठूंड शेष बचे थे और मनुष्य घर से बाहर निकलने का नाम भी नहीं ले रहे थे,"'दो रूपवती युवा स्त्रियाँ जो वेष भूषा और रंग ढङ्ग से, आपस में बहिनें प्रतीत होती थीं, सर पर गागर रखे एक विशेष अन्दाज़ से नदी से किनारे आईं और सर की गागर भूमि पर रखकर थोड़ा विश्राम लेने लगीं, फिर बुड-बुड कर गागर पानी में डुबोदी। गागर में पानी भरते ही, एक संगीत उत्पन्न हुआ, जिसने दोनों बहिनों के हृदय की सङ्गीत वीणा के तार झनझना दिए और उन्होंने सङ्गीत का मल्हार राग पर एक बाण छोड़ा, बाण लगते ही सूर्य देवता मुँह छिपा गये, और काले-काले बादल घुमड़-घुमड़ कर घिर आये, चारों तरफ अँधेरा छागया और सङ्गीत का दूसरा बाँण लगते ही, मूसलाधार पानी बरसने लगा, खुशी में लोग घरों से बाहर निकल पड़े, पशु-पक्षी बूँदों की आवाज़ पर मस्त हो नाचने लगे। कड़कती धूप से व्याकुल देश तुरन्त ही इन्द्र देवता का प्रसाद ले, यौवन की मस्ती से परिपूर्ण होगया।

तानसेन राग की इस अद्भुत लीला को देखने में व्यस्त थे और उन्हें कलाकार की आत्मा पहिचानने में अधिक देर न लगी। वह अपने ख़ैमे से बाहर आकर वर्षा के पानी में जी भर कर नहाये। पानी ने शरीर पर गिरते ही मरहम का काम किया और उनके जले फफोले फौरन अच्छे हो गये। शरीर निर्मल दूध की तरह निकल आया।

जब दोनों बहिनें गागर में पानी भरकर घर लौट रहीं थीं, तो तानसेन ने उनका रास्ता रोककर कहा, "मैं तानसेन हूं, हिन्दुस्तान-पति सम्राट अकबर का प्रसिद्ध गायक, मेरे साथ स्वयं सम्राट भी हैं और वह तुम्हारा अमृत समान मीठा गाना सुनकर बहुत प्रसन्न हुये हैं, अब उनकी इच्छा है कि तुम दोनों हमारे साथ मुगल

राजधानी आगरा चलो और वहां अपनी कला का एक बार प्रदर्शन कर लोगों को गायन विद्या का अद्भुत चमत्कार दिखलाओ, बोलो ! क्या विचार है ?" "इसका निर्णयात्मक उत्तर हम यहां परसों आकर देसकेंगी ।" उनमें से एक ने कहा—"कारण यह है कि हमारे मर्द बाहर गाँव गये हुए हैं और उनकी आज्ञा के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकतीं ।" "ठीक है" तानसेन ने उत्तर दिया—"हम परसों आगरा की ओर कूच की तैयारी करेंगे, जब तक तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी ।" तानसेन ने दोनों बहनों का रास्ता छोड़ दिया और वे इठलाती हुई अपने घर की ओर अग्रसर हुई ।

तानसेन और सम्राट प्रसन्न थे कि दो सुन्दर गायक स्त्रियाँ उनके हाथ लग गई, परन्तु विधना का हाल किसको मालूम था ? तीसरे दिन जब सफर की तैयारियाँ शाही खेमों में पूरी तौर से हो रही थीं तो दोनों बहिनों का डोला आया। डोला इस कदर सजा हुआ था जैसे किसी नव-विवाहिता दुलहिन का हो, जो प्रथमबार अपनी ससुराल जा रही हो। थोड़ी देर बाद उनके एक आदमी ने आकर सूचना दी कि दोनों बहिनें आगरा जाने को तैयार हैं। आदमी लौट गया और जब तानसेन उनका स्वागत करने के लिये डोले के निकट पहुँचे तो डोले के भीतर स्तब्धता का राज्य पाया। तानसेन ने पहिले तो दोनों बहिनों को आवाजें दीं पर जब बहुत समय तक कोई उत्तर न मिला तो उन्होंने डोली के परदे हटा दिये। परदे उठाते ही उनका नीचे का सांस नीचे और ऊपर का ऊपर रह गया। दोनों बहिनों के हृदय में पैने छुरे घुसे हुए थे, रक्त की धारा तमाम बहुमूल्य वस्त्र और आभूषणों पर फैली हुई थी, पास में ही एक खुली चिट्ठी पड़ी थी जिसे तानसेन ने उठाकर पढ़ा, उसमें लिखा था—"हमने तीन दिन तक अपने स्वामियों की प्रतीक्षा की, पर वह न लौटे, मगर आपसे हमने तीसरे दिन उत्तर देने का वचन दिया था। अतः सेवा में उपस्थित हुई हैं, किन्तु निर्जीव············हमारे हिन्दुओं की प्रथा के अनुसार यदि कोई पर-पुरुष बिना पति की आज्ञा के हमारा मुख देखले, अथवा हमसे वार्तालाप करले तो ऐसी स्थिति में हम लोग जीवन से मृत्यु को उत्तम समझते हैं, अतः हमारे लिये भी दूसरा कोई इलाज शेष नहीं था············"तोम-ताना"

तानसेन गुजरात देश की स्त्रियों की यह भावभङ्गी और अद्भुत विचार-शैली देखकर चकित रह गये। सम्राट को भी जब इस घटना का विवरण मालूम हुआ तो उन्हें बड़ा दुख पहुँचा। उन्होंने तोमताना के शोक-ग्रस्त पतियों की मासिक सहायता नियुक्त कर दी, किन्तु प्रभावित तानसेन ने स्मृतिरूप तराना नामक एक गाने की उत्पत्ति की। जिसमें दोनों बहिनों का नाम तोम-ताना प्रथम आता है। तोम-ताना वाले तराने को आज भी प्रत्येक गायक गाना आरम्भ करने से पूर्व गाते हैं और इस भाँति भूली हुई इस घटना की स्मृति ताज़ा कर देते हैं।

× × ×

प्रसिद्ध कवि सूरदास और तानसेन में बड़ी घनिष्ट मित्रता थी। अकबर के सन्मुख तानसेन अधिकतर सूरदास के बनाये हुए पद ही गाया करते थे। तानसेन ने

से विदा हो गया। जब वह टूटा हृदय लेकर मुगल प्रसाद के बाहर आया तो उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़कर आकाश की ओर जा चुकी थी।

× × × ×

सम्राट अकबर के दरबार में ठाकुर मिश्रीसिंह का बड़ा ऊँचा स्थान था। वह बीनकार के नाम से प्रसिद्ध थे और बीन बजाने में उनका सामना विरला ही कोई कर सकता था, कहते हैं कि जो जादू तानसेन अपने गाने द्वारा श्रोताओं पर डाल सकते थे, वही असर मिश्रीसिंह की बीन में था। एक दिन जब सम्राट बड़ी प्रसन्न अवस्था में बैठे थे, तो उन्होंने मिश्रीसिंह की बीन और तानसेन के गाने की प्रतियोगिता करादी। तानसेन ने गाते-गाते एक तान इतनी ऊँची खींची कि मिश्रीसिंह उनका साथ न दे सके और बीन के सात तार हिम्मत हार गये। तानसेन ने इस मौके को सर्वोत्तम अवसर समझकर आवाज़ लगाई, 'वह मारा'। मिश्रीसिंह ठाकुर थे, वह गाने वाले के मुख से ऐसे अपमानजनक शब्द बरदाश्त नहीं कर सके, अतः उन्होंने तुरन्त खाँड़ा उठाकर तानसेन पर वार किया। तानसेन कई जगह से खाँड़ा लगने के कारण घायल होगए, सम्राट को यह घटना देखकर बड़ा क्रोध आया और उन्होंने मिश्रीसिंह का बध किए जाने की आज्ञा देदी। प्रधान मन्त्री अबुल फज़ल मिश्रीसिंह की क़दर-कीमत और सम्राट के मिजाज़ की अस्थिरता से भली भाँति परिचित थे। उन्होंने बजाय बध की आज्ञा पालन करने के मिश्रीसिंह को एक तहखाने में छुपा दिया बात गई आई होगई।

कुछ समय पश्चात् एक अवसर पर सम्राट को फिर मिश्रीसिंह की याद आई और वह रोने लगे। अबुल फज़ल ने तुरन्त हाथ जोड़कर निवेदन किया कि यदि सम्राट की मरज़ी मिश्रीसिंह को देखने की हो तो उन्हें फिर उपस्थित किया जा सकता है। सम्राट यह वाक्य सुनकर चौंके और बोले, क्या अबुल फज़ल तुम में मुरदा को ज़िन्दा करने की शक्ति है? प्रधान मन्त्री ने मिश्रीसिंह को बचाने की सारी घटना कह सुनाई। सम्राट बहुत प्रसन्न हुए और मिश्रीसिंह को पेश किए जाने की आज्ञा दी। मिश्रीसिंह दरबार में पेश हुए और सम्राट ने उन्हें फिर बहाल कर दिया।

एक दिन फिर पहिला जैसा प्रसन्नता का अवसर आने पर सम्राट ने तानसेन और मिश्रीसिंह का मुकाबिला करवाया, मिश्रीसिंह अब की बार पूरी तौर से तैयार थे। उन्होंने बीन में सात तार के बजाय बारह तार लगा दिए। तानसेन ने जब पूर्व समान झटका देकर, लम्बी तान खींची तो मिश्रीसिंह की बीन तानसेन की आवाज़ से भी ज्यादा मिठास दे गई। चारों ओर से वाह वाह के नारे बुलन्द हो उठे।

सम्राट ने इस घटना के स्मृति स्वरूप से मिश्रीसिंह और तानसेन की सन्तान को विवाह की जञ्जीरों में बँधवा दिया।

× × × ×

एक बार सूरदास की प्रशंसा में निम्नलिखित पद गाया, जो स्वयं सम्राट को भी बहुत पसन्द आया।

किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर।
किधौं सूर को पद गयो, तन मन धुनत शरीर॥

जब सूरदास को उपरोक्त पद का ज्ञान हुआ, तब उन्होंने भी तानसेन की तारीफ में निम्नलिखित एक पद गढ़ डाला और तम्बूरे पर गाते हुए तानसेन के द्वारे पर से आ निकले।

विधना अस जिय जान के, शेषहि दिये न कान।
धरा मेरु सुन डोलती, तानसेन की तान॥

तानसेन मुस्कराते हुए घर से बाहर आये और बोले—"दादा क्या भूमि पर हमें रहने भी दोगे?" सूरदास ने केवल इतना ही उत्तर दिया—"तानसेन तुम्हारे को सुनकर मैं अपने आपको भूल जाता हूँ।"

× × ×

एक मज़ेदार कथा तानसेन के विषय में यह भी सुनी जाती है कि जब उनके गाने की प्रशंसा अजमेर निवासी एक व्यक्ति के कानों तक पहुँची तो उसके हृदय में तानसेन से मुकाबला करने की इच्छा प्रबल हो उठी। वह व्यक्ति बहुत सुन्दर गाता था और उसका गुरू एक बहुत पहुँचा हुआ फकीर था। अपने गुरू के सामने एक दिन उसने हाथ जोड़कर तानसेन से मुकाबला करने के लिये शक्ति प्रदान किये जाने की प्रार्थना की। गुरू अन्तर्यामी था, उसने अपने शिष्य को आदेश दिया कि तू ऐसी गन्दी इच्छा अपने हृदय से निकाल दे, तानसेन का मुकाबला तू किसी तरह नहीं कर सकेगा, यदि तू सम्राट अकबर के दरबार में कुछ इनाम-इकराम पाना चाहे तो मैं तुझे आशीष दे सकता हूँ, तू सफल होगा। अपने गुरू से छल रखकर उसने यही वरदान मिलने का विचार प्रगट किया। गुरू ने तथास्तु कहा और वह व्यक्ति आगरे के लिये चल पड़ा। किसी प्रकार एक दिन जलसे में सम्राट ने उसका गाना सुनना भी स्वीकार कर लिया। जलसे में तानसेन भी उपस्थित थे, उस व्यक्ति ने गाना गाया और इतना सुन्दर गाया कि एक बार तानसेन के मुँह से भी वाह-वाह निकल पड़ा!

सम्राट ने भी उसे बहुत इनाम-इकराम देने की घोषणा की, मगर उस व्यक्ति के मनमें तो पाप छुपा था, उसने बजाय इनाम के सम्राट से तानसेन का गाना सुनने की इच्छा प्रगट की। तानसेन समझ गये और उन्होंने हिण्डोल राग की एक ऐसी मधुर धुन गुनगुनाई, जिसके प्रभाव से दरबार में मोतियों की झालर के लटकने वाले समस्त फ़ानूस मस्ती में आकर झूलने लगे। तानसेन ने तभी गाना बन्द करते हुए कहा—"गायक! तेरे मनमें तेरे गुरू के मना करने पर भी मुझसे टक्कर लेने का जो पाप छुपा हुआ है, उसका जवाब इन झूमती झालरों को बन्द करके दे!" अपना पाप ताड़े जाने पर फिर उस गायक की हिम्मत गाकर उत्तर देने की न पड़ी और वह वहां

से विदा हो गया। जब वह टूटा हृदय लेकर मुगल प्रसाद के बाहर आया तो उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़कर आकाश की ओर जा चुकी थी।

× × × ×

सम्राट अकबर के दरबार में ठाकुर मिश्रीसिंह का बड़ा ऊँचा स्थान था। वह बीनकार के नाम से प्रसिद्ध थे और बीन बजाने में उनका सामना विरला ही कोई कर सकता था, कहते हैं कि जो जादू तानसेन अपने गाने द्वारा श्रोताओं पर डाल सकते थे, वही असर मिश्रीसिंह की बीन में था। एक दिन जब सम्राट बड़ी प्रसन्न अवस्था में बैठे थे, तो उन्होंने मिश्रीसिंह की बीन और तानसेन के गाने की प्रतियोगिता करादी। तानसेन ने गाते-गाते एक तान इतनी ऊँची खींची कि मिश्रीसिंह उनका साथ न दे सके और बीन के सात तार हिम्मत हार गये। तानसेन ने इस मौके को सर्वोत्तम अवसर समझकर आवाज़ लगाई, 'वह मारा'। मिश्रीसिंह ठाकुर थे, वह गाने वाले के मुख से ऐसे अपमानजनक शब्द बरदाश्त नहीं कर सके, अतः उन्होंने तुरन्त खाँड़ा उठाकर तानसेन पर वार किया। तानसेन कई जगह से खाँड़ा लगने के कारण घायल होगए, सम्राट को यह घटना देखकर बड़ा क्रोध आया और उन्होंने मिश्रीसिंह का वध किए जाने की आज्ञा देदी। प्रधान मन्त्री अबुल फज़ल मिश्रीसिंह की क़दर-कीमत और सम्राट के मिजाज़ की अस्थिरता से भली भाँति परिचित थे। उन्होंने बजाय वध की आज्ञा पालन करने के मिश्रीसिंह को एक तहखाने में छुपा दिया बात गई आई होगई।

कुछ समय पश्चात् एक अवसर पर सम्राट को फिर मिश्रीसिंह की याद आई और वह रोने लगे। अबुल फज़ल ने तुरन्त हाथ जोड़कर निवेदन किया कि यदि सम्राट की मरज़ी मिश्रीसिंह को देखने की हो तो उन्हें फिर उपस्थित किया जा सकता है। सम्राट यह वाक्य सुनकर चौंके और बोले, क्या अबुल फज़ल तुम में मुरदा को ज़िन्दा करने की शक्ति है? प्रधान मन्त्री ने मिश्रीसिंह को बचाने की सारी घटना कह सुनाई। सम्राट बहुत प्रसन्न हुए और मिश्रीसिंह को पेश किए जाने की आज्ञा दी। मिश्रीसिंह दरबार में पेश हुए और सम्राट ने उन्हें फिर बहाल कर दिया।

एक दिन फिर पहिला जैसा प्रसन्नता का अवसर आने पर सम्राट ने तानसेन और मिश्रीसिंह का मुकाबिला करवाया, मिश्रीसिंह अब की बार पूरी तौर से तैयार थे। उन्होंने बीन में सात तार के बजाय बारह तार लगा दिए। तानसेन ने जब पूर्व समान झटका देकर, लम्बी तान खींची तो मिश्रीसिंह की बीन तानसेन की आवाज़ से भी ज्यादा मिठास दे गई। चारों ओर से वाह वाह के नारे बुलन्द हो उठे।

सम्राट ने इस घटना के स्मृति स्वरूप से मिश्रीसिंह और तानसेन की सन्तान को विवाह की जञ्जीरों में बँधवा दिया।

× × × ×

तानसेन की मृत्यु के विषय में भी एक बड़ी मनोरञ्जक दन्त-कथा प्रचलित है, तानसेन की जब मृत्यु हुई तो उनके चार लड़के थे। विलायत खां, विलासखां, तारनतरङ्गखां और चौथे सूरतसेन। विलायतखां पागल थे और उन्होंने जगत से नाता तोड़कर वैराग्य धारण कर लिया था। कभी-कभी जब वह नगर में आते तो लोग उन्हें "वली" (सन्यासी) कहकर पुकारते। विलासखां गाने में बड़े प्रसिद्ध हुए हैं और उनकी बनाई हुई विलासखानी टोड़ी आज तक गाई जाती है।

तानसेन ने मिरज़ा नामक एक शिष्य भी किया था जो हर समय उनकी सेवा में रहा करता था। जिस समय तानसेन की आत्मा उनका नश्वर शरीर छोड़कर परमात्मा में जा मिली तो प्रश्न यह उठ खड़ा हुआ कि उस्ताद की पगड़ी अब किसके सर पर बाँधी जावे और जब तक पगड़ी किसी के सर पर न बँध जावे, लाश का उठाना असम्भव था। तानसेन जैसे अतुल्य गायक का रिक्त स्थान ग्रहण करना मज़ाक नहीं था, अतएव इतना भारी जिम्मा लेने की कोई भी स्वीकृति नहीं देता था। इसी समस्या में लाश को पड़े-पड़े कई घण्टे व्यतीत हो गये, परन्तु पगड़ी किसी के सर की शोभा न बढ़ा सकी। जब सन्ध्या हो गई और कोई निर्णय न हो पाया तो अकस्मात विलायत खां घूमते-फिरते जङ्गल से आ निकले और अपने पिता की अकाल मृत्यु का शोक समाचार सुनकर बालकों की तरह रोने लगे। लोगों ने प्रस्तुत उलझन उनके सामने रखदी, वह तुरन्त पगड़ी का भार अपने सर पर उठाने को तैयार होगए और बोले, "उस्ताद की पगड़ी हमारे सर पर बाँधो, हम तानसेन के जां-नशीन बनेंगे"। पर सब ने विचार किया कि ऐसे पागल मनुष्य की बात का क्या मानना, वह कितने दिन तक उस्ताद की कर्म को पूरा कर सकता है। एकचित लोगों में से तभी एक ने टालने के हेतु से कहा— "विलायतखाँ हम लोग तुम्हारे सर पर पगड़ी बांधने को तैयार हैं, यदि तुम अपने गाने की शक्ति से, मृत उस्ताद की स्वीकृति दिलवादो। विलायतखाँ इस शर्त पर फौरन राजी होगये और उस्ताद का तानपूरा उठाकर प्रथम तो उन्होंने अपने मस्तक पर लगाया और फिर एक राग छेड़ दिया। पागल गायक के मुख से निकला हुआ राग वातावरण में गूँज उठा। सारी प्रकृति के मुख से वाह वाह निकलने लगी उपस्थित जनों के सर मस्ती में झूमने लगे और सबसे आश्चर्यजनक घटना यह हुई मृत तानसेन का सीधा हाथ कफन फाड़कर प्रशंसा में फड़क उठा। पगड़ी विलायतखाँ के सर पर बाँधदी गई और तानसेन की लाश उठाई गई, जो बड़ी धूम धाम के साथ, उनके आदेशानुसार उनके गुरू मोहम्मद गौस साहब की गवालियर में स्थित-कब्र के निकट गाड़ दी गई, जहाँ तानसेन आज भी उसी छत्री की छाया में सुख की नींद सो रहे हैं।

कलात्मक स्वप्न

(फ़िल्मी ड्रामा)

तानसेन

प्यारे तुही ब्रह्म, तुही विष्णु · · ·· !

"एक कलात्मक स्वप्न"

(Film Story of "Tansen")

दृश्य १

बेहट ग्राम में स्थित शिवजी का मन्दिर। मन्दिर में प्राचीन काल की कारीगरी के कुछ चिन्ह शेष हैं। मध्य में कुछ स्तभों पर देवी देवताओं के विचित्र चित्र बने हैं। शिव की प्रधान मूर्ति के सन्मुख रागिनी आरती उतार रही है और तानसेन प्रार्थना गा रहे हैं।

प्यारे तुही ब्रह्म, तुही विष्णु, तुही महेश।
तुही आदि, तुही अनादि, तुही अनाथ, तुही गणेश॥
जल स्थल मरुत व्योम, तुही अकार तुही सोम।
तुही ॐकार तुही मकार, निरङ्कार, तुही धनेश॥
तुही वेद तुही पुराण, तुही कृष्ण तुही राम।
तुही ध्यान तुही ज्ञान, तुही ईश त्रिभुवनेश॥
तानसेन कहत बैन, तुही दिवस तुही रैन।
तुही दर तुही घर, तुही वरुण तुही दिनेश॥
प्यारे तुही ब्रह्म····································॥

कुछ ग्रामीण पीछे खड़े करताल बजा रहे हैं, तो कुछ घन्टों की धुन में ज़मीन आसमान एक कर रहे हैं। प्रात.काल का सुहावना समय है, चारों ओर शान्ति का साम्राज्य छाया हुआ है।

गायन और आरती समाप्त होते ही, ग्रामीण एक-एक करके विदा हो जाते हैं, तब "रागिनी" ढाक के पत्तों से ढका हुआ गुलाब का एक सुन्दर हार चुपके से निकालती है, किसी प्रकार तानसेन की दृष्टि उस पर पड़ जाती है।

तानसेन—अरे पुजारिन ! आज तुमने हार देवता पर नहीं चढ़ाया ?
रागिनी—(शिवलिङ्ग की ओर इशारा करते हुये और मुस्कराते हुये) वह देखो !
तानसेन—(पहिले उधर देखता है और फिर···) हूं, मगर यह हार अब किसके गले मँढ़ा जायगा ?
रागिनी—(कुछ शरारत से) देवता के गले·········।
तानसेन—पर देवता पर तो तुम हार चढ़ा चुकीं।
रागिनी—अभी एक देवता और बाक़ी है।
तानसेन—(विस्मित सा) वह भाग्यशाली कौन है, पुजारिन ?

रागिनी—(शीघ्रता से हाथ बढ़ाकर तानसेन के गले में हार डालते हुये) यह है वह, मन मन्दिर का देवता।

शिव की मूर्ति के पास जो बड़ा दीपक जल रहा है, उसकी ज्योति सहसा तीव्र हो उठती है और मन्दिर की दीवालें मुस्करा देती हैं।

रागिनी—(दीपक की ज्योति की ओर देखकर) देवता! याद है वह प्रलयकारी दृश्य? जब आँधी और तूफ़ान ने सारे गाँव पर तबाही की चादर तान दी थी। यदि उस समय तुम अपनी सङ्गीत शक्ति से देवताओं के बुझे हुए इस चिराग़ को पुनर्जीवन न देते, तो कदाचित आज हम और तुम बात करते भी नज़र न आते!

तानसेन—पुजारिन! इसमें मेरा श्रेय क्या था? यह सब देवताओं का चमत्कार था। तुम्हारे पिता प्रियदास की अकस्मात् मृत्यु......मृत्यु से पूर्व उनका प्रति सोमवार दिया जलाने का आदेश देना, तुम्हारा उसी दिन दिये में तेल डालने जाना, तेल न होने से दिये का बुझ जाना और साथ-साथ उधर तुम्हारे पिता के जीवन दीप का भी अन्त होना...... ......!

रागिनी—(कुछ घबराकर) वह समय याद न दिलाओ देवता! स्मरण मात्र से ही शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मरने से पहिले मेरे पिता ने कहा था:—"बेटी यह देवताओं का दिया है, प्रति सोमवार इसमें तेल डालते रहना। यदि किसी दिन नागा हुई और दिया बुझ गया तो देवता रुष्ट हो जाँयगे, और देवता रुष्ट हो गए तो गांव पर प्रलय छा जायगी। लोग त्राहि-त्राहि पुकार उठेंगे।"

तानसेन—और इसके बाद वह, सब कुछ हुआ पुजारिन! जो मैंने भी कभी जीवन में नहीं देखा था। हवा और पानी द्वारा देवताओं का कोप, पशु और पक्षियों का मरना, मकानों का खिलौनों की तरह टूटना, खेतों में फसलों की बरबादी........यदि गाँव का जमींदार माधो, दिये के महत्व का भेद मुझे न बताता और अपने साथ यहां न लाता तो परमात्मा जाने सृष्टि की क्या दशा होती।

रागिनी—बिजली की चमक और बादल की गड़गड़ाहट से तो मेरा अन्तर तक काँप उठा था!

मन्दिर की खिड़की से सूरज की किरणें दिन के चढ़ने का संदेश लेकर रागिनी और तानसेन पर पड़ती हैं, वह चौंक जाते हैं और तभी बाहर कोयल की मधुर कूक सुनाई पड़ती है।

तानसेन—ओह! छोड़ो पुजारिन इन बातों को...अब बिजली की चमक और बादल की गड़गड़ाहट कहां है? बाहर तो धूप खिली है, चलो पोखर में स्नान कर आयें।

रागिनी—हां-हां, चलो न देवता! मैं भी पुरानी स्मृतियों में कहां से कहां उलझ गई।

पट-परिवर्तन !

(दोनों मन्दिर के बाहर आते हैं और टहलते हुए पोखर की ओर जाते हैं)

रागिनी—आज समय बड़ा सुहावना है, देवता ! सारी प्रकृति मस्ती में भीगी हुई प्रतीत होती है। वृक्षों की लतायें पवन के झकोरों में झूम-झूम कर प्रेम का नया सन्देश दे रही हैं। पक्षी भी गले मिल हृदय का सुहाना सङ्गीत सुना रहे हैं। बादल के टुकड़े किसी का प्रीति-पत्र लिये बड़ी व्यग्रता से उड़े जा रहे हैं……!

तानसेन—ओहो, पुजारिन ! आज तो तुम कवि बनने का नाटक कर रही हो, पर यह भाव कहां से चुरा लिये ?

रागिनी—चुरा लिये देवता ? भाव कहीं चुराये जाते हैं। वह हृदय की अठखेलियों के साथ स्वयं उत्पन्न होते हैं, जब दो पत्थर आपस में रगड़ खाते हैं तो अग्नि पैदा होती है। जब दो नदियाँ एक साथ मिलती हैं तो पानी का बहाव फैल जाता है। ठीक इसी प्रकार जब दो प्रेमी एक दूसरे के संसर्ग में आते हैं तो भावों की बाढ़ उमड़ पड़ती है।

तानसेन—(व्यङ्ग से) तो आज हमारी कवि-पात्री पुजारिन बड़ी उमङ्गों पर है, पर यह नहीं मालूम किस प्रेमी के संसर्ग में आई है।

रागिनी—यह भी बताने की आवश्यकता है ?

तानसेन—क्यूँ नहीं, चोर जब खुद चोरी स्वीकार कर लेता है तो न्यायाधीश को सज़ा देने में विशेष सुगमता होती है।

रागिनी—(*भावुक बनकर*) *तो सुनो ! हमारा प्रेमी, हमारा चितचोर, जिसने हमारे* हृदय की बस्ती पर अचानक धावा मारा और हमारी रात की निद्रा और दिन का चैन लूट लिया ! वह हमारे आस-पास ही कहीं है, उसे ढूँढ़ निकालो।

तानसेन—(पोखर में मछलियों के कूदने की आवाज़ से इशारा करके) वह देखो पुजारिन ! पोखर के पानी में तुम्हारा प्रेमी जा छुपा है।

रागिनी—(खोजने के अन्दाज़ से) कहां है, देवता ?

(तानसेन दौड़ते हुए जाते हैं और पानी में कूद पड़ते हैं। रागिनी भागती हुई किनारे तक पीछे-पीछे जाती है)

तानसेन—यह देखो पुजारिन……यहाँ है तुम्हारा मन मन्दिर का देवता !

(तैरते हुए तानसेन गाते हैं)

हम तो रे प्रेमी—पानी की मछरी,
उरझत प्रीति जतायें रे सुन प्रेम पुजारिन…।

(रागिनी पोखर के किनारे एक छायादार पेड़ के नीचे बैठ जाती है और गाने में तानसेन का साथ देती है)

रागिनी—(शीघ्रता से हाथ बढ़ाकर तानसेन के गले में हार डालते हुये) यह है वह, मन मन्दिर का देवता।

शिव की मूर्ति के पास जो बड़ा दीपक जल रहा है, उसकी ज्योति सहसा तीव्र हो उठती है और मन्दिर की दीवालें मुस्करा देती हैं।

रागिनी—(दीपक की ज्योति की ओर देखकर) देवता! याद है वह प्रलयकारी दृश्य? जब आँधी और तूफान ने सारे गाँव पर तबाही की चादर तान दी थी। यदि उस समय तुम अपनी सङ्गीत शक्ति से देवताओं के बुझे हुए इस चिराग को पुनर्जीवन न देते, तो कदाचित आज हम और तुम बात करते भी नजर न आते!

तानसेन—पुजारिन! इसमें मेरा श्रेय क्या था? यह सब देवताओं का चमत्कार था। तुम्हारे पिता शिवदास की अकस्मात् मृत्यु मृत्यु से पूर्व उनका प्रति सोमवार दिया जलाने का आदेश देना, तुम्हारा उसी दिन दिये में तेल डालने जाना, तेल न होने से दिये का बुझ जाना और साथ-साथ उधर तुम्हारे पिता के जीवन दीप का भी अन्त होना !

रागिनी—(कुछ घबराकर) वह समय याद न दिलाओ देवता! स्मरण मात्र से ही शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मरने से पहिले मेरे पिता ने कहा था.— "बेटी यह देवताओं का दिया है, प्रति सोमवार इसमें तेल डालते रहना। यदि किसी दिन नागा हुई और दिया बुझ गया तो देवता रुष्ट हो जॉयगे, और देवता रुष्ट हो गए तो गांव पर प्रलय छा जायगी। लोग त्राहि-त्राहि पुकार उठेंगे।"

तानसेन—और इसके बाद वह, सब कुछ हुआ पुजारिन! जो मैंने भी कभी जीवन में नहीं देखा था। हवा और पानी द्वारा देवताओं का कोप, पशु और पक्षियों का मरना, मकानों का खिलौनों की तरह टूटना, खेतों में फसलों की बरबादी यदि गॉव का जमींदार माधो, दिये के महत्व का भेद मुझे न बताता और अपने साथ यहा न लाता तो परमात्मा जाने सृष्टि की क्या दशा होती।

रागिनी—बिजली की चमक और बादल की गड़गड़ाहट से तो मेरा अन्तर तक काँप उठा था!

मन्दिर की खिड़की से सूरज की किरणें दिन के चढ़ने का संदेश लेकर रागिनी और तानसेन पर पड़ती हैं, वह चौंक जाते हैं और तभी बाहर कोयल की मधुर कूक सुनाई पड़ती है।

तानसेन—ओह! छोड़ो पुजारिन इन बातों को अब बिजली की चमक और बादल की गड़गड़ाहट कहां है? बाहर तो धूप खिली है, चलो पोखर में स्नान कर आयें।

रागिनी—हां-हां, चलो न देवता! मैं भी पुरानी स्मृतियों में कहां से कहां उलझ गई।

पट-परिवर्तन !

(दोनों मन्दिर के बाहर आते हैं और टहलते हुए पोखर की ओर जाते हैं)

रागिनी—आज समय बड़ा सुहावना है, देवता ! सारी प्रकृति मस्ती में भीगी हुई प्रतीत होती है। वृक्षों की लतायें पवन के झकोरों में झूम-झूम कर प्रेम का नया सन्देश दे रही हैं। पक्षी भी गले मिल हृदय का सुहाना सङ्गीत सुना रहे हैं। बादल के टुकड़े किसी का प्रीति-पत्र लिये बड़ी व्यग्रता से उड़े जा रहे हैं......!

तानसेन—ओहो, पुजारिन ! आज तो तुम कवि बनने का नाटक कर रही हो, पर यह भाव कहां से चुरा लिये ?

रागिनी—चुरा लिये देवता ? भाव कहीं चुराये जाते हैं। वह हृदय की अठखेलियों के साथ स्वयं उत्पन्न होते हैं, जब दो पत्थर आपस में रगड़ खाते हैं तो अग्नि पैदा होती है। जब दो नदियाँ एक साथ मिलती हैं तो पानी का बहाव फैल जाता है। ठीक इसी प्रकार जब दो प्रेमी एक दूसरे के संसर्ग में आते हैं तो भावों की बाढ़ उमड़ पड़ती है।

तानसेन—(व्यङ्ग से) तो आज हमारी कवि-पात्री पुजारिन बड़ी उमङ्गों पर है, पर यह नहीं मालूम किस प्रेमी के संसर्ग में आई है।

रागिनी—यह भी बताने की आवश्यकता है ?

तानसेन—क्यूँ नहीं, चोर जब खुद चोरी स्वीकार कर लेता है तो न्यायाधीश को सज़ा देने में विशेष सुगमता होती है।

रागिनी—(भावुक बनकर) तो सुनो ! हमारा प्रेमी, हमारा चितचोर, जिसने हमारे हृदय की बस्ती पर अचानक धावा मारा और हमारी रात की निद्रा और दिन का चैन लूट लिया ! वह हमारे आस-पास ही कहीं है, उसे ढूँढ़ निकालो।

तानसेन—(पोखर में मछलियों के कूदने की आवाज़ से इशारा करके) वह देखो पुजारिन ! पोखर के पानी में तुम्हारा प्रेमी जा छुपा है।

रागिनी—(खोजने के अन्दाज़ से) कहां है, देवता ?

(तानसेन दौड़ते हुए जाते हैं और पानी में कूद पड़ते हैं। रागिनी भागती हुई किनारे तक पीछे-पीछे जाती है)

तानसेन—यह देखो पुजारिन......यहाँ है तुम्हारा *मन मन्दिर का देवता !*

(तैरते हुए तानसेन गाते हैं)

हम तो रे प्रेमी—पानी की मछरी,
उरझत प्रीति जतायें रे सुन प्रेम पुजारिन...।

(रागिनी पोखर के किनारे एक छायादार पेड़ के नीचे बैठ जाती है और गाने में तानसेन का साथ देती है)

रागिनी—

हम तो रे प्रेमी—पोखर की पौड़ी,
निश-दिन लेत हिलोर रे, सुन प्रेम पुजारी · ॥

पास ही में पपीहा बोल उठता है। 'पी कहां, पी कहां' तानसेन तैरते हुए रागिनी के पास आ जाते हैं और कहते हैं, 'पी यहां, पी यहां।' इतने में ही एक गिल्हेरी रागिनी के पाँव पर से होकर निक्ल जाती है, वह चौंक कर पोखर में गिर पड़ती है। पपीहा फिर बोल उठता है। 'पी कहां, पी कहां' तानसेन रागिनी को सम्हालते हुए और हँसते हुए कहते हैं। 'तान यहां, रागिनी यहां।' 'पी यहां, प्राण यहां' और दोनों ठहाका मारकर हँस देते हैं। पास ही में गाता हुआ एक ग्वाला निकल जाता है।

उरझत प्रीति सिखायँ रे सुन प्रेम पुजारी···॥

दृश्य-१

जमींदार माधो के घर के आगे की चौपाल

ग्राम की अन्य झोंपड़ियों की अपेक्षा माधो का घर मजबूत और सुन्दर बना है, पर चौपाल कच्ची है। उपर फूँस का छप्पर है, नीचे चबूतरे पर एक मैली और कई स्थान पर फटी हुई चादर बिछी है जिस पर माधो और बराबर में मुगल तहसीलदार "फजल-शेख" बैठे हैं। फर्शी सामने रखी है, कभी कभी फजल शेख कश खींच लेते हैं। माधो से थोड़ा हटकर वसूली के कागजात में इन्द्राज करने वाला मुन्शी बैठा है, जो बीच-बीच में खाँसीकी एक विशेष आवाज निकाल देता है। चौपाल के नीचे ग्राम के समस्त काश्तकारान कुछ बैठे, कुछ खड़े हैं।

शेखफ़ज़ल—क्यूँ गङ्गादीन! तुमने अब की फसल पर भी पूरी भरपाई नहीं की?

गङ्गादीन—(उपस्थित किसानों में जो सबसे आगे बैठा है, हाथ जोड़ते हुए) नहीं सरकार! पिछला बकाया मुझ पर कुछ नहीं, केवल रबी की फसल का चुकता लगान नहीं दे सका।

माधो— हां, तहसीलदार साहब! अब की गङ्गादीन की घर वाली बहुत बीमार रही, इसी से यह पूरे दाम जमा न कर सका। वैसे आदमी तो बड़े कांटे का है, सरकारी पाई भी नहीं रखता।

शेख०— अच्छा जमींदार! तुम्हारी सिफ़ारिश पर अब की बार माफी देता हूँ...... (कश खींचते हुए) और हां कल्लू तुम कहो, तुम्हारा क्या हाल है?

कल्लू— माई बाप! अब की और रहम किया जावे, मेरा लड़का नत्थू आज एक महीने से ताप में मर रहा है, वैद बुलाते-बुलाते नाक में दम हो गया है। अच्छा होते ही पाई-पाई की रकम भर दूंगा।

शेख०— और मक्खन! तुम्हें क्या कहना है?

मक्खन—हजूर! सच मानो हाथी पाँव का रोग जब से मुझे लगा है, इलाज के मारे एक पैसा भी नहीं बचता जो सरकारी लगान दे सकूँ......।

शेखफ़ज़ल-(बेचैनी दिखाते हुये) चांद, तुम्हारी शायद मां बीमार होगी......?

चांद— सरकार को कैसे मालूम हुआ? बड़ी जल्दी पते पर पहुँच गये हुजूर...!

शेख०— और नीमा, शामू, केसर...तुम्हारे मालूम होता है, बैल मर गये हैं (उत्तेजित होकर उठ खड़ा होता है, माधो भी कुछ घबरा सा जाता है) कल्लन, बेदा किशन तुमारी शायद बीवियां बीमार हैं......तुम्हारी चाची तुम्हारी नानी......(गुस्से मे मुट्ठियाँ भींच लेता है) यही वजह है कि मौजे में इसाल बकाया की फर्द बड़ी लम्बी चौड़ी है (होंठ चबाते हुये) माधो...यही तुम्हारी जमींदारी का इन्तजाम है? गाँव का गाँव बीमार है न सरकारी लगान, न वसूली बकाया, यह सब माजरा आखिर क्या है? (माधो की तरफ जो पीछे-पीछे घूम रहा है, एकदम पलटते हुये) याद रखना! अगर अब की चक्कर में मुझे कहीं ऐसा नाकाम वापिस जाना पड़ा तो जमींदारी की पगड़ी किसी दूसरे के सर बाँधनी पड़ेगी...समझे...?

माधो— सरकार ऐसा गुस्सा क्यूं ? बीमारी हारी किसी के वस की तो नहीं……!

शेखफ़ज़ल-मैं कुछ नहीं सुनना चाहता……(काश्तकारों की ओर देखते हुए) तुम लोग सब चले जाओ, मेरी निगाहों से दूर हो जाओ! वरना तुम्हारी बीमारी मुझे पागल बना देगी………!

ग्रामीण भय के मारे धीरे-धीरे एक एक करके खिसक देते हैं और मैदान खाली होजाता है शेख फजल बराबर कुछ खोया हुआ सा टहल रहा है। माधो अब दीवार के सहारे लग कर खड़ा होगया।

माधो— सरकार कुछ……पानी लाऊँ ?

शेखफ़ज़ल-(लापरवाही से) नहीं !

माधो— गन्ने का रस ?

शेखफ़ज़ल-(कुछ क्रोध में) नहीं !

माधो— और कुछ दही, मठा, ठण्डा……।

शेखफ़ज़ल-चुप रहो जी………मुझे ठण्डे की ज़रूरत नहीं, मेरे दिमाग़ को सुकून चाहिये, दिल को कुछ तसल्ली देने वाली चीज़……!

इतने में ही निकट स्थित मन्दिर से गाने की आवाज़ सुनाई देती है। जो वातावरण को चीरती हुई शेखफ़ज़ल के कानों में प्रवेश करती है। शेखफ़ज़ल आवाज़ सुनकर गुस्सा भूल जाता है और एक प्रकार की मस्ती मे धीरे-धीरे डूबने लगता है। गाने की आवाज़ शनैः शनैः तीव्र होती जाती है। प्रथम तो एक पुरुष और फिर एक स्त्री की स्वर लहरी सुनाई पड़ती है:—

सुख का तराना हमारी उमरिया !

चांदी की गोरी किरणें जब, चाँद लुटाने आता है।
सब से पहले टूटे घर में, अपनी जोत जलाता है॥
दो दिन की दुनियां में जीकर, मौजें मनाना हमारी उमरिया।
सुख का तराना हमारी उमरिया, उठती जवानी हमारी उमरिया॥
प्यार भरे मद माते नैंना, कुछ सन्देश सुनाते हैं।
जीवन के सुपने मन में, मीठी सी आग लगाते हैं॥
प्यार की चौपड़ मन के पासे, ऐसी कहानी हमारी उमरिया। सुख की…॥

("सुदर्शन")

शेखफ़ज़ल-माधो यह कौन लोग गा रहे हैं ? बड़ा मीठा गला है इनका !

माधो— हुज़ूर देवता गा रहा है, और उसके साथ………!

शेखफ़ज़ल-(बीच ही में) क्या कहा…देवता ?

माधो— जी सरकार, गांव वाले तानसेन को देवता ही कहते हैं।

शेखफ़ज़ल-पर तानसेन है कौन ?

माधो—कुछ न पूछो सरकार! तानसेन सङ्गीत का औतार है। उसका जीता जागता सरूप। मालूम होता है परमात्मा ने उसके गले में सातों सुरों का मिठास और मस्ती भर दी है। उसकी बोलचाल, उसकी सूरत, उसके बैठने उठने और उसके घूमने-फिरने सब ही से तो सङ्गीत की वर्षा होती है।

शेखफ़ज़ल-ओफ़्फ़ो! इतनी तारीफ का मुस्तहक़ है वह शख्स?

माधो— जीहां माई-बाप! वह हमारे लिये देवता है। अभी कोई महीने भर की बात है, गाँव के बड़े शिवालय का भारी दीपक बुझ गया था, वह देवताओं का दिया था। दिया बुझते ही गांव पर आफ़त आगई। आँधी-पानी के तूफान ने, क्या जानवर क्या आदमी सब ही को प्रलय का तमाशा दिखा दिया, पर तानसेन ने एक राग गा कर देवताओं के क्रोध को शांत करदिया और आज फिर यह गांव हरा-भरा नज़र आरहा है।

शेखफ़जल-तो माधो······ ······

माधो— जी सरकार!

शेखफ़जल-ऐसा गुनी-आदमी यहाँ क्यूँ बरबाद हो रहा है?

माधो— तब वह क्या करे सरकार?

निकट स्थित मन्दिर से रागिनी और तानसेन के गाने की जो आवाज़ आरही थी, वह सहसा धीमी होकर बन्द हो जाती है और एक तोते की बोली सुनाई देती है। फिर रागिनी के चीख़ने की आवाज़ आती है, जैसे उसकी अँगुली को तोते ने जोर से काट लिया हो, वह अँगुली छुड़ाकर तानसेन सेकुछ कहती है,माधो और शेखफजल अपना वार्तालाप स्थगित करके, उनकी बातें सुनते हैं।

रागिनी—बड़ा निर्दयी है तोता. हमारी अँगुली में काट खाया!

तानसेन—(हँसते हुये) तोता पुरुष है और पुरुष की जाति हो ऐसी होती है।

रागिनी—यानी काटने वाली? खिलाओ-पिलाओ प्रेम करो और फिर धोखा···क्यूँ?

तानसेन—हाँ इसमें सन्देह क्या है?

रागिनी—हँसी छोड़ो देवता!

तानसेन—मैं कब हँस रहा हूं रागिनी! सत्य बात कहने में क्या डर?

रागिनी—देवता, एक बात पूछूँ?

तानसेन—कहो!

रागिनी—तुम तो उन काटने वाले पुरुषों में नहीं हो?

तानसेन—(जोर से ठहाका मारते हुये) ओह, मेरी बात और मेरे ही सर, रागिनी! अनुभव और समय ही इसकी सब से बड़ी कसौटी है।

रागिनी—(आरती की घन्टी को सुनकर जिसकी ध्वनि चारों ओर गूंजने लगी है) देवता! चलो यह बातें फिर करेंगे, अब पूजा का समय होगया, बाबा सूरदास हमारी बाट देखते होंगे।

(दोनों की आवाजें विलीन हो जाती हैं और शेखफजल और माधो जैसे स्वप्न से जाग उठते हैं)

शेखफ़जल-माधो! यह रागिनी कौन है?

माधो— सरकार! यह शिवालय के पहिले पुजारी, शिवदास की एक मात्र बेटी है और जब से तानसेन ने उसके मन्दिर की लाज बचाई है, वह उससे प्रेम करने लगी है।

शेखफ़जल-खूब खूब···हाँ तो माधो! मैं तुमसे क्या कह रहा था···?

माधो— हजूर कब!

शेखफ़ज़ल-अरे यही······यही······अच्छा अब एक काम करो !

माधो— (माधो हाथ जोड़ते हुये) सरकार !

शेखफ़ज़ल-तानसेन से मैं भी कहूंगा और तुम भी कहना, उसे अपनी ज़िन्दगी यूं बरबाद करने से क्या मिलेगा·· यानी उसको कुछ करना चाहिये। खुदा ने उसे सूरत दी है, गाना दिया है ! वह इन दोनों चीज़ों को लेकर दुनियाँ में एक हश्र बपा कर सकता है।

माधो— मैं मतलब नहीं समझा सरकार !

शेखफ़ज़ल-अगले महीने की ५ तारीख को जहांपनाह अकबर ने अपनी साल गिरह और गुजरात की फतह की खुशी में एक बड़ा भारी जल्सा करने का फैसला किया है। लो यह देखो शाही फरमान !

शेखफ़ज़ल माधो को एक हस्त लिखित कागज़ देते हैं, जिसे माधो उलट-पलट कर देखता है, पर समझता कुछ नहीं।

शेखफ़ज़ल-इस जल्से में शहन्शाह ने हिन्दुस्तान भर के गवैयों का एक मुकाबिला कायम किया है और जो इस मुकाबिले में अव्वल आयेगा, उसको एक लाख सुनहरी मुहरें और पार्चे इनाम में मिलेंगे। इनाम पाने वाले की ज़िन्दगी बदल जायगी, वह दौलत मन्द हो जायगा ·····!

माधो— (शे० फ० की उपरोक्त बातें बड़े ध्यान पूर्वक सुनते हुए) फिर क्या होगा सरकार !

शे० फ़०—वह बादशाह का मुकर्रब खास बन सकता है, इसलिये तानसेन को अपनी क़िस्मत ज़रूर आजमाना चाहिये।

माधो— ज़रूर-ज़रूर सरकार ! फिर देवता हमें क्यूँ पूछेंगे।

शे० फ़०—यह बात नहीं···देखो तुम तानसेन को चलने के लिये राज़ी कर लेना, फिर मैं देख लूंगा (माधो के घर में से सांकल खटकने की आवाज़ आती है)

माधो— (कुछ घबराया सा चौंककर) सरकार ! शायद घरवाली बुलाती है, मालूम होता है, खाना तय्यार है, चलिए सरकार·· नहीं तो···वरना···

(दोनों का एक दूसरे के पीछे प्रस्थान)

दृश्य ३

ग्राम मन्दिर के बाहरी भाग की एक कोठरी। कोठरी में केवल एक दरवाजा और एक रोशनदान होने से कुछ-कुछ अँधेरा है। दीवारें कुछ काली सी हैं, कोठरी में बहुत सी वस्तुयें अस्त-व्यस्त सी पड़ी हैं। एक आसन पर रागिनी उदास बैठी है और उसके आगे वीणा इस प्रकार रखी हुई है, मानों उसका कोई उत्तराधिकारी न हो। तानसेन इधर-उधर पड़ा अपना सामान बटोर रहे ।

रागिनी—तो देवता तुमने जाने का निश्चय कर ही लिया ?

तानसेन—मेरा जाना ही उचित है रागिनी! सम्भव है, जाने से हमारे भाग्य का पांसा ही पलट जावे और हम भी धनवानों की भांति अपना जीवन आनन्द और ऐश्वर्य में बिता सकें।

रागिनी—पर उस दिन तो तुम कह रहे थे कि धन और ऐश्वर्य प्राप्त करना ही मनुष्य के जीवन का ध्येय नहीं, और आज जमींदार माधो की बनाई सुनेहली तीलियों में फँस गए ?

तानसेन—मनुष्य के विचार भी बहुधा घटनाओं और परिस्थितियों के अनुसार बदल जाते हैं रागिनी! आज हमें कोई बात अच्छी मालूम होती है तो कल उसी से दिल फिर जाता है।

रागिनी—मुझे तुम्हारे विचार नहीं पटते देवता! यहां का शान्ति पूर्वक जीवन, मन्दिर की पूजा और प्रेम सागर में झकोरे खाती नैया को छोड़कर आखिर तुम कैसे जा सकोगे ?

तानसेन—मुझे मेरे इरादे से मत डगमगाओ रागिनी! मैंने भी पहिले यही सोचा था कि अपना सारा जीवन यहाँ के प्राकृतिक वातावरण में गुज़ार दूं; परन्तु अब इरादा बदल दिया है। तहसीलदार और माधो भइया ने जिस प्रकार मेरी महत्ता को बढ़ाते हुए मेरे सङ्गीत की ख्याति के भविष्य का चित्र खींचा, उस से मैंने यही परिणाम निकाला कि जीवन की सजने वाली सुनहरी झांकी को छोड़कर अन्धकार में भटकते रहना बुद्धिमानी नहीं!

रागिनी—यह सब कुछ ठीक है देवता! पर सुना है राजा की राजधानी भारी नगरी है, कोई बड़ी विशाल बस्ती है। ऐसा न हो जो तुम वहां जाकर खोजाओ और अपनी रागिनी की याद खो बैठो।

तानसेन—कैसी पागलों की सी बातें करती हो रागिनी, (हँसते हुए) क्या तुम्हारा तानसेन कोई तोता है, जो खाये पीए और धोका देकर उँगली काटले।

रागिनी—इसका उत्तर तो समय और अनुभव ही दे सकेगा देवता…… (अधीर सी होकर वीणा उठालेती है और निम्नलिखित राग छेड़ती है)

खम्माच (झपताल)

परनस भई आज, परनस भई।
मोहि कल ना परत, आज परनस भई।
कहा करूँ कैसी करूँ, कित जाऊँ ऐ री,
विरहा की मारी, मरूंगी दई आज परनस भई। आज···

गाते-गाते उसकी आखो से अश्रु धारा बह निकलती है, और तानसेन की दृष्टि उस पर पड जाती है।

तानसेन—रोती हो रागिनी ? कोई शुभ काम के लिए जाए तो अशगुन नहीं करते।

रागिनी—(अपने आचल से आसू पोंछते हुए) कहाँ नहीं देवता म कहा रो रही हूँ।

तानसेन—मन के भावों को छुपाने के लिए झूठ मत बोलो रागिनी ! मैं अच्छे काम में भाग लेने जा रहा हूँ। मेरी सफलता के लिए मङ्गल कामना करो।

रागिनी—भगवान अच्छा ही करेंगे, किन्तु देवता ?

तानसेन—क्या ?

रागिनी—कब तक वापिस लौटोगे ? तुम्हारी प्रतीक्षा में मुझे एक पल एक साल के बराबर बीतेगा।

तानसेन—सङ्गीत का मुकाबला समाप्त होते ही, शीघ्र आजाऊँगा और यदि भाग्य ने साथ दिया तो वापिस आकर इसी ग्राम में एक सोने का महल बनायेंगे। जिसम तुम और हम, एक राजा और रानी, प्रेम और प्रेमी, चन्द्र और चकोर बनकर सुख से जीवन की घडिया बितादेंगे।

रागिनी—(आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता से) सच देवता ? कितना भाग्य शाली होगा वह दिन !

जिस वीणा पर रागिनी गाना गाने के पश्चात अपनी उगलिया फिरा रही थी, उसका एक तार अचानक टूट जाता है। उसको बुरा शकुन समझकर रागिनी का चेहरा उतर जाता है। तानसेन का भी माथा ठनकने लगता है।

रागिनी—देवता, यह अशुभ लक्षण कैसा इतने म ही बाहर से पखावज खटकने की आवाज सुनाई देती है और माधो का शब्द सुनाई पडता है।

माधो— तानसेन ओ भइया तानसेन जल्दी करो तहसीलदार साहब की गाडी बाहर तय्यार खडी है।

तानसेन—(दरवाजे की ओर मुँह करते हुये) अच्छा दादा ! अभी आया (फिर रागिनी को सम्बोधित करते हुए) रागिनी ! अच्छा अब जाने की आज्ञा दो।

रागिनी—कैसे कहूँ देवता ? हृदय तो किसी रुके हुए बाध की की भाति (आसू पाते हुए) कुछ नहीं देवता अच्छा जाओ !

तानसेन—(अपना सजाया हुआ सामान उठाते हुए और और दरवाजे की ओर जाते हुए) रागिनी, मैं जल्दी ही वापिस लौट आऊंगा।

रागिनी—(जैसे कुछ याद सा आगया हो) देवता ज़रा ठहरो...(फिर आले में से रखी एक पोटली खोल कर हार निकालते हुये) देवता, फूलों का यह हार तुम्हें मेरी याद दिलाता रहेगा। कहां कहां से भांति भांति के जङ्गली फूलों को बटोर कर तुम्हारे लिए मैंने यह हार तय्यार किया है।

तानसेन—पर यह तो जल्दी मुरझा जायगा रागिनी! फिर किस तरह यह तुम्हारी याद दिला सकेगा।

रागिनी—(आगे बढ़ते हुये और तानसेन के गले में हार डालकर फिर पांव छूते हुये) देवता! फूल मुरझा जायगा, पर प्रेम नहीं मुरझाता। जब तक फूल की मुरझाई हुई अन्तिम पखड़ी भी इस हार में जुड़ी मिलेगी, तुम्हें मेरा प्रेमोपहार मेरी स्मृति दिलाता रहेगा।

दरवाजा खटकने की आवाज़ फिर आती है।

आवाज—तानसेन! लो अब तो जल्दी करो, तहसीलदार साहब भी आगये।

तानसेन—आया भय्या, गङ्गादीन! अभी आया "अच्छा रागिनी जाता हूँ, प्रणाम!

रागिनी हाथ जोड़ती है और जाते हुये तानसेन की ओर बेसुध सी होकर देखती है। थोड़ी देर पश्चात जब गाड़ी के जाने की आवाज आती है तो उसका ध्यान उचट जाता है और वह दौड़कर कोठरी में लगी सांकचों की एक खिड़की के बाहर टकटकी बांध देती है।

दृश्य ४

अकबराबाद स्थिति मुगल प्रासाद के नीचे शान्ति अवस्था में बहने वाली यमुना। यमुना की रुपहेली छाती पर सहस्रों छोटी-बड़ी नौकायें, इधर-उधर घूम रही है। नौकाओं पर बड़ी सुन्दरता से सफ़ेद चांदनी, लोड़ और कालीन बिछे हुए हैं और उन पर राज्य के समस्त छोटे-बड़े कर्मचारी, सरदार और मन्सबदार इत्यादि यथा योग्य स्थान पर बैठे हैं। उपस्थित गए बहुमूल्य दरबारी वस्त्र धारण किये हुए है। बीच की दो बडी नौकाओं की शोभा अवर्णीय है, जो आपस में एक दूसरे से जुड़ी हुई मालूम होती हैं। यह नौकायें शाही खान्दान के लिए नियुक्त हैं। नौकाओं की बनावट इस प्रकार की है मानो बतख़ों का एक जोड़ा पंख फैलाये पानी मे तैर रहा हो। एक नौका पर जो सम्राट के लिए बनी है, उम्दा नक्काशी किए हुए कालीन बिछे हैं, सीधे हाथ की ओर मसनद लगी है और किनारो पर असलस और कीमख़ाब के लोड़ रखे हैं। सुनहैरी फर्शी बीच मे लगी है और कुछ तश्तरियां व पीकदाम करीने से सजे हुए है। दूसरी नौका महल की शाही बेगमात और सरदारों की स्त्रियों के लिए रिज़र्व है, यह नौका चारो ओर सुन्दर बडे-बडे रुपहेली परदो से ढकी है, जिनके आस-पास सुनहरी झब्बेदार डोरियां लटक रही है।

यमुना के किनारे पर शौक़ीन जनता की काफी भीड़ है, जो सङ्गीत की इस महान प्रतियोगिता का तमाशा देखने इकट्ठा हुई है। थोडी देर में शाहनवाज़ दारोगये इन्तज़ाम एक किश्ती में आता है और अपनी किश्ती शाही किश्ती के बराबर लगाकर उसमें उतरता है, चार-पाँच उसके अधीन कर्मचारी उसके साथ हैं।

शाहनवाज़—(उन कर्मचारियों में से एक की ओर आकर्षित होकर, जो अभी-अभी शाही किश्ती पर बिछात का इन्तज़ाम करके फ़ारिग हुए हैं) क्यों फर्राश! यही तुम्हारी देख भाल है? इसीलिये तनख़्वाह पाते हो? देखते नहीं, अभी जहांपनाह की सवारी आती होगी, और यह देखो! यह कालीन टेढ़ा बिछा है, तश्तरियाँ भी अपनी जगह ठीक नहीं रखी हैं।

फर्राश— हजूर, कालीन तो············ठीक बिछा था······ ·········पर हजूर के कदमों से ही·······················।

शाहन०—चुप गुस्ताख! हमारे हुजूर में ऐसे कलाम'' ···और तुम देखो जमाल (एक दूसरे नौकर को सम्बोधित करते हुये) यह शायद तुमने रखे हैं। लोड़ की नशिस्त क्या इसी तरह होती है? और यह शाही लोड़ मसनद पर उल्टा ही रखा हुआ है। अरे भई मैं कहता हूँ, तुम लोगों को मुलाज़मत करना है या नहीं······जहांपनाह अगर इस पोशिश को देखलें तो हम सब की अक़्ल पर सदआफ़रीं फरमायें।

जमाल— हुजूर आली····················।

शाहन०—खामोश रहो! ये दलील का मौका नहीं, पाँच लहमों में सब दुरुस्ती हो जानी चाहिए······समझे तुम लोग!

आगे बढ़ता है और दूसरी किश्ती पर बँधे परदों को ऊपर से नीचे तक देखता है।

शाहन०—मै कहता हूँ, तुम सब मुलाजमान कहाँ खडे थे, जबकि अल्लाह मिया के दरबार में अक्ल बँट रही थी यह देखो महारानी जोधाबाई की नशिस्त के सामने का परदा किस बेहूदा तरीके से बाँधा है! कुछ ऊँचा, कुछ टेढा मैं कहता हू यह हरमसरा की बेगमात हैं या कोई (यकायक खामोश सा हो जाता है) अरे फिरोज ठीक करो परदे ठीक करो जरा जल्दी कदम बढाओ।

शाहनवाज़ की बडबड सुनकर दूर खडा एक फर्राश अपने साथी से चुपचाप कुछ कहता है पर उसे शाहनवाज़ सुन लेता है।

शाहन०—क्यू दस्तूर! अब तेरी यह हिम्मत हो गई है कि मुझे बर्रों का छत्ता कहता है? एक तो काम में हरामखोरी और ऊपर से सीना जोरी बस आज से तू मुलाजमत से बरखास्त ।

दस्तूर—हुजूर !

शाहन०—हुजूर वजूर कुछ नहीं हमारा हुक्म, वह शाही हु क म ।

इतने में डङ्के पर चोट पडने के बाद शाही नकीबो की आवाज़ पहिले कुछ हलकी फिर जोर से सुनाई देती है।

शा०नकीब-मुजरे पर नजर, बा अदब बा निगाह शहन्शाह जलालउद्दीन अकबर सलामत!

एक छोटी नौका म सम्राट अकबर, राजकुमारी सलीम, राजा बीरबल, राजा मानसिंह तथा प्रधान मन्त्री अबुलफजल और अन्य नौरत्न बैठे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आहिस्ता-आहिस्ता यह नौका बडी नौका के सहारे आकर लग जाती है और सब लोग उसमें से उतर कर अपने अपने नियुक्त स्थान पर जाकर बैठ जाते हैं। नकीबो की आवाज फिर सुनाई देती है।

नकीब—बाअदब, बानिगाह, महारानी जोधाबाई सलामत!

समस्त उपस्थित गण खड़े होकर मुजरा करते है और दूसरी नौका के परदे हिलते हुए मालूम होते हैं जो इस बात का चिन्ह है कि महारानी जोधाबाई और अन्य प्रतिष्ठित सरदारो की स्त्रियाँ आकर यथास्थान बैठ गई। जब चारो ओर स्तब्धता का राज्य फैल जाता है तो प्रधान मन्त्री अबुलफजल खडे होते हैं।

अबुलफ०—जुमला दरबारियान और हाजरीन जलसा को मालूम होना चाहिये कि हमारे शहशाह आलमशाह ने आज का अज़ीमउश्शान जलसा, जो नुकरई जमना की सितह पर किश्तियों में मनाये जाने के लिहाज से अपनी नोइयत का यकता है। खुद की ४० वा सालग्रह और गुजरात का इलाका फतह करने की खुशी में मुनअक्कद फरमाया है। यह जलसा इसमें मौसीकी के कारनामों से मुताल्लिक है जिसमें बडे बडे माहरीनेफन अपने २ कमालात अभी आप लोगों के रूबरू पेश करेंगे।

यह अम्र किसी से पोशीदा नहीं कि जहापनाह को फनूने लतीफा से और खसूसन फने मौसीकी से किस कदर दिलचस्पी है, उसकी तरक्की

और इशाअत के लिए, उन्होंने बेइन्तहा रकमें सर्फ की हैं। आज दरबार में गाने-बजाने वालों की तादाद इतनी ज्यादा है कि बमुश्किल तमाम हर गाने वाले का नम्बर हफ्ते अशरे में एक दिन ही आता है। इसी गाने के शौक को पूरा करने के लिए, हुजूर पुरनूर ने एक शाही मौसीक़ीखाना भी क़ायम किया है, जिसमें जहान भर के साज़ और यन्त्र मुहइया किए गए हैं।

आलमपनाह का उसूल हमेशा यह रहा है कि जब किसी मोहिम मे कामयाबी हासिल होती है, तो तारीख पर जलसे मुनअक़द फरमाते हैं। और लोगों को इनाम इकराम तक़सीम करते हैं। चुनाचे आज भी मुकाबलाये मौसीकी में जो अव्वल आयेगा, उसे खज़ानए आमरा से १ लाख मोहरें और मुतादिद पार्चेजात इनायत किए जायेंगे।

अब मैं मन्सबदार निज़ामउद्दौला, मोहतमिम जल्सा से इस्तदुआ करूँगा कि वह हर एकगाने वाले का ताआरुफ़ कराते हुए अपना फरीज़ा अंजाम दें।

प्रधान मन्त्री अपने स्थान पर बैठ जाते हैं और निज़ामउद्दौला एक गवैये को शाही किश्ती पर पेश करते हुए उसका परिचय कराते हैं।

निज़ाम उद्दौला—आलमपनाह! यह सङ्गीतकार वङ्गदेश का रहने वाला है और इसका नाम 'चन्द्र सूरज' है, इसके गाने का खास कमाल इसके नाम से ही ज़ाहिर होता है, यानी इसके गाने की तासीर से सुनने वालों को कभी सर्दी कभी गर्मी महसूस होती है। अपनी आवाज़ की कशिश से लोगों पर यह मौसमी असर डाल सकता है।

गाने वाला मुजरा करके नौका के मध्य में बैठ जाता है और निम्नलिखित राग छेड़ देता है।

राग—भैरव

अकबर प्राणनाथ और नाथन को नाथ राजा जो अष्ट-सिद्धी नवनिधि पाये।
परमदाता विधाता सबही के मनरञ्जन हो दुख-भञ्जन, क़ल्पवृक्ष प्रत्यक्ष धाये॥
अन्तर्यामी स्वामी जंग काज करबे को रसना एहसान सब लाये।
जलालउद्दीन मोहम्मद ऐसो दाता जाकौ चहुं लोक में यश गाये॥

जैसे-जैसे गायक की आवाज़ घटती-बढ़ती है, एकत्रित लोगों में कभी कँपकँपी के कारण सी-सी की आवाज़ दाँतों की खटखटाहट के साथ सुनाई देती है और कभी उनके हाथ वस्त्रों के खोलने में व्यस्त हो जाते हैं। कोई अपना पसीना पोंछते हैं और कोई रुमालों से हवा करते हैं। गाना समाप्त होने पर निज़ामुद्दौला फिर खड़े होते हैं।

म० उ०—अब शहन्शाह की खिदमत में मुलतान के रहने वाले मीरबख्श को पेश किया जाता है, जिन्होंने अपने फन में यह रुतबा हासिल किया है कि वह अपने गाने के असर से चाहे जिस वक्त लोगों को हँसा सकते हैं और चाहे जिस वक्त रुला सकते हैं।

गायक मीरबख्श उपस्थित होता है और निम्नलिखित राग बीन के तारों पर छेड़ देता है।

राग—हिण्डोल

नाद वेद अपरम्पार पार हू न पायो।
गुन गाय-गाय थके सब सुर नर—मुनि जन देव॥
किते गुणी गन्धर्व किन्नर पच—पच हारे।
किन हू न पायो तिहारो सकल सृष्टि को भेद॥

गाने के प्रभाव से उपस्थित समस्त लोग कभी तो ठहाका मारकर हँसते हैं और कभी हिचकियाँ बाँधकर रोने लगते हैं। दृश्य देखने से मालूम पड़ता है कि श्रोतागण कठपुतलियाँ हैं और गाने वाला उनका जादूगर! जिधर चाहता है वह अपने इशारों पर उन्हें नचाता है।

मीरबख्श गाना समाप्त होने पर शाही मसनद को मुजरा करके उलटा लौटता है और फिर निज़ामउद्दौला खड़े होते हैं।

नि० उ०—आलीजाह! अब गुजरात के मशहूर मौसीकार देवदास अपने फन का कमाल हुजूर पुरनूर की खिदमत में पेश करेंगे। गुजरात की फतह के बाद जो माल ग़नीमत हमारे हाथ लगा है, उसमें देवदास भी शामिल है। इनके गाने की खास खसूसियत यह है कि यह अपनी आवाज को ऐसा घुमाते-फिराते हैं जिससे सुनने वाले कभी तो नाचने लगते हैं और कभी रज़्मिया इरादा कर आपस में लड़ने-झगड़ने लगते हैं।

निज़ामउद्दौला के अपने स्थान पर बैठने के पश्चात् देवदास पहिले तो मुगलिया तरत को मुजरा करता है और फिर निम्नलिखित राग की सोई आत्मा जगा देता है।

श्रीराग

भस्म—भूषन अङ्ग लहे, सिर पर गङ्ग बहे, विकट रूप शिव जोगी—
डिमडिम डमरू बजत आयो सुख भारी।
जोग जगत शिव स्वरूप शङ्कर के कण्ठ—कण्ठ—
नागन की माल गरे रूप औतारी॥
ताण्डव तव नृत्य भयो आनन्द घन अतिहि छयो—
उमँग भरे जूझत सब शिव की बलिहारी।

राग का प्रभाव यह होता है कि समस्त लोग कभी तो थिरक-थिरक कर नाचने लगते हैं। और कभी एक दूसरे पर धौल-धप्पा मारना आरम्भ कर देते हैं। सम्राट भी इस मस्ती के आलम से नहीं बचे हैं, वह बैठे-बैठे भी अपने हाथ और गर्दन को कभी थिरका देते हैं और कभी जोश में आकर तलवार पर हाथ रख देते हैं। इस प्रकार जब गायक का गाना समाप्त होता है तो सब जागृत हो उठते हैं मानो कोई गहरा स्वप्न देखकर उठे हों। सहसा सारी महफिल के मुख से वाह वाह और कमाल कर दिया की ध्वनें गूँज उठती हैं और सभी उसको शान्त करते हुए निज़ामउद्दौला, उठते हैं।

निज़ामउद्दौला—आली मर्तबत! अब आपकी तफ़रीह नया का सामान मुक़ामी दरबारी गवइया वीरमंडल मुहइया करेगा। यह महज़ मुक़ामी गाने वाला है, इस लिए क़ाबिले नज़रअन्दाज़ नहीं, इसमें बहुत से गुण हैं। अपने गाने के असर से यह थके मांदे इन्सानों को सुला सकता है, शोर करने वाले और झगड़ालू लोगों पर हलका सा गनूदगी का नशा पैदा करके, उनमें अम्न और सकून पैदा कर सकता है और मुसीबतज़दों को तसल्ली देकर उनकी रूहों को तरोताज़ा बना सकता है।

वीरमण्डल प्रथम तो सम्राट को मुजरा करता है और फिर सभा के चारों ओर एक विशेष गर्व के साथ देखता है, जैसे आज का खलनायक वही बनने वाला हो। थोड़ी देर गला साफ़ करने के पश्चात् वह यह राग छेड़ देता है।

राग—मालकोस

सोहत चन्द्र बदनी मृगनैनी मदमाती बैठी चन्दन चौकी पर।
ध्यान धरत माधो मुकन्द मुरली मनोहर को ॥
नाम लेत है जगदीश्वर जगपति अपने निस्तारन को।
ऐसी मूरत बनी मानो मन हर लीनो ग्वाल-बाल गोपिन को ॥

राग की ध्वनि जैसे-जैसे वातावरण में गूंजती है, श्रोताओं पर एक प्रकार का आलस छाने लगता है और थोड़ी देर बाद वह सब निद्रा की गोद में झूलने लगते हैं। वीरमण्डल तभी अपना गाना स्थगित कर देता है और वायु से स्वर लहरी का जादू दूर हो जाने पर सब लोग घबराकर ऐसे जागृत होते हैं मानो नींद के कारण उनकी कोई बहुमूल्य वस्तु खो गई हो और चेतना आने पर उसकी चिन्ता उनके सर पर चढ़ गई हो। निज़ामउद्दौला भी कुछ अर्ध जागृत से अपने कर्तव्यहितार्थ खड़े होते हैं।

निज़ाम उद्दौला—जहाँपनाह! मुक़ामी मौसीक़ार वीरमंडल के गाने के असरात हाल ही में आलीजाह ने मुलाहिज़ा फरमा लिए। अब खिदमत आलिया में ऐसे शख्स को पेश किया जा रहा है, जिसे हम ज़मीन की गहराई में छुपा हुआ बेशक़ीमती हीरा कह सकते हैं। हो सकता है यह हीरा असली हो या कसौटी पर आज़माइश के बाद नक़ली साबित हो उसका नाम है
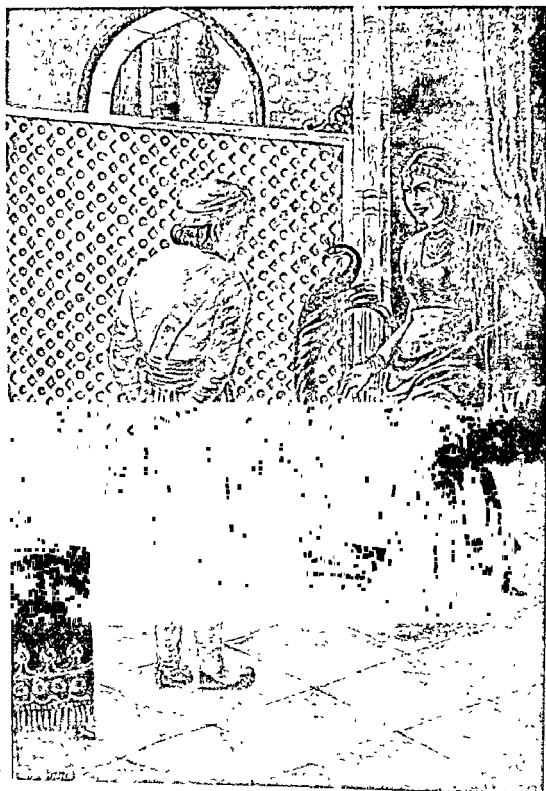
दृश्य—६

प्रभाती और तानसेन

तानसेन ! मुग़लिया आमिल शेख़ फ़ज़ल वसूली लगान के सिलसिले में इलाक़ा ग्वालियर के मौज़े बेहट में मुक़ीम थे कि इस छुपे हुए हीरे की मालमात उन्हें हासिल हुई और वह उसे यहाँ तक ले आये। शेख़ फ़ज़ल ने तानसेन के गाने की बहुत तारीफ़ की है। जिसका नमूना अह्लियाने दरबार के रूबरू पेश होने वाला है।

तानसेन शाही नौका में उपस्थित होकर सम्राट अकबर को मुजरा करते हैं और फिर अपनी बैठक लेकर तानपुरे के तारों को झङ्कार देते हैं। उनकी वेषभूषा बिलकुल सरल है। लोग प्रथम तो तानसेन के रङ्ग रूप को देखकर और फिर उनके तानपुरे की झङ्कार को सुनकर मुस्करा देते हैं। कोई हँसी के मारे मुँह पर रूमाल लगा लेता है और तानसेन का मज़ाक़ उड़ाते हुए कोई कानाफूसी करने लगता है, पर जब तानसेन की तान और स्वर का मिठास वातावरण में गूँजता है तो स्तब्धता का साम्राज्य एकदम छा जाता है और सब शान्त भाव से उनका गाना सुनने लगते हैं। तानसेन निम्नलिखित ध्रुपद गाते हैं।

ध्रुपद (गारा)

प्यारी की मूरत चित चढ़ी निशदिन रहत हमारे।
कर उपचार विचार कोट विधि बिसरत नांहि बिसारे॥
बिरही पपीहा पियू-पियू बोले, ताहि विधि पीर हमारे।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस को नैन बहत जल धारे॥

गाने के प्रभाव से लोगों में एक प्रकार की स्फूर्ति आ जाती है और जो आलस्य उनके शरीर में बीरमखइल के गाने से घुस गया था वह मस्ती में परिणित हो जाता है। सब के चेहरों पर एक उमङ्ग्सी छा जाती है और उनकी आत्मायें आकाश में उनको उड़ती हुई प्रतीत होती हैं। प्रत्येक दरबारी ऐसा अनुभव करने लगता है, मानो सङ्गीत के जादू ने उन्हें दूर कहीं बहुत दूर किसी शान्ति के साम्राज्य में पहुँचा दिया है। इन सब में विशेष बात यह होती है कि हरमसरा के पर्दों के भीतर भी एक हलचल सी दीखती है, जिससे पता लगता है कि शाही बेगमात और स्त्रियों ने भी तानसेन के गाने का पूरा आनन्द लिया है। जागृति, उल्लास और मस्ती उनमें कूट-कूट कर भरी मालूम होती है।

तानसेन का गाना समाप्त होते ही चारों ओर एक प्रकार की हलचल सी मच जाती है और सब के मुख से एक साथ ही "तानसेन बाज़ी मार ली" 'मैदान जीत लिया" इत्यादि शब्द सुनाई देते हैं। वाह वाह और सुभान अल्लाह की आवाज़ से तो समस्त वातावरण गुंजायमान हो उठता है। शाही किश्ती पर भी ख़ुशी का इज़हार किया जाता है, प्रधान मन्त्री अबुल फ़ज़ल और सम्राट अकबर भी आपस में सलाह मशवरा करते दीखते हैं। इतने में शाहनवाज़ उठते हैं और अपना कर्तव्य पालन करते हैं।

शाहन०—सरकार आलीविक़ार ! अब आप सरोदनवाज़ नूर उद्दीन का गाना सुनकर मसरूर होंगे, यह······ ········ · ·········।

नूरउद्दीन—नहीं जहाँपनाह ! अब मैं नहीं गा सकता, तानसेन के मुक़ाबिले में मेरा चिराग़ न जल सकेगा।

शाहनवाज़—और तुम चरणदीन ?

चरणदीन-नहीं सरकार मेरी क्या मजाल है, जो……………….।

अ०फ०—हाज़रीन ! आप सब लोगों ने आज का मुकाबलाए मौसीकी सुना और देखा ! गाने वालों के तरह-तरह के कमालात और उमरात का मुशाहिदा किया। नीज़ आखरी गाने वाले तानसेन के गले की मिठास को भी महसूस किया। वाक़ई यह जौहरे पोशीदा आजमाइश की कसौटी पर असली से भी ज्यादा दरख़शां साबित हुआ। हमारे आली मरतबत शाहंशाह ने फैसला फ़रमाया है कि आज की काम्याबी का सेहरा तानसेन के सर बांधा जाए लिहाजा मंजूर शुदा १ लाख अशरफ़ियों का इनाम तानसेन को इनायत किया जाता है। आलीमदार जहांपनाह ने साथ-साथ यह भी हुक्म सादिर किया है कि आज से तानसेन की शुमार शाही गवइयों में की जावे और आमिल शेख़फज़ल को ऐसा रतन तलाश करने की कामयाबी में ५०० मोहरें इनाम दी जावें।

दीगर मौसीकारों को किसी एक शख्स की कामयाबी से मायूस नहीं होना चाहिए। मुग़लिया दरबार हुनरमन्दों की कद्र अफ़जाई के लिए हमेशा खुला हुआ है। अब आज का जलसा शहन्शाह आलम पनाह की सेहत और उम्रदराज़ी की दुआ के बाद बरख़ास्त किया जावेगा।

प्रधानमन्त्री के अपने स्थान पर बैठने के पश्चात चारों ओर से "अल्लाहो अकबर" और "शाहन्शाह अकबर जिन्दाबाद" के नारे सुनाई देते हैं। तानसेन उठकर शाही मसनद की कदम बोसी करते हैं और तुरन्त ही सम्राट भी उठखड़े होते हैं। नक़ीब फिर आवाज़ लगाते हैं।

"बाअदब बानिगाह, शाहन्शाह सलामत !" सारा लवाज़मा सम्राट के पीछे-पीछे चल देता है और दरबार विसर्जित होजाता है। एक बार फिर छोटी बड़ी सहस्रों नौकायें रुपहेली जमुना की छाती पर भागती दौड़ती नज़र आती हैं।

जो किश्ती तानसेन को लिये जारही है, वह जब शाही बेगमात की किश्ती के बराबर से गुज़रती है, तो यकायक तानसेन के कदमों पर एक भारी सी वस्तु आनकर गिरती है। तानसेन उसे उठाकर देखते हैं तो कागज़ में लिपटा हुआ मोतियों का जगमगाता एक हार उन्हें नज़र पड़ता है। कागज़ पर अङ्कित है —

"सफलता को भेंट"

—"प्रभाती"

तानसेन हारका भेद जानने के लिये हरमसरा के परदों की ओर देखते हैं, मगर शाही किश्ती बहुत दूर जाचुकी है, अत: उन्हें केवल परदों के पीछे धुंधली झिलमलाती एक मनुष्य छाया दृष्टिगोचर होती है, तानसेन फिर मोतियों के हार को हाथ में हिला डुला कर देखते हैं, सहसा शेख़फ़ज़ल की नज़र उन मोतियों पर पड़जाती है।

शे० फ०—तानसेन ! हो तो बड़े क़िसमत वाले !! इनाम पर इनाम पा रहे हो।

तानसेन—पर तहसीलदार साहब ! आप कब इस से खाली हैं ?

शे० फ़०—लेकिन मुझे ऐसा अज़ीज़ इनाम तो नहीं मिला·········किसी के नाज़ुक हाथों का······ ···

तानसेन—मगर मैं तो यह भी नहीं जानता कि इस तरह हार फैंकने वाला है कौन और उसमें हरमसरा से ऐसा अमल करने की हिम्मत कहां से आई।

तानसेन की किश्ती पानी को चीरती हुई आगे बढ़ी जा रही थी इतने में एक छोटी नाव उसके बराबर आकर लगी, जिसमें वीरमण्डल बैठा था।

वीर मं०—तानसेन! हार फैंकने वाले का पता मैं बता सकता हूँ, पर एक शर्त पर!

तानसेन—वह क्या?

वीर मं०—जो १ लाख मोहरें तुम्हें आज इनाम में मिली हैं, वह मुझे दे दो।

शे० फ०—मैदान में शकिस्त खाकर वीर मण्डल अब इस तरह अपनी शैतानी तमन्ना पूरी करना चाहते हो?

वीर मं०—तो शाही हरम की औरतों से भी इस तरह प्रेम के खेल नहीं खेले जाते शेख साहब, अगर आलीजाह को इस वाके का इल्म हो जाये, तो फिर तानसेन की खैर नहीं······!

तानसेन—मगर इसमें मेरा क्या कसूर है?

शे० फ़०—तुम इन चालों को नहीं समझते तानसेन. (वीर मण्डल को सम्बोधित करते हुए) तो वीर मण्डल! खुशी से इस वाक़े की खबर आलमपनाह को करदो, शायद है तुम्हें मांगा हुआ इनाम मिलजाये।

वीरमं०—अच्छा, यह बात है······देख लूँगा (दांत पीसता हुआ अपनी नौका को आगे बढ़ा लेजाता है।)

तानसेन के आस-पास से अनेक नौकायें निकल जाती है. जिन पर अधिक लोग हँसते बातें करते चले जारहे हैं। कुछ आज की घटना पर टीका-टिप्पणी कर रहे हैं। परन्तु तानसेन आज की सफलता को भूलकर, हार और हार फैंकने वाले के ध्यान में मग्न हो जाता है।

दृश्य ९

बेहट ग्राम में स्थित शिव मन्दिर का पवित्र स्थान—भगवान शङ्कर की मूर्ति के आगे सूरदास हाथ में खंजरी लिए निम्नलिखित गाना गारहे हैं। पास में बैठी हुई "रागिनी" वीणा बजाती हुई उनका साथ देरही है।

॥ प्रभाती (ध्रुपद) ॥

सतचित आनन्द–कन्द दीनन हितकारी।
फिर-क्यों भगवान सुरति दीन की बिसारी॥
सकल विश्व के अधार, दयासिंधु निर्विकार,
दीनन की सुनि पुकार, लेत हो उबारी ॥ सतचित···॥
मेहर दया दृष्टि करो, भव के सब कष्ट हरो।
अन्तर जिय जात जरो, मैंटो भय हारी ॥ सतचित···॥
कहां जाऊँ कासों कहूँ, निशदिन दुख द्वन्द सहूँ।
चरनन की "शरन" चहूँ, जाऊँ बलिहारी ॥ सतचित··· ॥

गाते-गाते रागिनी की आवाज़ भर्राने लगती है। पहिले तो वह हलकी-सी हिचकियाँ लेती है और फिर अपना मुँह आंचल में छुपा कर फट-फट कर रोना आरम्भ कर देती है। वीणा पर भी उसकी उङ्गलियां ढीली पड़ जाती हैं, सूरदास रागिनी के रोने का शब्द सुनकर गाना बन्द कर देते हैं।

सूरदास—क्यूँ बेटा क्या हुआ ?

रागिनी—कुछ नहीं बाबा।

सूरदास—भगवद् भजन एक दम बन्द क्यूँ कर दिया ?

रागिनी—अभी आरम्भ करती हूं बाबा, ज़रा कुछ गले में··············।

सूरदास—मुझे बहकाने का प्रयत्न करती है बेटी ? मैं अन्धा हूं तो क्या, पर मन के भाव तो पहिचान सकता हूं।

रागिनी—पर मुझे कुछ हुआ भी तो हो ?

सूरदास—मैं जानता हूं रागिनी ! तुझे तानसेन से प्रेम है, तू उसके बिना एक क्षण भी सुखी नहीं रह सकती·····तू तो क्या बेटा (थोड़ा रुक कर) मैं समझता हूँ सारा गाँव उसकी अनुपस्थिति से व्याकुल है। मन्दिर में भी शोभा मालूम नहीं पड़ती है, पूजा में किसी तरह मन नहीं लगता (करुणापूर्ण स्वरों में) वास्तव में तानसेन देवता था, वह हमें छोड़कर चला गया, राजा की राजधानी उसे निगल गई।

रागिनी—परन्तु उन्होंने चलते समय मुझसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं सङ्गीत का मुकाबला समाप्त होते ही, वापिस लौट आऊँगा.........और आज उस बात को भी तीन मास बीत गये, किंतु.........

सूरदास—वह आया भी नहीं, शायद वह हमें भूल गया है। नगर के जादू और राजकीय ऐश्वर्यों ने उसे हमसे छीन लिया है बेटी!

रागिनी—ऐसा न कहो बाबा! देवता पर इलज़ाम नहीं लगाते.........मैंने रात स्वप्न देखा था कि वह सङ्गीत के मुक़ाबले में जीत गये हैं। उन्हें एक लाख मोहरें पुरुस्कार में मिली हैं और वह अपनी रागिनी के लिये महल बनवाने जल्दी आ रहे हैं.........।

मन्दिर के बाहर कबूतरों के गुटरगूं गुटरगूं बोलने की आवाज़ सुनाई देती है। फिर एक कबूतर के सहसा फड़फड़ाने और चीत्कार करने का शब्द सुनाई पड़ता है, मानों किसी बिल्ली ने दबोच लिया। रागिनी अपना वार्तालाप भूलकर मन्दिर के बाहर "हाय मेरा चन्दन" चिल्लाती हुई भागती है। सूरदास भौंचक से रहजाते हैं और पूछते हैं।

सूरदास—रागिनी, क्या हुआ? एक दम क्यूं भाग गई बेटा?

कोई उत्तर नहीं मिलता। रागिनी बाहर आकर देखती है तो उसके दो तीन प्यारे कबूतरों पर, जिन्हें उसने बड़े चाव से पाला है, बिल्ली आक्रमण करने का प्रयत्न कर रही है। वह बिल्ली को भगाती है और चन्दन कबूतर को उठाकर पुचकारती है।

रागिनी—चन्दन तुझे! कुछ हुआ तो नहीं?......मेरा लाड़ला...यह बिल्ली बड़ी बुरी होती है। चूहे और कबूतरों का पीछा ही नहीं छोड़ती...संसार में परमात्मा ने भी अच्छा नियम बनाया है। एक शक्तिवान जीवधारी अपने से कमज़ोर पर आक्रमण कर, उसे हड़प लेने का सदा प्रयास करता रहता है दोनों सभ्यता के नियम पर चलने का कभी यत्न ही नहीं करते...सम्भव है, उन्हें शान्ति और आत्मिक प्रेम मिल जाये...अरे मैं कहां पहुँच गई......हां तो, देख चन्दन! तू यदि उड़कर सामने वाले वृक्ष की दाहिनी डाल पर जाकर बैठ जावेगा, तो मैं समझूंगी, वह शीघ्र ही लौट आवेंगे...(कबूतर गरदन उठाकर रागिनी की ओर देखने लगता है और बड़ी लहकी हुई आवाज़ में गुटरगूं गुटरगूं बोलता है) अरे पगले तू! भी जानना चाहता है, वे कौन हैं......अरे वही गांव के देवता,...वही देवता जिनके राग की शक्ति से मन्दिर का दीप जल उठा था...और तू भी बचगया था...अच्छा जा, अब अधिक, बातें मत बना...उड़कर डाल पर बैठ जाना...समझा...हां...!

रागिनी कबूतर को हाथ से उड़ा देती है, परन्तु कबूतर उड़कर नियुक्त स्थान पर नहीं बैठता। रागिनी जो उसकी उड़ान की ओर ध्यान दे रही थी, असफलता पर अधीर हो जाती है, उसका हृदय निराशा के वेग से टूट जाता है। तभी एक कबूतरी गुटरगूं गुटरगूं करती हुई उसके हाथ पर आकर बैठजाती है। रागिनी को जैसे कुछ प्रेरणा सी होती है।

रागिनी—(कबूतरी पर प्रेम पूर्वक हाथ फेरते हुए) चन्दा ! तू मादा है, स्त्रियों के मनोभाव तू भली भांति समझती है"'तू अवश्य मेरा कहना मानेगी."'जा, उड़कर गङ्गादीन की झोंपड़ी पर बैठ जा। अगर तू वहां बैठगई, तो मैं समझ-लूंगी, वह मुझे भूले नहीं हैं। उन्हें मेरी याद है, वे जल्दी ही लौट आयेंगे"' जा उड़जा! मगर चन्दन की तरह दगा मत करना"'"'वह पुरुष जाति का था और पुरुष जाति छली होती है"'"'देवता ने भी एक बार कहा था कि पुरुष जाति काटने वाली होती है, खिलाओ, पिलाओ प्रेम करो और फिर धोखा"'जा जा, अब उड़जा"'देख ! मेरी बात मत भूलना, हाँ !

रागिनी कबूतरी को उड़ा देती है, पर वह भी बताये स्थान पर नहीं बैठती यह देखकर रागिनी को अत्यन्त दुख पहुँचता है। उसकी आशाओं पर पानी फिर जाता है और वह बिलख बिलख कर रोने लगती है।

रागिनी—देवता"'क्या यही वचन थे"'"' चलते चलते कहा था, रागिनी मैं जल्दी लौट आऊँगा"'परन्तु वह प्रेम के सपने अब कहां गये"'"'!

सूरदास—(अन्दर से लकड़ी टेककर आते हुये) रागिनी ! यह सब क्या है, आज तुझे क्या होगया है बेटा ?"'अपना मन इतना अधीर क्यूं करती है ! सम्भव है देवता को कुछ काम लग गया हो और वह लौटते ही हों।

रागिनी—पर मुझे विश्वास कैसे हो बाबा !

सूरदास—बेटा ! देवता के लौट आने पर तुझे आप ही आप विश्वास हो जावेगा"' चल, जब तक भगवान की आरती पूरी करें"'शङ्कर की कृपा हुई तो सब ठीक हो जावेगा।

सूरदास मन्दिर के अन्दर आरम्भिक भजन गाते हुए लौटते हैं। रागिनी भी टूटे मन से उनका साथ देती हुई पीछे-पीछे चलती है।

दृश्य ६

स्थान—जोधाबाई का महल–महल के भीतर की बारादरी।

बारादरी मुग़लिया ठाठ बाट से पूरे तौर पर सुशोभित है। दरवाजों में फारस के बने परदे लटक रहे है, जो हवा के झोकों से बल खाकर एक विशेष दृश्य उपस्थित कर देते हैं। मध्य में सम्राट अकबर कालीन पर लोड़ के सहारे बैठे है। उनके सामने सुन्हैरी फ़रशी रखी है। जिससे सम्राट कभी–कभी कश खींच लेते हैं। सम्राट के बराबर में महारानी जोधाबाई बैठी है। जिनके हाथ में गुलाब का एक सुगन्धित गुच्छा है, जिसे वह बार–बार नाक तक लेजाकर वापिस ले आती हैं।

बारादरी में तानसेन के अतिरिक्त अन्य कोई पुरुष नही है। चारों ओर यथास्थान ख़वास व कलमाकुनिये खड़ी व बैठी हैं, तानसेन बैठक जमाये तानपूरे पर उगलियां नचा रहे हैं। सम्राट ने तानसेन के अद्भुत गाने से प्रसन्न होकर उन्हें अपना नौरत्न बनालिया है और अपनी हरमसरा में भी आने जाने की इजाज़त देदी है।

तानसेन के तानपुरे के इशारे पर महारानी जोधाबाई के मनोरंजनार्थ नृत्य और गायन का *प्रबन्ध करने वाली प्रभाती नाच रही है। नाच एक विशेष प्रकार का है। प्रभाती स्तब्ध भाव से एक ऐसे* वृक्ष का अभिनय धारण किये खड़ी है, जिसकी ग्रीष्म काल के कारण सारी पत्तियां झड़गई हो, और वह केवल एक ठूंठ मात्र रह गया हो। उसके आस—पास चार पाँच अन्य ख़वासें भी यही रूपक बनाये हैं। थोडी देर पश्चात् वायु का एक झोका चलता है और प्रभाती तथा अन्य ख़वासें को ऐसा प्रतीत होता है मानो बसन्त आगया हो। वह सब ग्रीष्म का अभिनय छोड़कर अपने शरीरों में एक प्रकार की स्फूर्ति अनुभव करती है और धीरे–धीरे वह अपने बारीक वस्त्रों को सभालते हुए बसन्त का स्वागत करती है और फिर थिरक–थिरक कर नृत्य करना आरम्भ करदेती हैं। उनके घुंघरुओं की झकार और तानपुरे के तारों से निकली हुई मीठी आवाज़ समस्त बारादरी को गुंजायमान करदेती है। सम्राट और महारानी नृत्य ध्वनि से मस्त होकर बहुधा वाह वा! और खूब! शब्द निकाल देते हैं और फरशी खींचने और फूल सूंघने का कृत्य भूलकर आनन्द विभोर हो कर झूमने लगते है।

नृत्य समाप्त होने पर प्रभाती और अन्य ख़वासें तख्त को आदाब बजा लाती है।

अकबर—माशा अल्लाह! प्रभाती, खूब नाचती हो! मावदौलत तुम्हारे काम से बेहद खुश हैं।

प्रभाती—यह आलमपनाह की कनीज–नवाजी है।

जोधाबाई–आलीजाह! कल शेखू (शाहजादा सलीम) भी प्रभाती के नाच की तारीफ कर रहा था।

अकबर—खूब, खूब! शाहजादा भी अब रङ्गीनियों मे लुत्फ लेने लगा है (प्रभाती की ओर लक्ष्य करके) हां, तो देखो प्रभाती! मावदौलत तुम्हारे नाच से अज़हद लुत्फगीर हुए हैं, और यह मोतियों का हार तुम्हें बतौर इनाम इनायत करते हैं।

प्रभाती—आलमपनाह! (नीची निगाहें करते हुए) कनीज़ इस इज्ज़त के लायक कहां?
(हार लेती है और सम्राट को मुजरा अर्ज करती है)

जोधाबाई-और हां तानसेन! तुमने भी कम कमाल का काम नहीं किया, अपने सुरों की मस्ती से हमको दूसरी दुनियां में पहुँचा दिया।

तानसेन—यह हुजूर की इज्जत अफ़जाई है।

जोधाबाई-तानसेन! हमें वह वक्त याद है, जब तुमने अपनी जादू भरी आवाज से दरबार को जन्नत की रङ्गीनियों में पहुँचा दिया था और सब के मुँह से बेसाख़्ता तुम्हारी तारीफ़ में आवाजें निकल पड़ी थीं।

तानसेन—सरकार आलिया!

जोधाबाई-यह तुम्हारी खुशगुलुई का ही नतीजा था कि तुमने सारे आलम को अपनी तरफ खींच लिया और जहांपनाह को भी अपना गरवीदा बना लिया। आज आलमपनाह ने तुम्हें "नौरत्न" का एज़ाज देकर शाही जनानखाने में भी दाख़ले की इजाजत अता फरमाई है, जिससे हम और दीगर बेगमात भी तुम्हारे सहरपरवर गाने से मसरूर हो सकें।

तानसेन—जी महारानी साहिबा! मैं दुनियों में खुद को सबसे ज्यादा खुशक़िस्मत समझता हूँ।

जोधाबाई-तुम्हारे काम से खुश होकर हम तुम्हे चीन की बनी हुई यह सुनहरी अङ्गुश्तरी पेश करते हैं।

तानसेन—(अँगूठी लेते हुए) मैं किस जुबान से मलका का शुक्रिया अदा करूँ?

अकबर—तानसेन! मावदौलत तुम्हारी इस बात से भी बेहद खुश हैं कि तुमने बहुत कम वक्त में दरबारी आदाब और तर्ज़े गुफ़्तगू सीख लिया। तुम्हें आज से शाही मौसीकीख़ाने (सङ्गीतगृह) का मोहतमिद मुकर्रर फरमाते हैं।

तानसेन—जहांपनाह!

अकबर—जाओ प्रभाती! तानसेन को मौसीकीख़ाने के मुताल्लिक़ जुमला उमूर समझादो।

प्रभाती और तानसेन एक बार फिर सम्राट और महारानी जोधाबाई को मुजरा कर, वहां से प्रस्थान करते हैं। जब दोनों बारादरी के ख़ास दरवाजे के निकट पहुँचते है तो हवा का एक तेज़ झोंका आता है और फ़ारस के बने परदे को हिलाकर प्रभाती और तानसेन को एक साथ लपेट देता है। सम्राट और महारानी जोधाबाई यह दृश्य देख खिलखिलाकर हँस पड़ते है, तानसेन और प्रभाती लज्जित से हो वहा से चले जाते है।

अकबर—(थोड़ा सोचते हुए) महारानी! मावदौलत का ख्याल है कि अगर तानसेन और प्रभाती दोनों को शादी की जञ्जीरों में जकड़ दिया जाये तो कैसा रहेगा? दोनों ही अपने-अपने फ़न में उस्ताद हैं। एक गाने में

तो दूसरा नाच में, सूरत-शक्ल और उम्र में भी दोनों एक दूसरे के लिये निहायत मौजू हैं, जैसे खुदावन्द ने दोनों को एक दूसरे के लिये ही……!

जोधाबाई—(जो पिछली घटनाओं के ध्यान में खोई हुई थीं उनसे चौंककर) मगर आलीजाह ! यह कैसे मुमकिन हो सकेगा ? प्रभाती तो वीर-मंडल की मंगेतर है।

अकबर—इससे क्या हुआ महारानी ? अभी दोनों की शादी तो नहीं हुई। शादी का रिश्ता जुड़ जाने पर फिर अलहेदगी का तसव्वुर करना मुश्किल होता है ………सोचो महारानी ! तानसेन और प्रभाती का रिश्ता क़ायम हो जाने पर दोनों की ज़िन्दगी कितने लुत्फ से कटेगी ? क्यूँकि दोनों एक ही चीज़ के पुजारी हैं यानी 'कला' के………… !

जोधाबाई—यह ख्यालात आलमपनाह के हो सकते हैं, मेरी नाचीज नजर में जब किसी दो की मङ्गनी होजाती है या दोनों एक दूसरे को मोहब्बत की दुनियाँ में पसन्द कर लेते हैं तो वह रिश्ता भी शादी की मञ्जिल को पहुँच जाता है।

अकबर—(जोर-जोर से कश खींचते हुए, जैसे कोई बड़ी गहरी समस्या में उलझ गये हों) अच्छा महारानी ! मावदौलत इस मसले पर बाद में ग़ौर करेंगे।

खवास—(बाहर से दाखिल होते हुए) आलमपनाह ! वज़ीर-आज़म अबुलफज़ल बारयाबी चाहते हैं।

सम्राट कुछ इशारा-सा करते हैं और समस्त खवास और महारानी जोधाबाई उठकर वहां से चल देती हैं। सम्राट फर्शी से एक लम्बा कश खींचते हैं और उसके धुवें में खो जाने की कोशिश करते हैं।

दूर से सितार के तारों की मीठी आवाज़ सुनाई देती है और तुरन्त शाही सङ्गीत गृह का स्मरण हो आता है, जहां तानसेन और प्रभाती एक दूसरे को समझने का प्रयत्न कर रहे हैं।

पट परिवर्तन

(मुग़लिया संगीत गृह)

गृह बड़ा विशाल है और उसकी शिल्प-स्थापना बड़ी सुन्दर मुसलमानी ढङ्ग से की गई है गृह में संसार भर के वाद्य यन्त्र एकत्रित हैं। एक ओर तो सरस्वती बीन से डफ और चङ्ग तक और दूसरी ओर सरोद से नफीरी और ने तक सारे साज रुचि पूर्वक ढङ्ग से सजे रखे हुए हैं। तानसेन और प्रभाती सङ्गीतगृह में प्रवेश करते हैं। प्रभाती आज बड़ी प्रसन्न है मालूम होता है जैसे उसकी मांगी हुई कोई वस्तु उसे मिल गई है, उसके कदम-कदम से शोखी और मस्ती टपकती है। तानसेन उसके पीछे-पीछे इस प्रकार भोले बनकर चल रहे हैं, मानो सङ्गीत में उन्हें कुछ आता ही नहीं है और प्रभाती उनकी गुरु है और वे उसके शिष्य।

तानसेन—(प्रभाती के गले में पड़े उस हार को देखकर, जो सम्राट ने उसे पुरस्कार स्वरूप दिया है) देखो प्रभाती ! यह हार मुझ पर कहीं फिर न फेंक देना, तुम्हें पुरस्कार मिली चीज़ अनजान पर फेंकने की बुरी आदत है।

प्रभाती—गायक! मैं हार अनजान पर नहीं फेंकती। मैं तो उसी की सेवा में भेंट करती हूं, जो मेरा मन चुरा लेता है।

तानसेन—(व्यङ्ग से हँसते हुए) तो इसका मतलब यह निकला कि मुझ जैसे भाग्यशाली तुम्हारे दरबार में और भी हैं।

प्रभाती—मुझे गलत समझने की कोशिश मत करो गायक मैं यह कहना चाहती थी (कुछ शरमा सी जाती है) ।

तानसेन—मैं सब कुछ समझ गया प्रभाती! हां तो तुम मुझे यहां क्या-क्या चीज समझाने लाई थीं?

प्रभाती— मगर, गायक! पहिले मुझे तुम यह बतादो कि तुमने यह कैसे जान लिया कि मुकाबले के उस दिन, हार मैंने ही तुम्हारे चरणों पर फेंका था?

तानसेन—जरूरतमन्द आदमी हर बात का पता लगा लेता है। तुम्हारे विषय में मुझे सारा हाल तुम्हारी एक सहायक से मालूम हो चुका है।

प्रभाती—उसका नाम?

तानसेन—प्रभाती किसी का भेद जानने की कोशिश करना और भेद बताना पाप है (एक वाद्य यन्त्र की ओर देखते हुए) प्रभाती! यह साज कौनसा है? बड़ी सुन्दर लकड़ी और महनत का बना मालूम होता है यह ।

प्रभाती—(अपनी बात को स्थगित करना ही उचित समझ कर) यह यूनानी मोरचङ्ग है। इसे आलमपनाह को यूनान के बादशाह ने बतौर तोहफा पेश किया था।

तानसेन—(दूसरे यन्त्र की ओर सङ्केत करके) और यह ।

प्रभाती—इस बाजे का नाम 'ताऊस' है। यह शहशाह फारस की यादगार है, नृत्य करते हुए लकड़ी के मोर में तार लगाए गए हैं। अच्छा बजाने वाला जब इस साज के तारों को उङ्गलियों से छेड़ता है, तो उसकी झङ्कार जङ्गल में नाचने वाले मोर की याद दिला देती है।

तानसेन—बहुत सुन्दर! अगर बाजे के साथ कोई रूपवती स्त्री नृत्य करे तो और सोने में सुहागे का काम हो सकता है।

प्रभाती—तो तुम्हारी इच्छा यह है कि मैं नृत्य करूँ।

तानसेन—यह तो मैं नहीं कह सकता। पर यदि तुम स्वयं को रूपवती स्त्री समझती हो तो ।

प्रभाती—यह तो मैं भी नहीं कह सकती। यह तुम्हारे निर्णय की बात है गायक !

प्रभाती नृत्य आरम्भ कर देती है। घुँघरुओं की झङ्कार और उसके भाव प्रदर्शन से तानसेन के सङ्गीत की आत्मा जाग उठती है और वे भी एक यन्त्र उठाकर नृत्य का साथ देने लगते हैं। प्रभाती इतनी व्यस्त होकर नाचती है और अपने नृत्य की भावभङ्गी द्वारा मस्ती की इस कदर मदिरा उड़ेलती है कि तानसेन भी बेसुध होकर पागलों की तरह झूमने लगते हैं। तभी वह नाचना बन्द कर तानसेन के चरणों में गिर पड़ती है। तानसेन जैसे स्वप्न से जागृत हुए हों ।

तानसेन—यह क्या प्रभाती ? हार के बदले खुद गिर पड़ीं।

प्रभाती—तुम इतना भी नहीं समझते गायक! क्या तुम्हारे हृदय में सुन्दर और आकर्षक वस्तुओं के लिये कोई स्थान नहीं ? जरा मेरी ओर तो देखो······ मुझ में यौवन है, रस है, मस्ती है, मेरे शरीर के अङ्ग-अङ्ग से जवानी फूटकर निकल रही है। तुम क्या इनकी भी क़ीमत नहीं लगा सकते······? गायक! तुम्हारा जादू भरा गाना जिस दिन से सङ्गीत के महान् मुक़ाविले में सुना है, उसी दिन से तुम्हारी मूर्ति हृदय-पट पर अङ्कित हो चुकी है। तुम्हें खुद को सौंपने का मैंने निश्चय कर लिया है ··कई दिनों से मैं अपने मनोभाव प्रगट करने का अवसर ढूंढ़ रही थी। आज बड़े भाग्य से यह मौक़ा मिला है······बोलो क्या तुम्हें प्रभाती पसन्द है ?

तानसेन—(जैसे कुछ समझे ही नहीं) प्रभाती! आज तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही हो ? तुम्हें भला कौन पसन्द नहीं करेगा। मैं भी आखिर इन्सान हूँ और इन्सान होने के नाते कला की हर वस्तु से प्रेम करने का अधिकार रखता हूँ। तुम में कला है······और तुम्हारी कला से मुझे प्रेम है।

प्रभाती—गायक! तुम देवता हो, तुमने आज स्वीकृति देकर मेरे हृदय में वर्षों की धधकती हुई ज्वाला को शान्त कर दिया। (ताली बजाती है और उसके इशारे से एक ख़वास आकर शराब का एक कन्टर और गिलास रख जाती है। प्रभाती गिलास में शराब उडेलकर तानसेन को देती है) लो! अपनी प्रभाती के हाथ से आज इस खुशी में एक जाम पी लो।

तानसेन—(प्रभाती के मुख से देवता का शब्द सुनकर जैसे कुछ पिछली स्मृति हो आने पर उसे याद करते हुए) तुमने क्या कहा···? देवता······तो मुझे··· ··।

प्रभाती—हां हां, देवता·· ······पर यह शराब तो पिओ।

तानसेन—(फिर भूल कर) नहीं! मैंने शराब कभी नहीं पी।

प्रभाती—आज मेरे हाथ से भी नहीं पिओगे ?

तानसेन—नहीं······गाने वालों को बुरी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिये! (एक कोने में नज़र गड़ाकर देखते हुए) अरे सांप, प्रभाती ··वह देखो ··सांप!

सांप का नाम सुनकर प्रभाती के हाथ से शराब का गिलास छूट जाता है। गिरने से गिलास के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं और शराब फर्श पर फैल जाती है। प्रभाती भौंचक सी चारों ओर देखते हुए पूछती है—कहां है सांप ? तानसेन तभी पास में रखी एक बाँसुरी उठाकर बजाने लगते हैं धुन सर्प नृत्य की है, जो इतनी मीठी और मस्त है कि प्रभाती के पांव आप ही आप उठ जाते हैं और वह हँसती हुई कहती है —

प्रभाती—अच्छा, यह बात है······देवता की यह भी एक अदा है।

तानसेन—(बांसुरी बजाना बन्द करते हुए) प्रभाती! इस बाँसुरी के सात सुरों की आवाज़ कहां से निकली, यह भी तुमने कभी जानने का प्रयत्न किया ?

प्रभाती—मुझे इनकी जरूरत नहीं पड़ी गायक ! मैं नाचने वाली, मुझे इन स्वरों की उत्पत्ति से क्या मतलब ?

तानसेन—ऐसा न कहो प्रभाती ! नृत्य और स्वरों का एक विशेष सम्बन्ध है। मैं स्वरों उत्पत्ति तुम्हें समझाता हूँ:—

जानो षड्ज मयूर ते, चातक रिषभहि मान।
तानसेन संगीत मत, कहो जो जिय में जान ॥
अजा सुरते गंधार है, क्रौंच ते मध्यम होइ।
तानसेन सङ्गीत मत, कहो सुरनि मुनि लोइ ॥
पिकते पंचम होत है, धैवत दादुर भाषि।
तानसेन सङ्गीत मत, कहो सो मन में राखि ॥
गज ते कहो निषाद सुर, अंकुस लगते होइ।
तानसेन सङ्गीत मत, जानो बुधि जन सोइ ॥

जैसे-जैसे तानसेन उपरोक्त कविता गाते जाते हैं, वैसे-वैसे जिस जानवर की बोली से स्व पकड़ा गया है, उसकी नक़ल करते जाते हैं। नक़ल ऐसी प्राकृतिक होती है, जिसे सुनकर मालुः होता है कि वास्तव में उस जानवर की बोली से ही यह स्वर उत्पन्न हुआ है। प्रभाती तानसेन सङ्गीत का इतना विशाल ज्ञान देखकर चकित रह जाती है, वह शोख़ी से हँसते हुए कहती है:—

प्रभाती—तो गायक तुम कवि भी हो और जानवरों की बोली भी बड़ी सुन्दरता से बोलते हो। हम एक बोली बोलते हैं, तुम उसकी नकल करोगे ?

तानसेन—हो सका तो·········!

प्रभाती गधे की बोली की नक़ल करती है और उसकी पुनरुक्ति करने के लिए कहती है

तानसेन—(मुस्कराते हुए) यह नक़ल तो तुम्हें ही मुबारक रहे (ज़ोर से हँस देता है)··

प्रभाती—(हँसी में तानसेन का साथ देते हुए और अङ्गड़ाई लेते हुये) देवता···आज न जाने क्यूँ·········ये फिर ही नशा चढ़ रहा है···········जी चाहता है अपने देवता पर··············।

एक ख़्वास—(सङ्गीत गृह में प्रवेश करते हुए) प्रभाती ! तुम्हें महारानी जोधाबाई याद फर्मा रही हैं।

प्रभाती—(तानसेन को सम्बोधित करते हुये) अच्छा देवता ·····अब मैं जाती हूँ······ फिर कभी·········।

प्रभाती चल देती है। तानसेन उसे दरवाज़े तक पहुँचाने जाते हैं, मगर सोच में पड़ जाते हैं······देवता······तो······मुझे रागिनी कहा करती थी·······न जाने बेचारी किस हाल में होगी। तभी वीरमण्डल वहाँ आ जाता है और जाती हुई प्रभाती को कड़ी दृष्टि से देखता है तानसे

वीरमंडल—तानसेन ! अब तुम बहुत आगे बढ़ चुके हो, मेरी इज्जत, मेरा नाम छीनकर अब तुम मेरी मझेनर को भी छीनना चाहते हो ? मैंने तुम्हारी सारी बातें छुपकर सुनली हैं···तुम प्रभाती को मक़नातीस की तरह खींच रहे हो···।

तानसेन—वह अपने आप मेरी ओर आकर्षित हो रही है, तो इसमें मेरा क्या दोष है ?

वीरमंडल—तुम्हारा बहुत कुछ दोष है तानसेन ! तुमने सारे महल पर जादू कर दिया है। जहाँ सुनो तुम्हारी चर्चा है, जिसकी जुबान पर सुनो तुम्हारा ही नाम है। तुमने सब दरबारी गाने वालों का नाम मिट्टी में मिला दिया है। आलमपनाह अब हमारी किसी की भी बात तक नहीं पूछते।

तानसेन—यह आलम पनाह से जाकर कहो, वह तुम्हारी शिकायत ज़रूर सुनेंगे।

वीरमंडल—बनाने की कोशिश मत करो तानसेन ! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि तुम हम सब के हित के लिए जहाँ से आये हो वहीं वापिस लौट जाओ। तुम मुँह माँगा इनाम भी पा चुके हो।

तानसेन—अब यह मुमकिन नहीं हो सकता वीरमंडल ! आलमपनाह और महारानी जोधाबाई मुझ पर इतना प्रेम करते हैं कि उनकी आशाओं को ठुकरा कर मैं अब वापिस नहीं जा सकता······वेही मुझे जवाब दे दें, तो दूसरी बात है········।

वीरमंडल—तानसेन देखो ! इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। यह नहीं हो सकता कि हम काँटों पर चलें और तुम फूलों की सेज पर मौज उड़ाओ।

क्रोध में दांत पीसता हुआ वीरमण्डल वहाँ से चला जाता है और तानसेन फिर सोच में पड़ जाते हैं···रागिनी···देवता ···प्रभाती···और गट से उनका सर चौखट से टकराता है।

दृश्य ७

अकबराबाद के कूचे में वीर-मण्डल का मकान।

मकान राजपूती और मुगल मिश्रित कारीगरी का बना हुआ है। उसमें बड़ी-बड़ी बारादरी और आलीशान कमरे हैं। एक विशाल कमरे में वीर-मण्डल और अन्य दरबारी गायक बैठे हैं। एकत्रित जन इस भांति गम्भीर नजर आ रहे हैं, मानो किसी समस्या में उलझे हुए हैं।

वीरमंडल—चाँदखाँ! मैंने तानसेन को समझाया भी और धमकी भी दी, मगर वह न माना और न अपने घर लौट जाने पर राजी हुआ।

चाँदखाँ—बात यह है वीरमंडल! आलमपनाह ने उसे मुँह क्या लगा लिया है, उसके दिमाग आसमान पर पहुँच गये हैं।

नजीर—मुँह लगाया डोम, गाये ताल बेताल।

शिवनारायण—तानसेन को इस तरह कोसने से क्या मिलेगा नजीर? उसे अपने रास्ते से हटाने की कोई तरकीब सोचनी चाहिए।

नजीर—तुम हुक्म दो तो उसे एक दिन में साफ करदूं! 'न रहे बांस न बजे बांसुरी।'

रामबख्श—'यह मुँह और मसूर की दाल!' उसे कत्ल करना क्या आसान समझा है?

नूरशाह—वह चौबीस लहमे, आलमपनाह की पनाह में रहता है। उस पर हाथ डालने के लिये छप्पन हाथ का कलेजा चाहिए, छप्पन हाथ का! समझे!

नजीर—तो हम क्या कम हैं? हमारे वालिद तो शेर को पंजों से तोड़ लिया करते थे।

नूरशाह—मियाँ मुलतानी, तुम में भी कुछ दम है। फूँक मारूँ तो जमना के उस पार जाकर गिरोगे।

नजीर—अच्छा! यह बात है तो होजाये पंजा पकड़! महज गाने वाला मत समझना, क्या! सात बकरे काटकर रोज खाता हूँ।

वीरमंडल—(बीच में पड़कर) अरे पागलो! छोड़ो इस आपस के झगड़े को। यह लड़ने का वक्त है? हमें तानसेन को नीचा दिखाने की तरकीब सोचना है, आपस में फना होने की नहीं।

जगन्नाथ—वीर मंडल! मेरे दिमाग में एक तरकीब आई है, मेरे बाबा कहा करते थे, बेटा जहाँ गुड़ देने से काम निकले वहाँ जहर मत देना।

वीरमंडल—ठीक-ठीक, मैं समझ गया! तानसेन की शोहरत का खात्मा करने के लिये, हमें उसे सब जगह जलील करना चाहिए।

मुरतसेन—और शहन्शाह अकबर की निगाह में उसकी तौकीर घटानी चाहिये।

जगन्नाथ—इसके लिये हमको मौसीकी के मुताल्लिक एक आम जलसा करना होगा, जिसमें तानसेन को बुलाकर, खलकत की निगाह में उसे जलील किया जावे।

शिवना०—लोगों पर ज़ाहिर किया जावे कि तानसेन महज़ अपने गले के सोज़ की वजह से बादशाह का मुक़र्रब बन गया है, वर्ना राग-रागिनियों के फ़न से उसे कोई वास्ता नहीं। वह दरबारी गवैया होने के लायक़ नहीं, उसे नौरतन के रुतबे से ख़ारिज किया जावे।

बलदेव— अजी हज़रात! इन ख़याली पुलाओं में क्या रखा है? साँप का सर कुचलना ही ठीक है।

नज़ीर— यही तो मेरा भी रोना है! दुश्मन को ज़लील करने की निस्बत, उसको ख़त्म करना ज़्यादा मौज़ूं होता है।

वीरमंडल-यह नहीं! आम जलसा किये जाने का जो मशवरा है, वही मुनासिब है। शोरक्षिलियों की। तरह तानसेन को मारने की तरकीब से कुछ हासिल नहीं हो सकता।

बलदेव— मेरी राय में कुरा अन्दाजी करली जाये और जिस बात की शहादत में ज़्यादा परचे निकलें, बस उसी पर अमल किया जावे।

सूरतसेन-कुरा अन्दाजी के बजाये हाथ उठाकर राय लेना ज़्यादा मोअस्सर होगा।

वीरमंडल-अच्छा! कौन-कौन लोग तानसेन के क़त्ल की मुआफ़क़त में हैं और कौन आम जलसे की ताईद करते हैं?

एकत्रित गवइयों में से अधिक संख्या में आम जलसा किये जाने के पक्ष में हाथ उठा देते हैं। क़त्ल के पक्षपाती लोग लज्जित से हो, आप ही आप अपने हाथ नीचे गिरा लेते हैं।

वीरमंडल—देखा आप लोगों ने? जलसे वाली सलाह ही माक़ूल रही...(थोड़ा रुककर) देखो जगन्नाथ! तुम १५ तारीख़ को ख़ुलक़त का एक आम जलसा किये जाने का ऐलान कर दो और लोगों पर यह भी ज़ाहिर कर दो कि इस जलसे में इल्म मौसीक़ी के उन बारीक़ नुक़ात पर बहस की जावेगी, जो उनके वहम और ख़्याल में भी न होंगे।

जगन्नाथ—तो ठीक है, अब मैं इज़ाज़त चाहता हूँ।

सब—हां-हां, हम लोग भी इन्तज़ाम के लिये अब अपने-अपने घर जायँगे।

सब लोग उठ खड़े होते हैं और वीरमंडल उनको पहुँचाने के लिये दरवाज़े तक आता है।

दृश्य ८

रागिनी शिवलिङ्ग के सन्मुख हाथ जोड़े प्रार्थना कर रही है। उसका चेहरा उदास है, तानसेन की प्रतीक्षा करते-करते, उसका हृदय बहुत दुखी होगया है।

रागिनी—हे दीनबन्धु! सङ्कट पड़ने पर तुमने सब की सहायता की है......तुम्हारा नाम विश्व के कोने-कोने में याद किया जाता है। तुम घट-घट के वासी हो, मुझे भी निवारो .....मेरे हृदय की कहानी तुम से छुपी नहीं है भगवन्......मेरे पिता ने जीवन भर तुम्हारी सेवा की......उनके मरने के पश्चात मैं निसहाय रह गई। तुमने अपना कोप मुझ पर डाला, और फिर देवता स्वरूप तानसेन को भेजकर, गांव की लाज बचाई, मन्दिर की रक्षा कराई और मुझ अभागिन के हृदय में प्रेम की गांठ बांध दी......और जब मैंने तानसेन को अपने मन के सिंहासन पर बैठा लिया तो तुमने मुझसे उन्हें छीन लिया और मेरे तन बदन में आग लगा कर मेरे आनन्द का झोंपड़ा फूंक दिया......अब मैं क्या करूँ भगवान......मुझे रास्ता दिखाओ......(बिलख बिलख कर रोने लगती है)

सूरदास—(मन्दिर मे प्रवेश करते हुये और रागिनी के रोने का शब्द सुनकर) रागिनी... ओ बेटी रागिनी! यह क्या है......आखिर तेरा यह हर समय का रोना-धोना कब बन्द होगा?

रागिनी—बाबा! मैं तो हर घड़ी मन को समझाती रहती हूँ......!

सूरदास—(बीच ही मे बात काटकर, जैसे कुछ याद सा आगया हो) अरे हां रागिनी...... तूने कुछ सुना?

रागिनी—(उत्सुकता से) क्या बाबा......

सूरदास—मन्दिर के निकट गांव वाले, पञ्चायत में तेरे विवाह की बात छेड़ रहे हैं।

रागिनी—मेरे विवाह की? मगर मैं तो विवाह नहीं करना चाहती।

सूरदास—पर इस से क्या! माधो कह रहा था, अब रागिनी जवान होगई है, उसके विवाह की जिम्मेदारी हम सब गांव वालों पर है।

रागिनी—माधो और क्या कह रहा था?

सूरदास—तू खुद चलकर उसकी बातें सुनले न बेटा।

पट परिवर्तन

सूरदास और रागिनी दोनों छुपते-छुपते मन्दिर के बाहर जाते है, जहां मैदान में गांव की पंचायत जमी है। दोनों एक घने वृक्ष की आड में छुपकर पंचायत का वार्तालाप सुनते है।

नरोत्तम—पुजारी शिवदास की मरते-मरते कितनी प्रबल इच्छा थी कि अपनी

अकेली कन्या रागिनी का विवाह अपनी आंखों के सामने करजाय।

गङ्गादीन–पर चाहना सब की पूरी कहां करता है भगवान!

मूलचन्द—मगर उसकी आत्मा को शान्ति पहुँचाना तो हमारा कर्तव्य है। इसलिये हम सब को चन्दा करके रागिनी का विवाह किसी अच्छे घर से कर देना चाहिये।

तोताराम–(वृद्ध अवस्था के कारण खांसते हुये) देखो पंचो! हमारे गांव की कन्या किसी अच्छे घर ही जाये।

माधो— पर कोई अच्छा वर मिले तो……!

मुन्शी०—अजी ज़मींदार साहब! संसार में लड़कों की क्या कमी है, ढूंढ़ने से तो परमात्मा भी मिलजाता है।

माधो— तो तुम्हारी नज़र में कोई अच्छा वर है?

मुन्शी०—है क्यूं नहीं, गङ्गापुर के ज़मीदार के बेटे मनोहर से अच्छा जोड़ा रागिनी के लिये और कौन पैदा होगा? जमीदार के घर में धन तो ऐसे लोटता है, जैसे गेहूँ चावल। नौकर चाकर की भी कोई कमी नहीं। रागिनी सारे गांव पर राज करेगी, राज!

सूरदास—(जो छुपकर अब तक बातें सुन रहे थे, अब अधीर होकर, पंचायत की ओर जाते हुए) माधो भइया! यह न हो सकेगा। रागिनी के बिना पूछे कहीं सम्बन्ध जोड़ना ठीक न होगा। तुम लोग क्या जानो, रागिनी के हृदय की बात………!

माधो—आओ आओ भइया सूरदास! पंचायत में तुम्हारी ही कसर थी।

सूरदास—मैंने क्या कहा माधो……सुना तुमने…वर पसन्द करते समय रागिनी की स्वीकृति जरूर लेनी होगी।

माधो— कैसी बातें करते हो सूरदास? पुरखों की रीत कहां मिटाई जा सकती है?

तोताराम–कहीं कन्या इतनी निर्लज्ज हो सकती है कि वर आप पसन्द करें।

मुन्शी०—अरे राम-राम! भइया सूरदास की बातें तो ज़रा कोई सुनो।

सूरदास—पर मेरी कोई सुनो तो। रागिनी तो………

माधो— अजी सूरदास चुप भी रहो, पंचों की सलाह सो परमेश्वर का हुकम! "पाँच पंच परमेश्वर………

तोताराम–तो भइया माधो! तुम जाकर मनोहर को देख आओ और बात पक्की करलो।

माधो— मैं कल ही भोर यहां से चल दूंगा। बात पक्की ही समझो!

नरोत्तम—तो गांव वाले फिर विवाह की तय्यारी करें।

माधो— ज़रूर-ज़रूर!

पचायत विसर्जित हो जाती है। गाव के लोग अपनी-अपनी झोंपड़ियों की ओर चल देते हैं। सूरदास भी निराश हो, पेड़ की ओर जहां रागिनी छुपी खड़ी थी, लकड़ी का सहारा लिये बढ़ते हैं।

रागिनी पंच लोगों का निर्णय सुनकर सर पकड़ कर वहीं पेड़ के नीचे बैठ जाती है। और तभी गाव का एक ग्वाला, गइयों को हांकता हुआ गाता निकल आता है।

कोयलिया क्यों बैठी चुपचाप ?
क्यों बगिया पर डाल उदासी, रोवत अपने आप। कोयलिया···!
फूलखिले, फुलवारी फूले, क़दम-क़दम पर सुध बुध भूले।
जोबन के मदमाते जुग में, गुम सुम रहना पाप। कोयलिया···!
कूक सुनादे, हूक जगादे, तन मन की सब भूक मिटादे।
फूलों की दुनियां का सजनी, यह सुमिरन यह जाप। कोयलिया···!

(सुदर्शन)

दृश्य ८

(मुगल प्रासाद से थोड़ा हटकर एक मैदान)

मैदान मे एक विशाल पंडाल लगा है। पण्डाल मे सहस्रों आदमी एकत्रित है। बहुत से अन्दर स्थान न होने से पंडाल को बाहर से घेरे खड़े है। पण्डाल के मध्य मे एक ऊँचे, बड़े तख्त पर समस्त दरबारी गवइये और तानसेन बैठक जमाए है। सभापति का आसन मोहतमिद जल्पा निज़ाम उद्दौला ने, जो तानसेन के विरुद्ध अन्य दरबारी गवइयो से जा मिले है, ग्रहण किया है। जनसमूह में स्तब्धता का राज्य है और सबकी निगाहें आज की तानसेन की हार जीत पर लगी है।

निज़ाम उद्दौला करतल ध्वनि के साथ खड़े होते है।

निज़ाम उद्दौला—चन्द रोज़ हुए, बीरमंडल और दीगर दरबारी गाने वालों ने मुत्तफ़का तौर पर आलमपनाह के रुबरु, एक जल्से में तानसेन से मौसीकी पर बहस किये जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर करते हुए, उसकी मंजूरी चाही थी चूँकि आलम पनाह ऐसे जल्सों, तकरीरों और बहस के मौकों को पसन्द ख़ातिर फ़रमाते हैं। इसलिए ममदूह आलिया ने इस जल्से की मंजूरी अता फरमादी और खुद शिरकत मे मजबूरी का इज़हार करते हुए यह इरशाद फरमाया कि जलसे के अंजाम की इत्तला मावदौलत को दी जावे।

अब मैं माहरीने मौसीक़ी से इल्तजा करूँगा कि वह तानसेन से जवाब सवाल करें।

निज़ामउद्दौला अपने स्थान पर बैठ जाते है। और चाँदखाँ तानसेन को गर्व के साथ सम्बोधित करता हुआ प्रश्न करता है, मानो एक ही प्रश्न में वह तानसेन को पराजित कर देगा।

चाँदखां—तानसेन! क्या तुम मौसीकी की सही तारीफ़ कर सकते हो?

तानसेन—ज़रूर (थोड़ा रुक कर) संगीत वह इल्म है, जिसमें नग़मे और लै के मुनासिक और आवाजों के उतार चढ़ाव, उनकी गर्मी, उनकी नाराज़गी, उनकी खुशी और उनके ग़म की मुनासबत और फ़र्क की तरतीब और उनके दरम्यान जो निसबत है, उससे बहस की जाये। इस इल्म का मज़मून वह आवाज़ है, जो अपने निज़ाम के एतबार पर इन्सानी जज़बात पर असर पैदा करे।

इल्मे मौसीक़ी वह चीज़ है, जिससे न सिर्फ जानवर, बल्कि फूल पेड़ पत्तियां और बेजान चीज़ मसलन पत्थर वग़ैरह भी मुतासिर हों। मैं समझता हूं जो आदमी इससे लुत्फ और लज़्ज़त न ले वह आदमी ज़रूर है पर आदमियत से ख़ाली है। इससे तीनों लोक, पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग के रहने वाले खुश होते हैं।

नजीर—मौसीकी के आम असरात क्या हैं ?

तानसेन—मौसीकी हर किस्म के जज़बों को उभार देती है। ख्वाह वह खुशी से मुताल्लिक हों या रञ्ज या लड़ाई से। प्रेम के भावों में तो यह विद्या विशेष रूप से आग लगा देती है। बच्चों, जवानों और बूढ़ों पर एकसा असर करती है, बहुत से मर्ज़ इससे अच्छे होते हैं। परमात्मा और खुदा की इबादत का यह सबसे बड़ा साधन है।

मौसीकी का असर आग 'पानी' हवा और बादल भी लेते हैं। जब गाने वाले की मस्ती का आलम होता है तो दरख्त झूमने लगते हैं, पत्ते गिरते हैं, फूल झड़ते हैं, पत्थर पिघल जाते हैं, आग लगकर चिराग रोशन हो जाते हैं और ठण्डी हवा चल कर पानी बरसने लगता है।

सङ्गीत के असर से लोगों को हँसाना, रुलाना और सुला देना मामूली बात है, जिसका तमाशा आप लोग सङ्गीत के मुकाबले में अपनी आँखों से देख ही चुके हैं।

जगन्नाथ—फनूने लतीफा में मौसीकी का दर्जा सब से ऊँचा क्यूँ है ?

तानसेन—इसलिए कि साहित्यक अपने ख्यालात के असरात सिर्फ लफ्ज़ों के ज़रिये से बयान करता है। पुतला बनाने वाला जानदार मख़लूक की शकलों की नकलें उतार देता है। चित्रकार उनमें रङ्ग भरकर जान डाल लेता है और नाटककार अपनी तकरीर और लिखावट के ज़रिये उसको बाख्तयार और बाअसर बना देता है, मगर सङ्गीतकार अपनी विद्या से अन्दरूनी भाव विचार और कैफियत को बड़ी खूबी और नज़ाकत से ज़ाहिर करता है।

नूरशाह—हिन्दुओं के मुताबिक, मौसीकी की ईजाद किसने की ?

तानसेन—पुरानी सङ्गीत किताबों और पुराणों में लिखा है कि भगवान विष्णु की नाभि से कमल पैदा हुआ और कमल से ब्रह्माजी। कमल के आसन पर बैठे हुए ब्रह्मा जी सोच रहे थे कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ कहां से और क्यूँ कर पैदा हुआ। वह इस ख्याल ही में थे कि उनके अन्दर अनाहत पैदा हुई और वह बाहर आकर आहत बनी। ब्रह्माजी ने उसे महसूस किया और बाद में उसका अमली तर्जुमा करते रहे। उसके असर से चारों वेद ऋग, यजुर, अथर्व व साम प्रगट हुए। साम वेद से सङ्गीत की पैदाइश हुई और ब्रह्माजी उसे गाकर बहुत प्रसन्न हुये।

रामबख्श—तानसेन ! यह आहत-अनाहत क्या चीज़ है ?

तानसेन—असल में आवाज़ को नाद कहते हैं और यह दो लफ्ज़ों से मिलकर बना है, 'ना' और 'दा' से। 'ना' के मानी हैं पवन यानी हवा के मगर वह हवा जो मुँह के ज़रिये अन्दर जाती और आती है। 'दा' के मानी गरमी के हैं। गरमी और हवा से मिलकर जो आवाज़ पैदा होती है उसे नाद कहते हैं।

इसकी दो किस्में हैं, आहत और अनाहत। आहत वह आवाज़ जो टकर से पैदा हो और अनाहत वह आवाज़ जो अन्दर पैदा हो। मेरा एक दोहा दोनों के फ़र्क के लिये बिलकुल साफ़ है:—

नाहत बाजत आपु ही, आहत टक्कर खाइ।
तानसेन सङ्गीत मत, इन्ह के कहे सुभाइ॥

शिवना०—तान और मूर्छना में क्या फ़र्क है ?

तानसेन—मूर्छना में आरोही और अवरोही का सिलसिला लाजमी है और सुरों का भी। मगर तान में इन दोनों बातों की ज़रूरत नहीं होती। मूर्छना का मतलब तो यह है कि सुरों के आरोह अवरोह साथ साथ हों और एक सुर से दूसरे सुर तक के फ़ासले को ऐसी खूबी से पूरा करे कि कोई दूसरा सुर भी पैदा न हो और सुर का रूखापन भी जाता रहे। दूसरी तरफ़ तान का मकसद यह है कि राग में घटाव और बढ़ाव हो। तान तीन सुरों से कम नहीं हो सकती और वह आरोह भी सकती है और अवरोह भी।

बलदेव— सुरों की जात क्या है ?

तानसेन—खरज, मध्यम और पञ्चम ब्राह्मण हैं। रिषभ, धैवत क्षत्री, निषाद और गन्धार वैश्य और अन्तर काकली शूद्र है।

प्यारसेन—सुरों के रंग और देवताओं के नाम बता सकते हो ?

तानसेन—क्यूँ नहीं ! सुनिये, खरज का रंग लाल और देवता अग्नि है, रिषभ का रंग कजा (बिल्ली की आँख जैसा) और देवता ब्रह्मा जी हैं, गन्धार का रंग पीला और देवी सरस्वती हैं, मध्यम का रंग सफ़ेद और देवता विष्णु हैं, पंचम का रंग काला और देवता महादेव जी हैं, धैवत का रंग नारंगी और देवता गणेश जी हैं, निषाद का रंग भकसा (न्यौले जैसा) और देवता सूर्य हैं।

प्रत्येक प्रश्न का ऐसा विद्वतापूर्ण मुँह तोड़ उत्तर पाकर समस्त दरबारी गवइये परास्त हो जाते हैं और आगे नया प्रश्न करने की हिम्मत उनमें नहीं रहती, थोड़ी देर खामोशी रहने से और गायकों की ओर से कोई नया प्रश्न न पूछा जाने पर कुछ लोगों के मुख से एक साथ "वाह तानसेन क्या कहने, दुश्मनों को खूब शिकस्त दी" के शब्द निकल पड़ते हैं। वीरमण्डल के मिरचें भी लग जाती हैं, और वह कुछ साहस बांधकर खड़ा होता है।

वीरमंडल-तानसेन ने संगीत विद्या के विषय में जो जानकारी ज़ाहिर की है, वह उसको उस्ताद मानने के लिए काफ़ी नहीं। अगर वह अपने गाने के असर से एक मुर्दा पौदे में जान डाल दे, तो हम लोग तसलीम करेंगे कि वाक़ई वह बाकमाल का आदमी है।

चांदखां—मौसीक़ी के आम असरात के तरह जैसा तानसेन ने रागों के अन्दर को व्यान किया है, उसकी भी सदाक़त हो सकेगी।

जनता में एक प्रकार की कानाफूंसी होने लगती है और सब इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि अब क्या होगा। तभी एक मुरझाया हुआ गुलाब का पौधा तानसेन के सम्मुख रखा जाता है और बीरमण्डल फिर एक बार तानसेन की हार का स्वप्न देखने लगता है। तानसेन भगवान का स्मरण कर बसन्त राग गाते हैं।

बसन्त !

भँवरा फूली फुलवारी कछु सुधि तोहि है कि नाहीं रे ?
मधुर ऋतु आई आज मन उमङ्ग छाई आज खेलत नर नारी रे ॥
इत उत कित डोलत भँवरा, जाओ पुहुप बास छाई रे।
भोरे सीख मान मेरी, काहे करत देरी! तू है निपट अनारी रे॥

जैसे-जैसे राग की ध्वनि बढ़ती है, वायु तेज़ चलने लगती है और थोड़ी देर में ही पौधे की सूखी डालें हिलने लगती हैं और पौधा हरा भरा होकर खिल उठता है। गुलाब का फूल भी मुस्करा देता है।

तानसेन का यह चमत्कार देखकर जन समूह उनको घेर लेता है और चारों ओर से "तानसेन ज़िन्दाबाद" और "उस्ताद जिन्दाबाद" के नारे गूंजने लगते हैं। पराजित दरबारी गवइये भी अपने मुँह छुपाकर इधर उधर कोने टटोलते फिरते हैं।

दृश्य १०

(शिवालय का आन्तरिक भाग)

सूरदास एक शिला पर चन्दन घिस रहे हैं। रागिनी पूजा की चीज़ें संजो रही है, पर उसके हृदय के भाव बहुधा आँखों तक आकर रुक जाते हैं। मन्दिर के बाहर गाँव वालों की बातों के कारण काफी शोर मच रहा है, समय संध्या समाप्त होते ही, रात आ है।

रागिनी—(फूलों को माला में, पिरोते हुए) अब क्या होगा बाबा ?

सूरदास—मेरी खुद अक़ल हैरान है बेटा ! जब अपना ही माल खोटा है, तो परखने वाले को क्या दोष दूं। यदि तानसेन यहां लौट आता, तो यह बखेड़ा ही क्यूँ होता !

रागिनी—उनकी बातें जाने दो बाबा ! अब अपने लिए कोई रास्ता ढूँढ़ निकालो। घड़ी पल बीतते ही बारात आजावेगी……मुझे वधू बनना पड़ेगा……और मेरा जीवन दूसरे के हाथ में…… (रुआनी सी होकर चुप होजाती है)

सूरदास—मैंने तो गाँव वालों को बहुत समझाया बेटा ! पर वह नहीं माने, मुझ अन्धे की एक न सुनी।

रागिनी—पर बाबा तुमने साफ़-साफ़ क्यूँ नहीं कह दिया कि रागिनी तानसेन से प्रेम करती है, वह यदि विवाह करेगी तो केवल उन्हीं से …………।

सूरदास—मैंने तो कई बार कहना चाहा रागिनी ! पर बदनामी के डर ने मेरी ज़बान पकड़ ली।

रागिनी—इसमें बदनामी की क्या बात थी, साँच को आँच ही क्या !

सूरदास—बेटी ! तू तो प्रेम के कारण पागल बनी है, तू लोक लाज को नहीं समझ सकती…………भला सोच, यदि कोई कुँवारी कन्या किसी से प्रेम करके उसे बखानती फिरे, तो उसे समाज क्या कहेगा …… ……।

रागिनी—तो बाबा ! फिर तुम मेरी बातों को क्यूँ सहन करते हो, मेरी बदनामी क्यूँ नहीं करते………।

सूरदास—बड़ी पुरानी बात है बेटा ! जब मेरे भी, तेरी तरह एक सुन्दर लड़की थी। वह एक व्यक्ति से प्रेम करती थी, जिसका मुझे ज्ञान न था। मैंने उसका विवाह दूसरी जगह ठहरा दिया, पर जब बारात आई तो मेरी बिटिया को झंझटों से छूटने का और कोई उपाय न सूझा, उसने जाने कहा से लाकर विष खा लिया और कोठरी के द्वार बन्द कर उसी में मर गई।

रागिनी—[illegible] हुआ बाबा ?

सूरदास—बारात वालों ने बड़ा ऊधम मचाया। मेरी इज्जत किरकिरी हुई और मेरी बेटी भी हाथ से गई······(उसकी आँखों से अश्रु धारा बह निकलती है।)

रागिनी—बड़ी अभागिनी थी वह कन्या बाबा!

सूरदास—हां बेटी! मगर वही घटना आज तेरे साथ भी बीत रही है। मेरी समझ में कुछ नहीं आता मैं तेरे हित के लिये क्या उपाय करूँ······?

रागिनी—मैं अबला हूँ, क्या सोचूँ बाबा?

सूरदास—तेरे पिता ने भी एकबार मुझसे कहा था कि सूरदास अगर मेरी आँख मिच जावें तो तू रागिनी को अपनी बेटी के समान पालना·········और आज मैं उनके वचन को भी पूरा नहीं कर रहा ······।

मन्दिर के बाहर तुरई और ढोल की आवाज़ सुनाई देती है, जिसे सुनकर रागिनी चौंक-सी जाती है।

रागिनी—बाबा! अब मैं क्या करूँ······भगवान मुझे रास्ता दिखाओ······(थोड़ा रुककर) कुछ सूझता नहीं···(फिर जैसे मस्तिष्क में कुछ लहर सी दौड़ जाती है) बाबा! इस विवाह से बचने का बस एक ही उपाय है····· ······यहाँ से भाग चलो ·····बाबा······।

सूरदास—(चौंक कर) भाग चलो······मगर रागिनी! यह कैसे हो सकेगा? गांव वाले क्या कहेंगे? बाराती नाराज़ होकर लौटेंगे और हमारी इज्जत······

ढोलों की आवाज़ ज़ोर-ज़ोर से सुनाई देने लगती है। रागिनी बहुत घबरा जाती है वह वहां से दौड़कर, एक खिड़की के पास पहुँचती है और बाहर झांकने लगती है, उसका हृदय कुछ ठीक निश्चय न होने से धकधक कर रहा है।

मन्दिर का बाहरी हिस्सा बहुत सुन्दर रीति से सजा हुआ है। चारों ओर पत्तों की झण्डियाँ लगी हैं। स्थान-स्थान पर दीप रखे हैं, गांव वाले सज-धज के साथ चारों ओर जमा हैं, एक अच्छी खासी चहल-पहल है। माधो भी इन्तज़ाम में ऐसा व्यस्त है, मानो उसकी निजी कन्या का विवाह होरहा हो बारात को दूर से आती देखकर वह कुछ घबरा-सा जाता है।

रागिनी खिड़की में खड़ी माधो की बातें सुनती है।

माधो— अरे रूपा! बारात सर पर आ गई और अभी तक रागिनी तैयार नहीं हुई!

रूपा— जमींदार भइया! मैं दो बार मन्दिर के द्वार खटखटा आया, पर अन्दर से दरवाज़ा बन्द होने से कुछ पता नहीं चलता।

माधो— जा, एक बार फिर देख आ! शायद रागिनी विवाह के कपड़े पहिन रही हो।

रूपा चला जाता है और किशन दौड़ा हुआ आता है।

किशन— जमींदार साहब! मैं कोस भर जाकर पहिले ही बारात दे[illegible]। मनोहर और रागिनी का जोड़ा इतना सुन्दर रहेगा [illegible]

दृश्य—१०

... गई और ... भीतक रागिनी तैयार नहीं हुई।
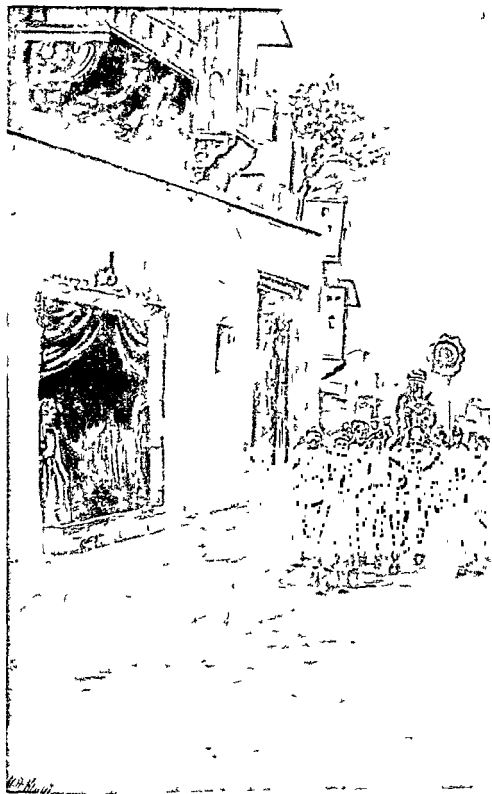
बेदा— (जो पास में बैठा था) मैंने तो तुमसे पहिले ही कहा था, रागिनी बिटिया के भाग खुल गये। सोने में पीली रहेगी।

माधो— बेदा, छोड़ इन बातों को! जा कुछ बिछात की व्यवस्था कर……बारात घर पर आ रही है……।

बारात बिलकुल समीप आ जाने से ग्राम की स्त्रियां अपने-अपने घरों से बाहर वर की आरती करने निकल आती हैं। रागिनी यह दृश्य देखकर पागल सी हो जाती है और तेज़ी से सूरदास की ओर भागती है।

रागिनी—(हांपते हुए) बाबा! अब सोचने का समय नहीं रहा, यदि मुझे भी अपनी कन्या की तरह खो देना चाहते हो तो दूसरी बात है……नहीं तो उठो, जल्दी यहां से भाग चलो……रूपा किवाड़ों को तोड़े डाल रहा है।

सूरदास—(कुछ न समझते हुए कि क्या करें) अच्छा बेटी! चल तेरी इच्छा……… (उठ खड़ा होता है) जा पिछले दरवाजे पर जाकर खड़ी होजा, मैं भी जाकर रामा की गाड़ी ले आता हूं।

रागिनी—(ढोलों की आवाज़ बढ़ती देखकर) बाबा! जल्दी करो…………मुझे उनकी आवाज बुला रही है……देवता मुझे राजा की राजधानी आने का संकेत दे रहे हैं। चलो बाबा जल्दी करो……चलो ……।

सूरदास शीघ्रता से जाकर मन्दिर का पिछला दरवाज़ा खोल उसमें से निकल जाते हैं और रागिनी दरवाजे पर आकर खड़ी हो उनकी बाट जोहने लगती है, उधर बारात चढ़ रही है। शिवलिङ्ग पर एक विशेष प्रकार की ज्योति दृष्टिगोचर होती है। मन्दिर के बाहर ढोल और बाजे ज़ोर-ज़ोर से बजने लगते हैं।

नज़ीर— तुम्हारा तो सर फिर गया है वीरमण्डल! जो बात सोचते हो अनोखी। कुछ तो आम जलसा करके दुश्मन को जीत लिया और अब दीपक राग गवा कर उस को मारना चाहते हो। मैं पूछता हूँ दीपक राग से तानसेन पर क्या असर होगा?

वीरमं०—तुम भी कहोगे नज़ीर हम पांचवे सवारों में हैं, दरबारी गायक बनगये मगर इतना नहीं समझते कि दीपक का क्या असर होगा।

चांदखां और नज़ीर-(एक साथ) यह तो हमें भी नहीं मालूम वीरमण्डल!

वीरमं०—दीपक गाने से तानसेन के जिस्म में से आग के शोले निकलने लगेंगे, वह उसकी आतिश से जल भुनकर खाक हो जायगा—यही उस राग का असर है।

गाने का ऐसा चमत्कारी प्रभाव सुनकर जगन्नाथ, नज़ीर और चांदखाँ खुशी के मारे नाचने लगते हैं और वीरमण्डल को बीच में घेर लेते हैं।

वीरमं०—(सब को हटाते हुए) अभी एक सवाल मुझे और परेशान कर रहा है।

चांदखां—वो क्या?

वीरमं०—मेरी मंगेतर प्रभाती बेतरह तानसेन पर मर रही है, उसे तानसेन के पंजे से और छुड़ाना चाहता हूँ······(क्रोध में) यह मैं कभी बरदाश्त नहीं कर सकता कि मेरी होने वाली बीवी रक़ीब के पहलू को गरम करती रहे और मैं खामोश रहूं।

नज़ीर— इसका इलाज मेरे पास है।

वीरमं०—(उत्सुकता से) क्या?

नज़ीर— वालिद माजिद का तैय्यार किया हुआ मोहब्बत का एक सफ़ूफ़ मेरे कब्ज़े में है। उसकी एक चुटकी बस माशूक़ पर डालो और वह तुम्हारा गुलाब है, कभी पीछा छोड़दे तो मूँछ मुड़वा दूं।

वीरमं०—(हताश सा होकर) फिर वही बात, वही पागलपन!

नज़ीर— पागलपन नहीं बल्कि हक़ीक़त! किसी तरह मौक़ा पाकर प्रभाती पर सफ़ूफ़ की एक चुटकी तो डालदो और फिर तमाशा देखलो।

वीरमं०—मगर जनाने महल तक पहुँचना तो दुशवार है।

चांदखां—यह कौन मुश्किल बात है। किसी कनीज़ को एक अँगुश्तरी पेश करदेना बस सब काम ठीक हो जायगा।

जगन्नाथ—ख्याल तो बुरा नहीं, वीरमंडल! आज़मा कर देखलो न, क्या हर्ज है।

वीरमंडल-अच्छा···सोचूँगा···लो अब सब हुक्का तो नोश करो, कब का ठण्डा हो रहा है।

वीरमण्डल और अन्य सभी लोग एक-एक करके हुक्का गुडगुडाने लगते है और उसके धुवे में भविष्य के सपने देखने का प्रयत्न करते हैं।

दृश्य ११

मुगलप्रासाद में तानसेन के रहने का निवास स्थान।

सम्राट अकबर ने कृपालु होकर तानसेन को अपने महल में ही रहने के लिये जगह दे दी है तानसेन उसी के एक कमरे में जहाँ कई प्रकार के यन्त्र एकत्रित हैं, कुछ खोये हुए से एक धुन गुनगुना रहे हैं:—

"मरी विसराय दियो, मोहे पिया।"

पिया शब्द दोहराने में उन्हें बड़ा आनन्द आ रहा है। और बार-बार वीणा के तारों को झङ्कारते हुए पिया···पिया पुकार उठते हैं, सहसा उनके कानों में कमरे के बाहर एक कनीज़ और मालिन की बातों की आवाज़ सुनाई देती है।

कनीज़— अरी मालिन! आज कैसे मुरझाये हुए फूल लाई है? शाहज़ादा साहब तो इन्हें बगैर सूँघे हुए ही फेंक देंगे।

मालिन—क्या करूँ बीबी!···रात देर तक जगी थी, सुबह फूल तोड़ने न जा सकी।

कनीज़—क्यूँ, रात क्या हुआ था, माली ने छेड़ा था?

मालिन—बीबी! तुम तो हँसी करती हो··· ···पर तुम से बात भी क्या छुपाऊँ····· जो हार मैंने शाहज़ादा साहब के लिये गूँथा था, वह सुन्दर होने से माली ने ले लिया। कहने लगा, मालिन तू जितनी देर को महल जायेगी यह हार मुझे तेरी याद दिलावेगा मुझे बड़ा चैन मिलेगा, इससे।

कनीज़— फिर तूने क्या कहा?

मालिन—मैंने कहा जब मैं जिन्दी मौजूद हूं तो हार को लेकर क्या करोगे, हार तो मुरझा जायेगा। वह मेरी याद कब तक दिलायेगा, पर वह नहीं माने झगड़ते ही रहे। सारी रात सोने नहीं दिया·····।

कनीज़— नई शादी हुई है न मालिन तेरी। अभी यह बात है, पुरानी पड़ने पर सामान की गठरी की तरह तू भी घर में पड़ी रहेगी।

मालिन—ऐ हटो भी·····! (शरमाती हुई) बीबी! तुम्हें मेरे सर की सौगन्ध, जो आज की बात किसी से कहो।

मालिन और कनीज़ दोनों अपने-अपने रास्ते चली जाती हैं, तानसेन को उक्त वार्तालाप सुनकर ऐसा ज्ञात होता है मानो उनके हृदय पर किसी ने घूँसा मार दिया हो, और उनके दिमाग को अन्दर से कुरेदकर कोई भूली याद दिला रहा हो। वह उठकर आले में रखी एक डिबिया को खोलते हैं, जिसमें एक हार के मुरझाये हुए कुछ फूल के टुकड़े उन्हें मिलते हैं, तानसेन बेसाख्ता उन टुकड़ों को चूम लेते हैं और उनकी अन्तरात्मा उनको कुछ सन्देश देती हुई सुनाई देती है।

"देवता! फूल मुरझा जायगा पर प्रेम नहीं मुरझाता, वह अमर है। जब तक इस हार में जुड़ी हुई अन्तिम पङ्खड़ी तुम्हें मिलेगी, मेरा प्रेम तुम्हें मेरी याद दिलाता रहेगा।'

तानसेन की आँखों से आँसू की चन्द बूँदें गिर पड़ती हैं।

तानसेन—रागिनी ! वास्तव में, मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ, मुझे माफ़ कर दो………! तुमने सच कहा था राजा की राजधानी बड़ी विशाल बस्ती है………वह मुझे निगल जायगी। उसके आनन्द और ऐश्वर्य में पड़कर मैं तुम्हें भूल जाऊँगा……मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ। रागिनी……मुझे माफ़ करदो…… (फिर थोड़ी सी याद करके) कितने अच्छे थे वह दिन……जब हम और तुम स्वतन्त्रता से ग्राम के प्राकृतिक वातावरण में हँसते और खेलते थे……… शिवालय का भारी दीप जलने से तो तुम मेरी बन गई थीं……(फिर याद करके)……रागिनी ! मैंने तुम्हें वचन दिया था कि सङ्गीत का मुक़ाबिला समाप्त होते ही मैं जल्दी लौट आऊँगा……परन्तु मैं अपना वचन पूरा न कर सका……(ज़रा जोश में आकर और फूलों के टुकड़ों को पुनः चूमते हुए)… पर रागिनी ! मैं आज ही आलमपनाह से वसन्त उत्सव के बाद जाने की आज्ञा मागूँ गा……मुझे उम्मीद है, वह इन्कार नहीं करेंगे……और फिर मैं तुम्हारे पास…………।

कनीज़—(वही जो मालिन से बात कर रही थी, तानसेन का खाना अन्दर लाते हुए) गायक, माफ़ करना ! मैंने तुम्हारे ख़्यालात में दख़ल-अन्दाज़ी की……मुझे यह खाना लाना था।

तानसेन—यशोदा ! क्या तुमने मेरी बातें सुन ली हैं ?

यशोदा—(खाने का थाल रखते हुए) नहीं गायक ! मुझे नहीं मालूम, तुम क्या कह रहे थे, तुम शायद आप ही आप बातें कर रहे होगे।

तानसेन—यशोदा ! तू मेरी राज़दार है, तुझे मेरी सब बातें मालूम हैं, अच्छा तुझसे एक बात पूछूँ ?

यशोदा—कहो गायक !

तानसेन—प्रभाती क्या हक़ीक़त में मुझसे प्रेम करती है ?

यशोदा—एक दिन प्रभाती मुझसे बातें ज़रूर कर रही थी। कहती थी, तानसेन एक पत्थर का पुतला है, जो सदा अपनी धुन और गाने के इश्क में मस्त रहता है। उसे किसी के दिल पर गुज़रने की क्या मालूम ? वह मेरी जवानी और मदमस्त अठखेलियों का तो लुत्फ़ उठाना ही नहीं चाहता……मेरे मन में उमङ्गें हैं, अरमान हैं और समन्दर की लहरों की तरह चढ़ते उतरते हुए मोहब्बत के जज़बात…………मगर तानसेन के पास उनका कोई जवाब नहीं……।

तानसेन—क्या यह सच है यशोदा ?

यशोदा—बिलकुल सच !

तानसेन—तो प्रभाती मुझे गलत समझी है, मैंने उससे पहिले ही कहा था मैं इन्सान हूँ और इन्सान के नाते प्रत्येक कला की वस्तु पूजने का अधिकार रखता हूँ। उसमें कला है और मैं उसका पुजारी ।

यशोदा—तुम्हारे कितने ऊँचे खयालात हैं गायक!

एक तेज़ हवा का झोंका आकर यशोदा के कपड़ों को अस्त-व्यस्त कर देता है और उसकी भरपूर जवानी तानसेन को छलने की कोशिश करती है। यशोदा स्त्री है और जवान! उस पर उसकी मस्ती और भी जादू कर देती है।

यशोदा—(अँगड़ाई लेते हुए) गायक! तुम कितने सुन्दर मालूम होते हो! परमात्मा ने तुम्हें गाने का जादू देकर ताज पर एक मोती और टाँक दिया है।

तानसेन—तुम भी बहकने लगीं यशोदा? यह मत भूल जाना कि तुम आखिर एक कनीज हो, एक नाचीज लौंडी!

यशोदा—गायक! जवानी तो रानी और लौंडी देखकर नहीं आती परन्तु तुम्हें तो उसकी कद्र करनी चाहिये आओ लबे-लालीन का एक बोसा लेकर शाद हो जाओ (पागलों की भाँति तानसेन की ओर बढ़ती है।)

पट-परिवर्तन।

तानसेन यह विचार कर कि क्या संसार-भर की स्त्रियाँ उन्हीं पर अपनी जवानी की आज़माइश करने का इरादा रखती हैं, अपने कमरे से बाहर भागकर बारजे में आ जाता है। यशोदा भी औरों की दृष्टि पड़ने के भय से डरती-डरती नंगे पाँव तानसेन का पीछा आकर करती है।

यशोदा—(प्यार से) गायक! क्या मैं इस कदर नफरत के काबिल हूँ।

तानसेन कोई उत्तर नहीं देते और ख़ामोश अपनी निगाहों को चारों ओर घुमाने लगते हैं, सहसा उनकी दृष्टि बारजे के नीचे एक कुञ्ज पर पड़ जाती है, जिसमें फूलों से लदे हुए पेड़ों का एक बड़ा झुरमुट है। उस झुरमुट में प्रभाती खड़ी एक पौदे की नाजुक पत्तियों से खिलवाड़ कर रही है। उसके पीछे वीरमंडल खड़ा उसके बालों में एक सुन्दर गुलाब का फूल खोस रहा है। दोनों के चेहरों पर मुस्कराहट है।

वीरमंडल—प्रभाती! आज तुम्हें पहिली बार अपने ऊपर इतनी मेहरबान देख रहा हूँ।

प्रभाती—मैं तो सदा से तुम्हारी थी पर कुछ दिनों से एक गाने वाले ने मुझ पर जादू कर दिया था, मगर वह इन्सान के रूप में पत्थर की मूर्ति निकला।

वीरमंडल—मैं जानता हूँ, वह गाने वाला तानसेन है, उसने हमारी मुहब्बत को तोड़ने में कोई कसर नहीं रखी थी।

प्रभाती—वीरमंडल ! मुझे क्षमा कर दो ।

वीरमंडल—प्रभाती…………।

तानसेन अधिक बात न सुन सके, क्रोध और ग्लानि की अवस्था में फिर अपने कमरे में लौट जाते हैं और प्रभाती वाला मोतियों का हार कमरे के बाहर फेंक देते हैं। हार प्रभाती और वीरमंडल पर गिरता है। वह दोनों निगाह उठाकर भौंचक से ऊपर देखते हैं। तानसेन की बड़बड़ाहट फिर आरम्भ हो जाती है।

तानसेन—सत्य फिर सत्य ही है……परमात्मा ने मेरे लिये रागिनी का ही प्रेम बनाया है……मुझे उसी में खो जाना चाहिये……।

तानसेन बेसुध से हो वीणा पर गिर पड़ते हैं, जिसके तारों से झन्कार की आवाज़ निकलती है और एक बार फिर 'पिया' का शब्द गूँज उठता है। तानसेन भी अधीर से हो, गुनगुनाने लगते हैं।

"मस्ती बिसराय दियो, मोहे पिया।"

दृश्य १३

अकबराबाद से गवालियर की ओर तीन कोस की दूरी पर एक पक्की पार का बंधा हुआ कुँवा है। कुंवे के निकट जो सडक बनी है, उस पर मुगलिया सैनिक घोडों की लगाम पकडे खडे हैं, उनके सारे शरीर से पसीना टपक रहा है, उनमें से कुछ बहुत व्याकुल हैं और कुछ पानी पीने की प्रतीक्षा में खडे हैं। एक सैनिक चुल्लू से पानी पी रहा है। एक ग्रामीण डोल से पानी खींच-खींच कर यह सेवा कर रहा है।

पहि०सि०-भाई करीम! हम तो उस खवास की तलाश करते-करते अब थक गये, जो महारानी जोधाबाई का ज़ेवर और जवाहिरात चुरा कर भाग गई है।

दूस०सि०-(करीम) हां यार लतीफ......मेरा सारा शरीर तो घोड़े पर बैठे-बैठे चूर-चूर हो गया। और जहान का कोना-कोना छान मारा, पर उसका पता नहीं चला।

तीस०सि०-नारायन! उसका नाम फौजदार ने क्या बताया था?

चौ०सि०-(नारायन) (पानी पीते हुये और कुछ याद करते हुए) अजी वही...भगवान तुम्हारा भला करे.... (पानी पीने के बाद सर खुजाते हुए) अजी वही...वह देखो. अच्छा ही सा नाम है.....।

पां०सि०-नाम तो खुद याद नहीं और बता ऐसा रहे हो. जैसे तुम्हारी कोई.....!

नारायण-आगई याद.........रागिनी!

दो तीन सिपाही-(एक साथ) हाँ.हां.....रागिनी।

छटा सि०-मगर यार देखो, दुनियाँ में इश्क भी क्या चीज़ है, लोगों में हाथी के बराबर ताकत आजाती है। न कुछ खवास न उसका रंग रूप और फँस गई एक हम जैसे सिपाही से और ले भागी महारानी का हजारों का ज़ेवर।

नारायण-यार तुम्हें अभी कोई मिली नहीं है, नहीं तो बन्दर की तरह नाचोगे।

छटा सि०-(हँसकर) अजी नाचोगे......कि उसे बन्दरिया की तरह नचाओगे। म्यां मर्द हैं. मर्द।

करीम- अबे छोड़ अबदुल्ला! ऐसे ख्याली पुलाव को..... चलते-चलते अब थक गये हैं। ज़रा कुछ तफ़रीह का सामान होजाये।

ती० सि०-बेटा को तफ़रीह की सूझी है. लौटने पर फौज़दार को मालूम हो जाय तो गले को फक से उड़ा देगा।

करीम- चुप भी रह मुरदार! अब तो आराम से गुज़रती है, आक़बत की खुदा जानें।

प० सि०-हां तो उस्ताद एक होली ही होजाय! मौसम भी है. और रंग भी।

करीम निम्न लिखित एक होली हाव-भाव बताते हुए गाता है और अन्य सिपाही तालियों से ताल देते है। कभी-कभी मस्त होकर एक दो सिपाही विचित्र भाव-भङ्गी का प्रदर्शन कर, थिरकने लगते है।

होली—राग काफ़ी।

कैसा यह देश निगोड़ा, तड़के मोरी चोली का डोरा।
कैसा ये देश निगोड़ा·························॥
मैं जल जमुना भरन जात रही, देख रंग मोरा गोरा।
मोसों कहत चलो कुञ्जन में, तनक-तनक से छोरा॥
तड़के मोरी चोली का डोरा, कैसा ये देश निगोड़ा॥

गाना समाप्त होने पर एक गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनाई देती है, जो सिपाहियों की ओर ही बढ़ी चली आरही है। सिपाही एक टक उसकी तरफ़ देखना शुरू कर देते है। गाड़ी निकट आने पर मालूम होता है कि उसमे एक अन्धा और एक रूपवती स्त्री बैठी है। गाड़ी हांकने वाला एक वृद्ध आदमी है, सफर की थकान के कारण उनके चेहरे मटीले और उतरे हुए है।

अन्धा— (कुछ लोगों की आहट पाकर गाड़ी रुकवाते हुए) बाबा! यहां से अकबराबाद कितनी दूर है?

(१)सि०—तो तुम लोग अकबराबाद जाओगे?

अन्धा— हां बाबा!

(२)सि०—(मतलब की कहते हुए) बस यही दो तीन कोस है, सूरदास! अब की पड़ाव पै तुम्हें अकबराबाद ही मिलेगा।

अन्धा— (कुछ चौंक कर) तुमने मेरा नाम सूरदास कैसे जान लिया बाबा!

(३)सि०—इसलिये कि तुम अन्धे हो और हर अन्धे को सूरदास कहते हैं।

सूरदास—(कुछ दुखित होकर) ठीक है बाबा······गाड़ी वाले! चल गाड़ी बढ़ा!

करीम— (ललचाई हुई निगाहों से देखते हुए) क्यों जी सूरदास! यह लड़की तुम्हारे साथ कौन है?

सूरदास—मेरी बेटी रागिनी है।

(४)सि०—(चौंक कर) ऐं, रागिनी! (करीम को सम्बोधित करते हुए) करीम पकड़ो इसे, शिकार मिल गया, मगर देखो तो यार के साथ माल छोड़कर, अब कैसी भोली बनी बैठी है··········।

(२)सि०—और इस सूरदास को तो देखो, कहता है मेरी बेटी है।

सब सिपाही हां में हां मिलाते हुए सूरदास और रागिनी को गिरफ्तार कर लेते हैं और गाड़ी को चारों ओर से घेर कर खड़े हो जाते है। सूरदास और रागिनी हैरान है कि यह सब क्या ~ ? है।

सूरदास—बाबा ! तुम लोग कौन हो ? हमें क्यूँ पकड़ लिया ? हमारा क़सूर भी तो बताओ !

रागिनी—बाबा ! यह राजधानी के सिपाही हैं······(तिरस्कार का भाव दिखाते हुए) राजधानी ! वह राजधानी जो हमारे देवना को निगल गई ?

सूरदास—अरे भाई ! हमें छोड़दो। हमें अपने तानसेन के पास पहुँचना है, वह हमें भूल गया है।

(५)मि०—अरे ओ अन्धे ! चुप भी रह. क्यूँ बेकार का शोर मचाता है।

(३)मि०—यह चालें हम से न चलेंगी, हम सिपाही बच्चे हैं, शेर की खाल निकालने वाले, समझे !

रागिनी—पर हमारा कोई दोष भी तो हो।

(२)मि०—दोष, और क़सूर हम कुछ नहीं जानते। अब तुम्हारा इन्साफ़ महारानी जोधाबाई के सामने होगा. वही तुम्हें कसूर बेकसूर साबित कर सकती हैं। तुम उनके गुनहगार हो।

सिपाही गाड़ी वाले को आगे बढ़ने की आज्ञा देते हैं, और चारों ओर से सिपाहियों से घिरी गाड़ी अकबराबाद की ओर बढ़ती है।

दृश्य १४

(स्थान-शाही बाग़)

बाग के बीच में एक बड़ा घास का मैदान है, जिसके चारों ओर गुलाब और चमेली इत्यादि की क्यारियां और रविशें बड़ी सुन्दर विधि से कटी हुई हैं। बीच-बीच में आम और खजूर के पेड़ बाग की शोभा को और भी दुबाला कर रहे हैं। बाग की चहार दीवारी के उस पार सरसों के खेत वायु के झोंकों के कारण बसन्त की स्मृति में जीवन डाल रहे हैं।

मैदान में बिछात का माकूल इन्तजाम किया गया है। बड़ी-बड़ी दरियों और चटाईयों के ऊपर जा बजा कालीन और लोड़ रखे हुए हैं। सीधे हाथ की तरफ कारचोबी के काम की एक मसनद लगी है, जिस पर सम्राट अकबर शाहाना अन्दाज़ में बैठे हैं। उनके निकट प्रधान मन्त्री और अन्य नौरत्न और विश्वासी दरबारी अपनी-अपनी नशिस्त लगाए हैं, इन सब से हट कर दोनों ओर दीगर जगह दरबारियान यथास्थान जमे हैं। बीच की जगह नृत्य करने और गाने बजाने वालों के लिए छोड़ दी गई है, शाही नशिस्त के हर तरफ हुजूरे, बल्लम, बरदार, भालदार, पहरेदार इत्यादि अपने-अपने मुकाम पर खड़े हैं।

शाही बेगमात की बैठक का इन्तज़ाम जनाने महलों में किया गया है। जिनकी खिडकियां और दरीचे बाग के मुक़ाबिल हैं। दरीचों पर सुन्दर परदे लटक रहे हैं।

पश्चिम में सूरज डूबने की कोशिश कर रहा है। थोड़ा-थोड़ा अन्धकार बाग में फैलने लगा है, नौकर चाकर इस प्रतीक्षा में हैं कि कब आज्ञा मिले और हम दीप, शमादान और मशालें जलायें।

सम्राट अकबर ने बसन्त उत्सव मनाने के लिए यह जलसा किया है। उत्सव के सिलसिले में अन्य कार्य-क्रम दिन में मनाये जा चुके हैं। अब अन्तिम कार्य अर्थात गायन व नृत्य की पूर्ति और शेष रही है।

नृत्य जो किया जावेगा, वह एक विशेष प्रकार का होगा। छै-ओं राग-भैरव, मालकोष, हिन्डोल, दीपक, श्री और मेघ, पुरुष वेष में अपने पूरे ठाट-बाट और रंग रूप के साथ मध्य में खड़े हैं। उनको घेरे डाले रागों की तीस रागनियां-भैरवी, बैराटी, मधुमाधवी, सैंधवी, बङ्गाली, तोड़ी, गौरी, गुणकली, दम्भावती, ककुभ, रामकली, देशाखी, ललित, बिलावल, पटमंजरी, देशी, कुमोदिनी, नट, केदार, कान्हरा, मालश्री, आसावरी, धनाश्री, बसन्त, मारू, टङ्क, मल्हार, गुर्जरी, भूपाली, देशकारी, स्त्रियों का रूप लिये, हलका-सा अङ्ग संचालन कर रही हैं। रागनियों का रूपक जिन युवतियों को दिया गया है, वह सौन्दर्य में ऐसी जगमग हो रही हैं, मानो अभी अभी स्वर्ग से उतरी हों।

दारोगये इन्तज़ाम निज़ाम उद्दौला के इशारे पर नक्कारों पर चोट पडने लगी। चोट पडते ही, एक दरबारी गायक निम्नलिखित बसन्त राग छेड देता है। राग छिडते ही पेड की पत्तियां खेलने लगी हैं और [illegible] प्रकृति [illegible] नाचती नजर आती है।

॥ वसन्त ॥

भँवरा फूले बेलरियां, आली ऋतु वसन्त आई।
सखी लता पता बौराई, प्यारी ऋतु वसन्त छाई॥
चहुंदिश फूल रही फुलवारी, कोयल कूकत डारी-डारी।
नर-नारी उमङ्ग मन भाई, आली ऋतु वसन्त आई॥

दरबारी भी उसके असर से खाली नहीं रहते, उनके चेहरे पर भी उमङ्ग खेलती दृश्यगोचर होती है। मस्ती में सब के सर झूमने लगते हैं। निज़ाम उद्दौला के इशारे पर फिर एक बार डङ्के पर चोट पड़ती है। डङ्के की आवाज़ कानों में आते ही, राग-रागनियों का जीवित नृत्य आरम्भ हो जाता है। प्रथम तो सब राग और रागनियां एक साथ सम्मिलित अवस्था में नाचते हैं और नाचते में कई प्रकार के पुष्पों का चित्र पेश करते हैं और बाद में भिन्न भिन्न भाव-भङ्गी द्वारा प्रेम के कितने ही भावुक दृश्य बताते हैं, जो दरबारियों ने पहले कभी नहीं देखे थे और जिनको देखकर समस्त दरबारियों की आँखें फटी की फटी रह जाती हैं।

थोड़ी देर पश्चात् प्रत्येक राग पृथक हो जाता है, और उसकी पांचों रागनियां उसे घेर लेती हैं, और फिर ऐसा मस्ताना नाच नाचते हैं, जिसको देखकर सारी ज़मीन और आसमान घूमती फिरती नज़र आती है।

तानसेन भी दीपक राग का अभिनय कर रहे हैं और प्रभाती भी गुणकली रागिनी बनी नृत्य में होश हवास भूले हुए है।

एक दरबारी गायक उपरोक्त नृत्य के साथ-साथ निम्नलिखित गाना विभिन्न साजों के साथ गा रहा है।

भैरवी, बैराठी, मधुमाधवी, सैंधवी, बङ्गाली पांच नार भैरव की मानिये।
टोड़ी, गुणकली, गौरी और खम्भावती, कुकुम्भ ये पांचो मालकोष की जानिये॥
हिण्डोल की अर्द्धाङ्गी रामकली, देशाखी, ललित, बिलावल, पटमंजरी बखानिये।
देशी, कामोद, नट, केदारा, कान्हरा दीपक की रागिनी चित्त मांहि आनिये॥
मालश्री, आसावरी, धनाश्री, बसन्त-मारवा, ये पांचों श्रीराग की वामा हैं।
मेघ की टङ्क, भूपाली, गुर्जरी और, मल्हार देशकारी पत्नी शुभ कामा हैं॥
("इन्द्र")

गाने में प्रत्येक राग-रागिनी का नाम आता है और जैसे-जैसे जिसका नाम आता है, वह सम्राट के सन्मुख आकर मुज्रा करता हुआ फिर अपने कार्य में मशगूल हो जाता है।

थोड़ा समय बीतने पर नृत्य करते-करते राग रागनियां इस कदर थक जाते हैं, कि अन्तिम बार वह कमल का फूल बनकर अपने-अपने स्थान पर गिर पड़ते हैं। तभी सम्राट के मुँह से "वाह वाह और माशा अल्लाह" निकल जाता है वह दारोगये इन्तज़ाम को सम्बोधित करते हैं।

अकबर—निज़ाम उद्दौला! मावदौलत आज नाच इस खास इन्तज़ाम से बेहद मसरूर हुए हैं। तुम हर नाचने वाले को मावदौलत की तरफ से एक-एक सुनहेरी दुशाला और ५०० दीनार इनाम में देना।

निज़ाम०—हुजूर आलमपनाह!

अकबर—(उठते हुये) बस अब आज का············।

निज़ाम०—(रङ्ग बिगड़ता देखकर) जहांपनाह, बेअदबी माफ! अभी आज की कार्रवाही का मौजज़ा आमेज़ पहलू रह गया है। वह अगर आलीजाह देखेंगे तो नांच से भी ज्यादा मसरूर होंगे।

अकबर—(बैठते हुए) वह क्या चीज़ है, निजाम उद्दौला!

निज़ाम०—आलमपनाह! आज तानसेन खिदमते आलिया में 'दीपक राग' का करिश्मा पेश करेंगे। दीपक राग का यह असर होगा कि जुमला बुझे हुये चिराग अज़ खुद राग की गरमी से रोशन हो जायेंगे, और फ़ने मौसीक़ी का एक अजीब तमाशा देखने को मिलेगा। इस राग की तासीर यह भी होती है कि इसमे बहुतसी जिस्मानी बीमारियां अच्छी हो जाती हैं। और यह राग मोहब्बत के जज़बात को तो बेहद भड़काता है।

|| वसन्त ||

भँवरा फूले वेलरियां, आली ऋतु बसन्त आई।
सखी लता पता बौराई, प्यारी ऋतु बसन्त छाई ॥
चहुँदिश फूल रही फुलवारी, कोयल कूकत डारी-डारी।
नर-नारी उमङ्ग मन भाई, आली ऋतु बसन्त आई ॥

दरबारी भी उसके असर से खाली नहीं रहते, उनके चहरों पर भी उमङ्ग खेलती दृश्यगोचर होती है। मस्ती में सब के सर झूमने लगते हैं। निज़ाम उद्दौला के इशारे पर फिर एक बार डङ्के पर चोट पड़ती है। डङ्के की आवाज़ कानों में आते ही, राग-रागनियों का जीवित नृत्य आरम्भ हो जाता है। प्रथम तो सब राग और रागनियां एक साथ सम्मिलित अवस्था में नाचते हैं और नाचते में कई प्रकार के पुष्पों का चित्र पेश करते हैं और बाद में भिन्न भिन्न भाव भङ्गी द्वारा प्रेम के कितने ही भावुक दृश्य बताते हैं, जो दरबारियों ने पहले कभी नहीं देखे थे और जिनको देखकर समस्त दरबारियों की आंखें फटी की फटी रह जाती हैं।

थोड़ी देर पश्चात प्रत्येक राग पृथक हो जाता है, और उसकी पांचों रागनियां उसे घेर लेती हैं, और फिर ऐसा मस्ताना नाच नाचते हैं, जिसको देखकर सारी ज़मीन और आसमान घूमती फिरती नज़र आती है।

तानसेन भी दीपक राग का अभिनय कर रहे हैं और प्रभाती भी गुणकली रागिनी बनी नृत्य में होश हवास भूले हुए हैं।

एक दरबारी गायक उपरोक्त नृत्य के साथ साथ निम्नलिखित गाना विभिन्न साजों के साथ गा रहा है।

भैरवी, बैराठी, मधुमाधवी, सैंधवी, बङ्गाली पांच नार भैरव की मानिये।
टोड़ी, गुणकली, गौरी और खम्भावती, कुकुभ ये पांचों मालकोष की जानिये ॥
हिण्डोल की अर्द्धाङ्गी रामकली, देशाखी, ललित, बिलावल, पटमंजरी बखानिये।
देशी, कामोद, नट, केदारा, कान्हरा दीपक की रागिनी चित्त माँहि आनिये ॥
मालश्री, आसावरी, धनाश्री, बसन्त-मारवा, ये पांचों श्रीराग की बामा हैं।
मेघ की टङ्क, भूपाली, गुर्जरी और, मल्हार देशकारी पत्नी शुभ कामा हैं ॥
("इन्द्र")

गाने में प्रत्येक राग-रागिनी का नाम आता है और जैसे-जैसे जिसका नाम आता है, वह सम्राट के सन्मुख आकर मुजरा करता हुआ फिर अपने कार्य में मशगूल हो जाता है।

थोड़ा समय बीतने पर नृत्य करते-करते राग रागनियाँ इस कदर थक जाते हैं, कि अन्तिम बार वह कमल का फूल बनकर अपने-अपने स्थान पर गिर पड़ते हैं। तभी सम्राट के मुँह से "वाह वाह और माशा अल्लाह" निकल जाता है वह दारोगये इन्तज़ाम को सम्बोधित करते हैं।

अकबर—निजाम उद्दौला! मावदौलत आज नाच दस ख़ास इन्तजाम से बेहद मसरूर हुए हैं। तुम हर नाचने वाले को मावदौलत की तरफ़ से एक एक सुन्हेरी दुशाला और ५०० दीनार इनाम में देना।

निजाम०—हुज़ूर आलमपनाह!

अकबर—(उठते हुये) बस अब आज का ।

निजाम०—(रङ्ग बिगड़ता देखकर) जहाँपनाह, बेअदबी माफ! अभी आज की कार्रवाही का मोजज़ा आमेज पहल रह गया है। वह अगर आलीजाह देखेंगे तो नाच से भी ज्यादा मसरूर होंगे।

अकबर—(बैठते हुए) वह क्या चीज है, निजाम उद्दौला!

निजाम०—आलमपनाह! आज तानसेन ख़िदमते आलिया में 'दीपक राग' का करिश्मा पेश करेंगे। दीपक राग का यह असर होगा कि जुमला बुझे हुये चिराग अज खुद राग की गरमी से रोशन हो जायेंगे, और फने मौसीकी का एक अजीब तमाशा देखने को मिलेगा। इस राग की तासीर यह भी होती है कि इससे बहुतसी जिस्मानी बीमारियां अच्छी हो जाती हैं। और यह राग मोहब्बत के जज़बात को तो बेहद भड़काता है।

अकबर—(उत्सुक्ता दिखाते हुए) मावदौलत, तानसेन तुम्हें हुक्म देते हैं कि तुम दीपक राग शौक से शुरू कर सकते हो, मावदौलत बड़ी खुशी से राग का असर लेंगे।

सम्राट की आज्ञा सुनकर तानसेन असमञ्जस में पड़ जाते हैं और सोचते हैं कि आज के कार्य क्रम में दीपक राग का गाना तो नहीं था, फिर यह आज्ञा कैसी दी जा रही है। जरूर इसमें कोई चाल छुपी है।

उधर वीरमण्डल और उसके साथी गदगद्ए प्रसन्न नज़र आते हैं। उनकी मनोकामना पूर्ण होती हुई मालूम होती है। तभी तानसेन को सोच में पड़ा देख कर सम्राट पूछते हैं—

अकबर—क्यूँ तानसेन! यकायक क्या गम तारी होगया, गाते क्यूँ नहीं?

तानसेन—आलमपनाह! दारोगा साहब ने मुझे पेशतर राग के मुताल्लिक आगाही ।

निजाम०—(बीच में बात काट कर) आलीजाह "उत्सव" के इन्तजाम की इस कदर मसरूफियात खाकसार को थी कि तानसेन को दीपक राग गाने की इत्तला न दे सका।

अकबर—यह तुम्हारी गलती हुई, निजाम उद्दौला!

निजाम०—हुज़ूर जमजाह! तानसेन को पेशतर ख़बर करने की जरूरत यूं भी महसूस नहीं की गई कि (थोड़ा व्यङ्ग से) वह इल्मे मौसीकी का माहिर और उसका हर जगह माना हुआ उस्ताद है (थोड़ा रुककर व हलकी आवाज़ में गाता हुआ) पर मानी में उस्ताद और माहिरे फन को गाने की तैयारी के मुताल्लिक छेड़ना, उसकी तौहीन करना है।

अकबर—तो तुम्हारा कसूर ऐसी हालत में काबिले उफ़ है, निजाम उद्दौला !

निजाम०—जहाँपनाह !

तानसेन—आलमपनाह ! दीपक राग ऐसा नहीं जो बगैर तैयारी के पेश किया जा सके। उसकी कामयाबी के लिए, पहिले अग्नि देवता की पूजा करनी होती है।

मीरमटल-आलमपनाह ! तानसेन नहीं चाहते कि हजूर पुरनूर इस राग का लुत्फ़ उठायें।

बादरा—और इसी लिये अग्नि देवता की परस्तिश का बहाना करते हैं।

जगन्नाथ-आलीजाह ! तानसेन का इन्कार, सल्तनत की तौहीन है।

अकबर—(शब्द तौहीन पर उत्तेजित होकर) तानसेन ! तुम्हें यह राग सुनाना ही होगा, किसी भी कीमत पर।

तानसेन—आलमपनाह ! दीपक गाने से मेरे जिस्म में आग लग जायगी और मैं ।

अकबर—(बीच ही में) तब तो मालदौलत राग का तमाशा बड़े लुत्फ़ से देखेंगे।

तानसेन—लेकिन आलम ।

अकबर—तानसेन, ज्यादा बहस हमारे हजूर में बेअदबी शुमार की जाती है और बेअदबी की सजा तुम खूब जानते हो।

तानसेन सम्राट का क्रोधित भाव देखकर खामोश हो जाते हैं और मजबूरन बैठक जमाकर गान की तशरीफ़ लेते हैं। उनके साजिन्दे भी आकर अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। सभा में ऐसे वाद्-विवादी राग को सुनने के लिए स्तब्धता छा जाती है। तानसेन तभी आकाश की ओर हाथ जोड़कर, दीपक राग आरम्भ कर देते हैं —

(दीपक—राग)

बाजत झाँझ मृदङ्ग तान धुन, रबाब खटतारो, कानन बीन।
कहत परन भेद, तादितथुना तक थुंगा तक्का थुङ्गा तग दीतग धीधीकट धुमकिट धदिधिन ॥
नगदित् धाकिट गदागिन, नगदित धा, किट गदिगिन नगदित्।
धरन मुख मुद्रा निरखत, सब गुनिजन, आहत अनाहत को भेदहू न पावै गुरुबिन।
गीत-सङ्गीत धरत धारू ध्रुपद धृ-धृ करत विचार अति प्रवीन ॥

जैसे जैसे राग की ध्वनि वातावरण में फैलती है, एकत्रित सब लोगों को एक प्रकार की गरमी का आभास होने लगता है और थोड़ी देर में ही जब राग अपनी चरम-सीमा पर पहुँचता है, तो एकदम बुझे हुए सारे दीप आप ही आप जल उठते हैं। तानसेन के शरीर से अग्नि के शोले प्रथम तो थोड़े थोड़े और फिर एक साथ निकल पड़ते हैं। उनकी आवाज़ गले में घुटने लगती है और थोड़े समय पश्चात् ही वह अचेत अवस्था में गिर पड़ते हैं।

इस दृश्य को देखकर दरबार में एक प्रकार की भगदड़ मच जाती है। अकबर भी अपनी भूल पर पश्चाताप करते हुए दीखते हैं, बीरमडल और अन्य तानसेन के शत्रु मन में प्रसन्न होते हैं। जगन्नाथ तो जोश में आकर कह उठता है, "वह मारा" सम्राट के कानों में यह शब्द पड़ते हैं, और वह जगन्नाथ को सम्बोधित करते हुए क्रोध में कहते हैं।

अकबर—जगन्नाथ "यह बेअदबी ? तुमने क्या कहा, "वह मारा" · · ·"।

जगन्नाथ–नहीं आलमपनाह ! मेरा कोई कसूर नहीं यह सब कुछ तो · ।

अकबर—खामोश रहो, अबुल फजल जाओ इस नापाक को मौत की सजा दो।

तानसेन तड़प-तड़प कर, एक दर्दभरी चीख निकालते हैं। चीख ऐसी करुणाजनक होती है जिसमें एक बार सारा आकाश काप उठता है परन्तु उस चीख को दबाती हुई क्षणभरमें ही एक मधुर मेघ राग की ध्वनि सुनाई पड़ती है।

(मेघ–राग)

रिम झिम बरसे आज बादरवा पिया बिदेश,
मोरी थरथरात छतियां निश दिन मन भावे ।
नयन हू न नींद आवे,दामिन दमकन लागी उन बिन–
कल न पड़त नाथ–नाथ करि धावे············॥
रह्यो न जाय घड़ी पल–छिन, तन देह मेरि आये,
मदन मो संग जुझत अवसर पावे ·········॥
निकसत नहीं प्रान, है रह्यो चित पापान—
तापर करे बखान तानसेन गावे············॥

राग की आवाज़ धीरे-धीरे ऊँची उठती है और आकाश में विराजमान इन्द्र देव के कानों तक भी पहुँच जाती है। वह व्याकुल हो जाते हैं, और तुरन्त अपने सैनिकों को बादल लाने और जल बरसाने की आज्ञा देते हैं।

राग का एक-एक शब्द, एक एक बूंद और फिर एक एक बूंद हज़ारों बूंदों को घेर लाती है। पानी जोर से बरसने लगता है और वारिश की धारा जैसे दरबारियों पर गिरती है, वह चारों ओर भागने लगते हैं। बादल की गरज और बिजली की चमक उनके हृदयों को दहला देती है।

सम्राट भी अपने प्रधान मन्त्री और अन्य नौरत्नों सहित भाग कर एक घने पेड़ की छाया में विश्राम लेते हैं।

बीरमण्डल प्रभाती और अन्य गायक भी पेड़ों की छाया में छिप जाते हैं, परन्तु तानसेन पर जैसे ही वर्षा की बूंदें गिरती हैं, उनके जले हुए जख्म धुलने लगते हैं और थोड़ा समय बीतने पर उनका सारा शरीर दूध की भांति निर्मल निकल आता है।

चेतना आने पर पहिला शब्द तानसेन के मुँह से निकलता है, 'रागिनी'! और वह चारों ओर मैदान में दौड़-दौड़ कर चिल्लाने लगते हैं, रागिनी'''रागिनी'''और सबको आश्चर्य में डालने के लिए रागिनी बगीचे में से भागती हुई नज़र आती है। रागिनी आकर तानसेन के चरणों में गिर पड़ती है।

रागिनी—(ऐसी वाणी में जिसमें प्रेम और विरह के भाव मिले हैं) देवता, जीवन'''!

तानसेन—रागिनी! मुझे क्षमा करदो (रागिनी को उठाने के प्रयत्न में तानसेन के कपड़ों से मुरझाये हुए फूलों की पत्तियां गिर पड़ती हैं, रागिनी उन्हें देख लेती है।

रागिनी—देवता, इन मुरझाये हुए फूलों ने आख़िर तुम्हें मेरी स्मृति दिलादी।

तानसेन—(रागिनी को हृदय से लगाते हुए) रागिनी'''।

पास वाले वृक्ष के नीचे खड़े वीरमण्डल और प्रभाती प्रेम का यह दृश्य देखकर मुस्करा देते हैं।

वीरमंडल-प्रभाती!

प्रभाती—(वीरमण्डल के कन्धों पर हाथ रखते हुए) देवता'''।

वीरमंडल-चलो प्रभाती! अपना घर सँभालें, उनकी ओर क्या देखती हो, तान और रागिनी का तो हमेशा का साथ रहा है, वह कभी प्रथक नहीं हो सकते।

दोनों चले जाते हैं और तभी पीछे खड़ा करीम अपने एक साथी से पूछता है।

करीम—नारायण, यह रागिनी क्योंकर रिहा होगई?

नारायण-तुम ग़लत मुलजिम को पकड़ लाओ और फिर पूछो वह रिहा क्यूँ होगई। महारानी जोधाबाई ने रागिनी को, उसकी ज़िन्दगी की कहानी से मुतासिर होकर, उसे अपनी ख़ास मुसाहिब बना लिया है।

बारिश बराबर पड़ रही है'''काले-काले बादलों के घिर आने से और अँधेरा छा जाता है। बीच बीच में दामनि की दमक, तानसेन और रागिनी के मधुर-मिलन पर मुस्करा देती है।

*

E N D.

तानसेन कृत रागों की

स्वरलिपियाँ

तानसेन कृत—

तिलक-कामोद

पाड़व–पाड़व ———————————— झपताल मात्रा १०

मुरारे त्रिभुवनपति, इन्द्र सुरनपति, धनेश धनपति, शेषनाग फनपति ॥१॥
क्षीरश्रौं दधि सलिलपति, कौस्तुभमणि रत्नपति, दिनकर दिननपति, नारायण कमलापति ॥२॥
शशीउर गनपति, हनुमन्त बलनपति, नारद भक्तनपति, बीण मृदङ्ग बाजनपति ॥३॥
कर मिनति कहे श्रीपति, चिरञ्जीव रहो छत्रपति, अकबरशाहे नरनपति, तानसेन ताननपति ॥४

+		|			०		|		
ग	ग	म	म	म	पप	पप	ध	मप	मग
मु	रा	रे	ऽ	ऽ	त्रिभु	वन	प	तिऽ	ऽऽ
स	न	प	प	ध	म	प	ग	म	ग
इन	ऽ	द्र	ऽ	सु	र	न	प	ति	ऽ
र	ग	म	प	प	न	सं	रं	न	सं
ध	ने	ऽ	ऽ	श	ध	न	प	ति	ऽ
सं	सं	न	प	प	ध	म	प	गम	गस
शे	ष	ना	ऽ	ग	फ	न	प	तिऽ	ऽऽ
म	प	न	न	न	सं	संसं	सं	सं	–
क्षी	ऽ	रौ	द	धि	स	लिल	प	ति	ऽ
रं	पं	मं	गं	गं	सं	न	प	प	–
कौ	स्तु	भ	म	णि	र	त्न	प	ति	ऽ
र	ग	म	प	प	नसं	रं	न	सं	–
दि	न	क	र	ऽ	दिन	न	प	ति	ऽ

सं	सं	न	प	प	धध	म	प	गम	गम
ना	ऽ	रा	य	ण	कम	ला	प	निऽ	ऽऽ
र	र	ग	म	प	मम	मम	ग	ग	–
श	शी	ऽ	ऽ	ऽ	उर	गन	प	निऽ	ऽ
म	म	प	प	प	धम	प	ग	म	ग
ह	नु	मं	न	ऽ	श्रल	न	प	ति	ऽ
ग	र	म	ऩ	प़	ऩम	र	ऩ	स	–
ना	ऽ	र	द	ऽ	भक्त	न	प	नि	ऽ
र	ग	म	प	प	धध	म	प	गम	गम
वी	ण	मृ	दं	ग	बाज	न	प	निऽ	ऽऽ
म	प़	न	न	न	मं	मं	मं	मं	मं
क	र	मि	न	ति	क	हे	श्री	प	ति
रं	रं	पंमं	गंरं	मं	मं	न	प	प	–
चि	रं	जीव	रहो	ऽ	छ	त्र	प	ति	ऽ
रर	गग	म	प	प	नमं	रं	न	सं	मं
अक	बर	शा	ऽ	हे	नर	न	प	नि	ऽ
मं	न	प	प	प	धध	म	प	गम	गस
ना	न	से	ऽ	न	नान	न	प	निऽ	ऽऽ

ध्रुपद शंकराभरन [चौताल]

स्थायी—आयेजी कैसे आवन पाये, भले ही आये, मेरे नवल लाल।
अन्तरा—तुमहो चतुर-सुजान, बूझत सब गुन-निधान, महागान मूरत हो अति रसाल॥
सञ्चारी—हम सों अवधि बदी, अन्त विरम रहे, ऐसी न कीजै दीनदयाल।
आभोग—"तानसेन" के प्रभु तुम हो बहु नायक, दीजै दरश कीजै निहाल॥

स्थायी—

०		३		४		+		०		२	
मं	–	न	प	न	ध	मं	–	न	प	ग	–
आ	ऽ	ये	ऽ	जी	ऽ	कै	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ
ग	प	ग	न	स	ऩ	–	(म) ऩ	स	स	स	–
आ	ऽ	व	ऽ	न	पा	ऽ	ए	ऽ	भ	ले	ऽ
ऩ	प़	ऩ	ध़	म	स	–	ग	–	प	न	प
ही	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	न	ध	मं	–	सं	गं	मं	न	प	प
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	व	ल	ला	ऽ	ल

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
प	प	न	सं	सं	सं	मं	मं	–	गं	सं	सं
तु	म	हो	ऽ	च	तु	र	सु	ऽ	जा	ऽ	न
न	–	न	प	प	प	ग	प	प	ग	स	स
बू	ऽ	झ	त	स	ब	गु	न	नि	धा	ऽ	न
सं	गं	पं	गं	सं	सं	न	–	न	प	न	सं
म	हा	ऽ	गा	ऽ	न	मू	ऽ	र	त	हो	ऽ

सं	गं	मं	न	–	प	मं	–	न	प	न	ध
अ	नि	र	मा	ऽ	ल	आ	ऽ	ये	ऽ	जी	ऽ

सञ्चारी—

+		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	प	प	–	प	ग	प	ग
ह	म	मों	ऽ	अ	ब	धि	ऽ	ब	ऽ	दी	ऽ
ग	–	प	प	न	प	प	ग	प	–	प	प
अन्	ऽ	त	थि	र	म	र	हे	ऐ	ऽ	सी	न
ग	प	प	–	प	–	ग	ग	प	ग	सं	म
की	ऽ	जै	ऽ	दी	ऽ	न	द	ऽ	या	ऽ	ल

आभोग—

+		०		२		०		३		४	
प	–	प	न	मं	मं	मं	–	–	मं	–	मं
ना	ऽ	ने	मे	ऽ	न	के	ऽ	ऽ	प्र	ऽ	भु
मं	मं	गं	मं	मं	मं	मं	–	मं	न	–	प
तु	म	हो	ऽ	ब	हु	ना	ऽ	य	क	ऽ	ऽ
मं	गं	पं	गं	सं	मं	मं	मं	न	प	न	स
दी	ऽ	ऽ	जै	ऽ	द	र	स	की	ऽ	जै	ऽ
सं	गं	मं	न	–	प						
नि	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ल						

मियां की मल्हार !

होली (धमार)

स्थायी—खेलन आये होरी, बरषा के समै घन गरजत दप दुकार।
अन्तरा—घटा गुलाल दामिनी दमकत रङ्ग की परत फुहार-फुहार ॥

स्थायी—

+					२					३			
					र	–	स	–	स	(स)ध़	ऩ	प़	–
					खे	ऽ	ल	ऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ
ऩ	–	ध़	(स)ऩ	स	म	म	र	–	स	–	म	स	–
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ब	र	षा	ऽ	के	ऽ	स	मै	ऽ
स	न॒	ध	न॒	ध	न	(म)न	(सं)न	सं	–	न॒	प	म	–
घ	न	ऽ	ऽ	ऽ	ग	र	ज	त	ऽ	द	प	दु	ऽ
प	ग॒	म	र	स									
का	ऽ	ऽ	ऽ	र									

अन्तरा—

३				+					२				
प	न॒	ध	न	सं	–	सं	सं	–	सं	–	रं	–	मं
घ	टा	ऽ	गु	ला	ऽ	ल	दा	ऽ	मि	ऽ	नी	ऽ	द
मं	ध	न॒	प	म	प	न॒	ध	रं	मं	ध	न॒	प	म
म	क	ऽ	त	रं	ग	की	ऽ	प	र	त	ऽ	ऽ	फु
प	ग॒	म	प	प	ग॒	म	र	म					
हा	ऽ	र	फु	हा	ऽ	ऽ	ऽ	र					

केदारा.

मिश्र सम्पूर्ण————————सूल ताल मात्रा १०

देखत तन-मन आनन्द भये विलास विरह व्यथा भारी पुन दरशन ॥ १ ॥
आये नन्द घर अधर सुधारे प्रेम बूँद घन लागी बरसन ॥ २ ॥
रोम-रोम सुख उपजे क्रम-क्रम ज्यों-ज्यों लागी पिया के पग परसन ॥ ३ ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक, सब सौतन मिलि लागी तरसन ॥ ४ ॥

+	।	०	।	२	।	३	।	०	।
न	ध	प	ध	प	म	म	म	म	म
दे	ख	त	त	न	ऽ	ऽ	ऽ	म	न
म	म	ध	प	म	मग	र	र	सर	स
आ	ऽ	नं	द	भ	येऽ	वि	ला	ऽऽ	स
स	स	म	ग	प	मं	ध	प	मं	प
वि	र	ह	व्य	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	सं	सं	मम	म	गमं	प	प	प
भा	ऽ	री	ऽ	पुन	द	रऽ	ऽ	श	न

अन्तरा —

+	।	०	।	२	।	३	।	०	।
प	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
आ	ऽ	ये	ऽ	नं	ऽ	द	घ	ऽ	र
सं	सं	सं	संन	ध	नध	सं	सं	सं	सं
अ	ध	र	सुऽ	धा	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ

मंमं	गं	रं	सं	सं	मं	मं	सं	सं	सं
प्रेऽ	ऽ	म	बूँ	ऽ	ऽ	ऽ	द	घ	न
धन	ध	मं	सं	म	म	गर्म	प,	प	प
लाऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	व	रऽ	ऽ	स	न

सञ्चारी —

म	म	म	गर्म	प	प	प	ध	प	ध
रो	ऽ	म	रोऽ	ऽ	म	सु	ख	उ	प
प	प	ध	न	ध	प	म	म	म	म
जे	ऽ	झ	म	क	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	मर्म	ध	प	म	मग	र	र	स	स
ज्यों	ऽऽ	ज्यों	ऽ	ला	ऽऽ	गि	ऽ	पि	या
म	म	म	म	म	म	गर्म	प	प	प
के	ऽ	प	ग	ऽ	प	रऽ	ऽ	स	न

आभोग—

प	प	प	सं	मं	सं	सं	सं	मं	सं
ता	ऽ	न	से	ऽ	न	के	ऽ	प्र	भु
सं	सं	सं	संन	ध	नध	सं	सं	सं	सं
तु	म	ब	हु	ना	ऽऽ	य	ऽ	क	ऽ

मं	मंगं	रं	रं	मं	सं	मं	मं	मं	मत
स	चऽ	सौं	ऽ	ल	न	ऽ	ऽ	मि	लिऽ
धन	ध	स	सं	म	म	गसं	प	प	प
लाऽ	ऽ	गि	ऽ	ऽ	न	रऽ	ऽ	स	न

स्वरलिपियों का चिन्ह परिचय

प — जिन स्वरों के ऊपर नीचे कोई चिन्ह न हो, वे मध्य सप्तक के शुद्ध स्वर हैं।

ध — जिस स्वर के नीचे पड़ी लकीर हो वे कोमल स्वर हैं किन्तु कोमल मध्यम पर कोई चिन्ह नहीं होगा, क्योंकि कोमल म शुद्ध माना गया है।

मं — तीव्र मध्यम इस प्रकार होगा।

नृ — जिसके नीचे बिन्दी हो, वे मन्द्र (पाद) सप्तक के स्वर हैं।

सं — ऊपर बिन्दी वाले स्वर तार सप्तक के हैं।

प – — जिस स्वर के आगे जितनी-लकीर हों उसे उतनी ही मात्रा तक और बजाइये

रा ऽ — जिस अक्षर के आगे ऽ चिन्ह जितने हों उसे उतनी मात्रा तक और गाइये।

धप — इस प्रकार २ या ३ स्वर मिले हुये (सटे हुये) हों वे १ मात्रा में बजेंगे।

+ । ० — + सम, । ताली, ० खाली के चिन्ह हैं।

* — ऐसा फूल जहाँ हो, वहाँ पर १ मात्रा चुप रहना होगा।

⌒ — स्वरों के ऊपर यह चिन्ह मींड़ देने के लिये होता है।

ग/म — इस प्रकार किसी स्वर के ऊपर कोई स्वर हो, तो ऊपर वाले स्वर को ज़रा सा छूते हुये नीचे के स्वर को बजाइये।

(प) — इस प्रकार कोई स्वर ब्रैकिट में बन्द हो तो उसके आगे का स्वर और वह स्वर और पहिले का स्वर फिर वही स्वर लेकर एक मात्रा में ही धपमप इस तरह बजाइये।

〰 — यह चिन्ह स्वरों के ऊपर ज़मज़मा देने के लिये होता है, अर्थात स्वरों को हिलाना चाहिए।

आसावरी.

(धमार, मात्रा १४)

भोरहिं आये मेरे आँगन सगरि रयन तुम कहाँ जागे लालन ?
अधर अँजन, भाले महावर, डगमगात पग धरत धरन ॥
आवन कहि मोमे अन्त सिधारेहु कवन रस वस कर लिये ललन ।
'तानसेन' के प्रभु वहीं सिधारो, जाही के घर रहे बिन कल न ॥

+			०		१		०			१		०	
न	न	ध	प	प	म	प	म	ग	रस	र	म	प	प
भो	ऽ	ऽ	र	हिं	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽये	मे	ऽ	रे	ऽ
प	प	प	प	प	प	प	न	न	न	ध	ध	प	प
आँ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	न	ऽ	स	ग	रि	र	ऽ	य	न
म	प	म	प	न	ध	प	मप	ग	रस	र	म	प	प
तु	ऽ	म	क	हां	ऽ	ऽ	जाऽ	ऽ	गेऽ	ला	ऽ	ल	न
म	प	प	न	ध	सं	सं	सं	सं	सं	सं	रं	संरं	गंरं
अ	ध	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	अँ	ज	न	भा	ऽ	ऽऽ	लेऽ
सं	रं	न	सं	सं	सं	सं	म	प	प	ध	ध	सं	सं
म	हा	ऽ	ऽ	ऽ	व	र	ड	ग	म	गा	ऽ	ऽ	त
न	ध	प	प	प	म	प	म	ग	ग	र	म	प	प
प	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ध	र	त	ऽ	ऽ	ध	र	न	ऽ

ग ग ग	स र	म म	प प पम	प प	प प
आ व न	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ब दि ऽऽ	मो ऽ	से ऽ
न न न	ध ध	ध ध	प प प	प प	प प
अ न् त	ऽ ऽ	ऽ ऽ	सि धा ऽ	रे ऽ	उ ऽ
रं रं मं	न न	ध प	म प गर	सर म	प प
क व न	र म	वं स	क र लिये	लऽ ऽ	ल न
म म प	न ध	सं सं	सं सं मं	मं सं	सं सं
ता ऽ न	से ऽ	ऽ न	के ऽ ऽ	प्र ऽ	भु ऽ
सं रं रं	मंरं गं	रं सं	मं न ध	प प	प प
व हीं ऽ	ऽऽ ऽ	ऽ ऽ	सि धा ऽ	रो ऽ	ऽ ऽ
प रं मं	न न	ध प	मप ग ग्म	र म	प प
जा ही के	घ र	र हे	ऽऽ वि ऽन	क ल	न ऽ

वसन्त

(धीमा तिताला)

चलो सखि कुञ्ज धाम, खेलत वसन्त स्याम ।
सङ्ग लिए राधे नाम रूप गुन आगरी ॥
मुक्ताहार रसाल माल केतका के सुक जल औरन प्रकटबन फूलबन बागरी ।
बोलत कोकिल कीर कपोत गुँजत, भँवर समीर धीर उड़त मनमोहन आगेरी ॥
'तानसेन' के प्रभु प्रियमिलि केलि करत गावत वसन्त राग धन्य दरस भागरी ॥
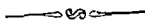
+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
म	ध	न	सं	गं	सं	न	सं	मधन	संरं	नध	गम	मग	र॒	स	स
च	लो	स	खी	कुँ	ज	धा	म	खेऽऽ	ऽऽ	लत	ऽऽ	वसं	त	स्या	म
स	म	म	मग	म	म	ग	ग	मध	नमं	सं	सं	नध	न	म	ग
सँ	ग	लि	येऽ	रा	धे	ना	म	रूऽ	प ऽ	गु	न	जाऽ	ऽ	ग	री
मध	न	सं	सं	संरं	सं	न	सं	नध	न	म	ग	म	ग	र॒	स
मुऽ	क्ता	हा	र	रसा	ल	मा	ल	केऽ	त	का	के	सु	क	ज	ल
सस	म	म	ग	म	म	म	ग	गं	रं॒	सं	सं	नध	न	म	ग
औऽ	र	न	प्र	क	ट	ब	न	फू	ल	ब	न	घाऽ	ऽ	ग	री
म	म	म	ग	म	म	म	म	ग	ग	गम	ग	मध	नसं	संसं	सं
घो	ऽ	ल	त	को	ऽ	कि	ल	कि	र	कपो	त	गुँऽ	जत	भँव	र
सं	रं	सं	सं	नध	नध	म	गम	स	स	मम	म	नध	मग	र॒	स
स	मी	ऽ	र	धीऽ	ऽर	उ	ड़त	म	न	मोह	न	आऽ	ऽऽ	गे	री

म ध	न सं	सं सं	मं मं	गं रं	सं सं	न ध	मग म
ता न	मे न	के ऽ	प्र मू	श्री व	मि लि	के ल	कर त

म म	म ग	मध ध	न सं	गं रं	मंमं मं	नध न	म ग
गा ऽ	व त	वसं त	रा ग	ध न्य	दर म	भाऽ ऽ	ग री

चौताल (विलम्बित)

स्थायी:—अंग अंग रंग रानि।
अति ही सयानी पिया जिया मन मानि एरि॥
अन्तरा:—सोहै हूं कला सुहानि, बोलन अमृत बानि।
तेरो मुख देखे चन्द्र ज्योति हू लजानि एरि॥
संचारी:—कटि केहरि कदलि खम्भ, कीर की मी नासिका।
शिरीफल उरज जाके, शोभा हु आनि॥
आभोग:—कहे मियाँ तानसेन, सुनो हो सुघर नारि।
तेरो राज रहे जौ लौं, गंगा जमुना पानि एरि॥

स्थायी—

×		०		२		०		३		४	
मं	–	न	ध	प	धप	प ग	म	ग	र	–	स
अं	ऽ	ग	अं	ऽ	गऽ	रं	ऽ	ग	रा	ऽ	नि
स	न	र	ग	–	ध	म	–	ध	न	सं	–
अ	ति	ऽ	ही	ऽ	स	या	ऽ	नि	पि	या	–
रं	सं	रं	न	सं	न	ध	मं	न	ध	म	ध
जि	या	ऽ	म	ऽ	न	मा	ऽ	नि	ए	ऽ	री

अन्तरा—

ध	म	ध	न	–	न.	सं	–	न	सं	–	मं
सो	ल्है	ऽ	हूँ	ऽ	क	ला	ऽ	सु	हा	ऽ	नि
न	–	सं	रं	न	मं	न	न	ध	न	–	न
धो	ऽ	ल	त	अ	ऽ	मृ	त	ऽ	या	ऽ	नि
न	–	रें	गं	–	गं	म	–	गं	रं	–	सं
ते	ऽ	रो	मु	ऽ	ख	दे	ऽ	खे	चं	ऽ	द्र
न	सं	रं	न	सं	ध	सं	–	न	ध	म	ध
ज्यो	ऽ	नि	हृ	ऽ	ल	जा	ऽ	नि	ए	ऽ	गि

संचारी—

न	र	ग	–	म	म	ग	ग	म	ग	–	ग
क	टि	के	ऽ	ह	रि	क	द	लि	ख	ऽ	म्ब
ग	–	र	ग	–	म	ग	–	र	स	–	–
की	ऽ	र	की	ऽ	सि	ना	ऽ	लि	का	ऽ	ऽ
म	न	र	ग	म	म	ग	ग	ध	म	–	ग
शि	री	ऽ	फ	ऽ	ल	उ	र	ज	जा	ऽ	के
ग	–	र	ग	–	म	ग	–	र	ग	र	स
सो	ऽ	ऽ	भा	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि

आभोग—

ध	म	ध	न (म)	—	न	सं	—	न	सं	—	मं
क	हे	ऽ	मी	ऽ	थां	ता	ऽ	न	से	ऽ	न
सं	सं	रं	न	सं	सं	न	—	ध	न	—	न
सु	नो	ऽ	हो	ऽ	सु	घ	ऽ	र	ना	ऽ	रि
न	—	रं	गं	—	गं	मं	गं	—	रं	—	सं
ते	ऽ	रो	रा	ऽ	ज	र	हे	ऽ	जौ	ऽ	लों
न	—	सं	रं	सं (नि)	न	ध	मं	न	ध	म	ध
गं	ऽ	गा	ज	मु	ना	पा	ऽ	नि	ए	ऽ	री

—*—

जयजयवन्ती

चौताल (विलंबित)

स्थायी—जयमाल रानी, तू मान मानी ।
विद्या सरस्वती, वैकुण्ठ की निशानी ॥
अन्तरा—तू ही गुप्त तू ही प्रगट, तू ही जल-थल में ।
सकल श्रेष्ट मानि तू, आदि भवानी ॥
सञ्चारी—तू ही शूर परम शूर, तू हि देव आदि देव ।
तू हि नाम रूप सकल, गुनन की खानि ॥
आभोग—तानसेन की माई, कहा कहूँ प्रभुताई ।
जगत विदित कर दीनी, नैनें मेरी वानी ॥

x		०		२		०		३		४	
र	र	—	र	ग	गप	म	—	ग	मर	ग	स
ज	य	ऽ	मा	ऽ	लऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	नी

ऩ	–	स	र	रग॒	रस	स	–	र	न॒	ध़	प़
तू	ऽ	ऽ	मा	ऽऽ	नऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी
–	स	–	र	म	प	(प)न॒	(न)म	प	न	सं	मं
ऽ	वि	ऽ	द्या	ऽ	म	र	ऽ	ऽ	स्व	ऽ	ती
–	सं	न॒	धप	ध	म	प	ध	म	गर	ग	म
ऽ	वै	ऽ	कुंऽ	ऽ	ठ	की	ऽ	नि	शाऽ	ऽ	नी

अन्तरा—

म	–	प	(सं)न	(स)न	(मं)न	सं	–	न	मं	सं	मं
तू	ऽ	हि	गु	प	त	तू	ऽ	हि	प्र	ग	ट
म	–	सं	रं	रंगं॒	रंमं	रं	सं	रंन॒	ध	प	–
तू	ऽ	हि	ज	ऽऽ	लऽ	थ	ल	ऽऽ	में	ऽ	ऽ
म	म	र	म	प	प	सं	–	रं	न॒	ध	प
स	क	ल	श्रे	ऽ	ष्ट	मा	ऽ	ऽ	नि	तू	ऽ
(प)मं	–	न॒	धप	ध	म	प	ध	म	गर	ग	म
आ	ऽ	ऽ	दिऽ	ऽ	भ	वा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	नी

सञ्चारी —

×		०		२		०		३		४	
स	–	(ग)र	(ग)र	–	र	र	र	ग॒	र	–	र
तू	ऽ	ही	सू	ऽ	र	प	र	म	सृ	ऽ	र

ऩ	–	स	र	रग़	रस	स	–	स	ऩ	ध़	प़
तू	ऽ	हि	दे	ऽऽ	वऽ	आ	ऽ	दि	दे	ऽ	व

स	–	स	र	म	म	प	–	ध	म	म	प
तू	ऽ	हि	ना	ऽ	म	रू	ऽ	प	स	क	ल

न	न	धप	ध	म	प	प	ध	म	गर	ग	स
गु	न	नऽ	की	ऽ	ऽ	खा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	नि

अभोग—

म	–	प	न	–	न	सं	–	–	सं	–	सं
ता	ऽ	न	से	ऽ	न	की	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ई

न	न	सं	रं	रंगं	रंसं	रं	सं	रंन	ध	–	प
क	हां	ऽ	क	हूंऽ	ऽऽ	प्र	भु	ऽऽ	ता	ऽ	ई

म	म	म र	म	प	प	सं न	स न	सं	सं	–	सं
ज	ग	त	वि	दि	त	क	र	ऽ	दी	ऽ	नि

सं	–	न	धप	ध	म	न	धप	ध	म	गर	गस
तै	ऽ	नैं	मेऽ	ऽ	री	ऽ	बाऽ	ऽ	नी	ऽऽ	ऽऽ

भैरव (चौताला)

महावाक वादिनी सन्मुख होइये आप हो !
जाही ते त्रिभुवन मानि, जाही ते भवानी जो, जाके मन की इच्छा सोई सोइ पूजे ॥
हद सिद्ध तव ही पाइये माता जव तुम चरण सूझे !
"तानसेन" यही प्रसाद माँगत है, जहां-जहां लुरट-पुरत तहां-तहां कीजिये ॥

स्थायी—

+		०		१		०		२		३	
गम	गप	म	म	ग	रस	स	स	स	स	र	स
वाऽ	ऽऽ	दि	नी	ऽ	ऽऽ	स	न	मु	ख	हो	इ
ऩ	ध़	ध़	ऩस	र	स	म	र	स	स	स	स
ये	ऽ	आ	पऽ	हो	ऽ	म	हा	ऽ	वा	ऽ	क

अन्तरा (१)

+		०		१		०		२		३	
प	ध	न	सं	सं	सं	सं	सं	रं	रं	सं	सं
जा	ही	ते	ऽ	त्रि	भु	व	न	मा	ऽ	नि	ऽ
ध	नसं	सं	सं	रं	सं	नध	प	ध	ध	प	म
जा	हीऽ	ऽ	ते	भ	वा	ऽऽ	नी	जो	ऽ	जा	के
प	मग	रम	गप	म	गर	स	स	स	रगम	गम	नधग
म	नऽ	कीऽ	ऽऽ	इ	ऽऽ	च्छा	ऽ	सो	ईऽऽ	सोइ	ऽऽऽ
मग	प	म	ग	र	स	स	र	स	स	स	स
पूऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जे	म	हा	ऽ	वा	ऽ	क

(२)

धध	धप	धप	धध	पप	पम	पप	धध	संसं	संसं	नध	पम
हृद	मि	ऽद्ध	तव	हीपा	इये	माऽ	ताऽ	ऽऽ	ऽऽ	जय	तुम
पम	रम	गप	मग	रर	मम	धध	नसं	संसं	संसंसं	रंरं	संसं
चर	णऽ	ऽऽ	ऽऽ	मूऽ	भेऽ	तान	सेन	यही	प्रमाद	मोऽ	गत
नध	प	धध	धसं	संनध	नधप	मग	मनध	पमप	मगर	सर	सम
हैऽ	ऽ	जहां	जहां	तुरट	पुरत	नहां	नहांऽ	कीऽऽ	जियेऽ	महा	वाक

अन्तिम बोल "महावाक" कह कर फ़ौरन ही सम दिखा दीजिये !

तानसेन कृत ❋ **मेघ-राग** ❋ झपताल, मात्रा १०

प्रबल दल साजे झुक भूम या भूम पर उमड़ घनघोर भर इन्द्र ले आयोरे।
बरसत मुसलधार होत पहर चार कृष्ण गिरधर गोकुल बचायो रे ॥
बूंदन ते धरणीधर सबन की रक्षा कर, पशुपंछी जीवजन्तु अति सुख पायोरे।
कहत मियां 'तानसेन' तेरी गति अव्यक्त सुरपति अधीन होय सीस नवायोरे॥

—स्थाई—

+		।			०		।		
सं	न	सं	ध	प	न	म	प	म	र
प्र	ब	ल	द	ल	सा	ऽ	जे	झु	क
म	म	र	प	प	म	म	र	स	स
भू	ऽ	म	या	ऽ	भू	ऽ	म	प	र

न	स	र	म	प	ध	ध	प	म	प
उ	म	ड़	घ	न	घो	ऽ	र	झ	र
ध	मं	ध	प	म	रम	प	न	न	प
इं	ऽ	द्र	ले	आ	योऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ

अन्तरा (१)

म	प	न	न	न	सं	सं	न	सं	सं
ध	र	स	त	मु	स	ल	धा	ऽ	र
न	सं	रं	मं	रं	सं	सं	न	न	प
हो	ऽ	त	ऽ	प	ह	र	चा	ऽ	र
रं	रं	रं	सं	सं	मं	मं	म	प	प
कृ	ऽ	ष्ण	गि	रि	ध	र	गो	ऽ	ऽ
ध	सं	ध	प	म	रम	प	न	न	प
कु	ल	व	चा	ऽ	योऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ

(२)

म	र	म	म	म	प	म	प	प	प
वृं	ऽ	द	न	ते	ध	र	णी	ध	-र
म	प	ध	मं	सं	ध	प	प	र	र
स	ब	न	फी	ऽ	र	ता	क	र	ऽ

म	म	र	र	र	स	स	म	स	म
प	शु	पं	छी	ऽ	जी	व	जं	ऽ	तु
ऩ	म	र	म	प	न	न	न	न	प
अ	ति	सु	ग	गा	यो	ऽ	रे	ऽ	ऽ

(३)

म	प	न	न	न	मं	सं	न	सं	सं
क	हैं	मि	ऽ	यां	ता	न	से	ऽ	न
न	सं	रंमं	रं	सं	न	सं	न	न	प
ने	ऽ	रीऽ	ग	ति	अ	वि	य	क्त	ऽ
रं	रं	रं	मं	रं	मंसं	मं	न	मं	सं
सु	र	प	ति	ऽ	अधी	न	हो	ऽ	य
म	पसं	न	प	म	रम	प	न	न	प
सी	ऽस	न	चा	ऽ	योऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ

गौड़ मल्हार

(तीनताल)

आज उन बिन जिया मोरा तरसे, आवो पियरवा मेहरा बरसे।
आज उन बिन जिया मोरा तरसे..............॥
कारी पीरी घटा घुमड़ कर आई, तानसेन पिया रँग भरलाई।
ऐसी बिजुरी चमके सैंयां डारो बैंयां करसे॥ आज०.............॥

							स्थाई☞	※	ग	–	प	र	र	स	न̣
								※	आ	ऽ	ज	उ	न	बि	न
म	ग	र	ग	म	प	म	ग	–	ग	ग	म	प	न	सं	–
जि	या	मो	ग	न	र	से	ऽ	ऽ	आ	वो	पि	य	र	वा	ऽ
न̱	प	ग	म	प	प	म	ग								
मे	ह	रा	ऽ	ब	र	से	ऽ								

अन्तरा

								–	गग	ग	म	प	न	–	न
								ऽ	कारी	पी	री	घ	टा	ऽ	घु
मं	मं	सं	रं	न	–	सं	–	–	न	न	न	–	न	ध	न
म	ड़	क	र	आ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ता	न	से	ऽ	न	पि	या
सं	रं	न	सं	ध	प	ग	म	प	न	सं	रं	न	मं	न̱	प
रं	ग	भ	र	ला	ई	ऐ	सी	बि	जु	री	च	म	के	सैं	यां
म	ग	र	ग	म	प	म	ग								
डा	रो	बैं	यां	क	र	से	ऽ								

इस स्वरलिपि के प्रेषक—श्री० मदनलाल वायोलिन मास्टर।

(तीन ताल)

डमरू डम-डम बाजे-बाजे।
अर्धङ्गी संगी ताल परन गत लेत नाचत हैं शिव शङ्कर।
नरहर कर बाजे—
चन्द्र भाल सीस गंग अर्धाङ्गी पार्वती तानसेन को बेड़ा पार कीजे॥

०				३				+				२			
प	सं	प	म	म	ग	–	म	ग	–	ग	–	सर	सम	नृ	–
ड	म	रू	ड	म	ड	ऽ	म	बा	ऽ	जै	ऽ	बाऽ	ऽऽ	जै	ऽ
प़	–	नृ	–	स	–	स	–	म	–	र	–	र	र	ग	र
अ	ऽ	र्ध	ऽ	ङ्गी	ऽ	सं	ऽ	गी	ऽ	ता	ऽ	ल	प	र	न
ग	र	ग	–	म	धप	म	ग	–	र	म	स	सं	–	सं	सं
ग	त	ले	ऽ	त	ना	च	त	ऽ	हैं	शि	व	शं	ऽ	क	र
सं	प	–	ध	म	प	ग	–	–	ग	–	र	ग	म	पम	ग
न	र	ऽ	ह	र	क	र	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	जै

अन्तरा—

सं	–	सं	सं	–	सं	–	न	सं	सं	प	प	धप	प	–	म
चं	ऽ	द्र	भा	ऽ	ल	ऽ	सी	स	गं	ऽ	ग	अ	ऽ	र	धां
–	ग	मप	प	–	ग	–	ग	स	–	स	र	–	र	ग	–
ऽ	गी	पा	र	ऽ	व	ऽ	ती	ता	ऽ	न	सै	ऽ	न	को	ऽ
म	–	प	–	–	प	–	प	सं	–	प	ध	प	–	म	–
बे	ऽ	ड़ा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	र	की	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

श्री राग (धीमा तिताला)

१—वंशीधर पिनाकधर गिरिधर गङ्गाधर त्रिशूल धर चक्रधर विराजित हरिहर।
२—सुधाधर विषधर जटाधर मुकुटधर पीताम्बर धर मृगचर्मधर मुरहर शिवशङ्कर॥
३—चन्दनधर भस्मधर मालाधर शेषधर गोपीधर परमेश्वर गोपीश्वर ईश्वर।
४—कहे मियां तानसेन दोउ स्वरूप एकतुम गरुड़ासन वृषभवाहन तीन लोक कर उद्धार॥

+				२				०				३			
ध	प	म	गर	गग	र	स	स	र	र	स	स	ध	धर	स	स
वं	शी	ध	रऽ	पिना	क	ध	र	गि	रि	ध	र	गं	गाऽ	ध	र
नम	रग	ग	ग	स	ध	प	प	मप	ध	न	सं	पमप	मध	पमग	रस
त्रिशू	ऽल	ध	र	च	क्र	ध	र	विऽ	रा	जि	त	हऽरि	ऽऽ	ऽऽऽ	हर
पम	पध	न	सं	गं	मं	सं	सं	मं	गं	रं	रं	गंगं	रं	संनध	प
सुऽ	धाऽ	ध	र	वि	प	ध	र	ज	टा	ध	र	मुकु	ट	धऽऽ	र
धध	संसं	संसं	संसं	नन	धध	प	प	मप	ध	प	मग	मम	ह	र	स
पीत	अम्	बर	धर	मृग	चर्म	ध	र	मुर	ह	र	ऽऽ	शिव	शं	क	र
सर	गम	पध	धध	प	प	प	प	मप	ध	न	सं	न	ध	प	प
चंऽ	ऽऽ	दन	धर	भ	स्म	ध	र	माऽ	ला	ध	र	शे	ष	ध	र
मप	धप	म	ग	मम	ग	र	स	स	ध	प	प	पमगर	स	स	स
गोऽ	पीऽ	ध	र	पर	मे	श्व	र	गो	पी	श्व	र	ईऽऽऽ	ऽ	श्व	र
ध	ध	न	सं	गं	रं	सं	सं	रंरं	रंसं	रं	रं	गरं	सं	सं	नधप
क	हे	मि	यां	ता	न	से	न	दोउ	स्वऽ	रू	प	एऽ	क	तु	मऽऽ
धध	नसं	सं	सं	न	नन	ध	पप	म	प	ध	पमग	मग	र	स	स
गरु	ड़ाऽ	स	न	वृ	षभ	वा	हन	ति	न	लो	ऽऽक	कर	उ	द्धा	र

नोट—इस तानसेनी श्रीराग में और प्रचलित श्रीराग में कुछ भिन्नता है। (सम्पादक)